ॐ

ॐ श्री गुरुपरमात्मने नमः

शिवोऽःहम्

श्री गुरु बचनामृत प्रकाश

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य योगिराज ब्रह्मलीन
श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री श्री १००८ श्री श्री
महात्मा बचनरामजी महाराज
मींढा जिला नागौर (राजस्थान)
तच्छिष्य

श्री १०८ श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज
द्वारा विरचित

श्रीमान सेठ दामोदरजी अग्रवाल पापड़वाले
अकोला पापड़ उद्योग, काला चबुतरा
पुरानी सब्जी मंडी अकोला (महाराष्ट्र) ४४४००१

तृतीयावृत्ती
१००१
वि.सं. २०५६
शिवरात्री

ई.सं. २००० मार्च ४

मूल्य
धर्मप्रेम

समर्पण

श्रीमत परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ महात्मा
श्री श्री १००८ श्री श्री बचनरामजी महाराज के पवित्र
कोमल युगल चरण कमलों में
सादर समर्पण

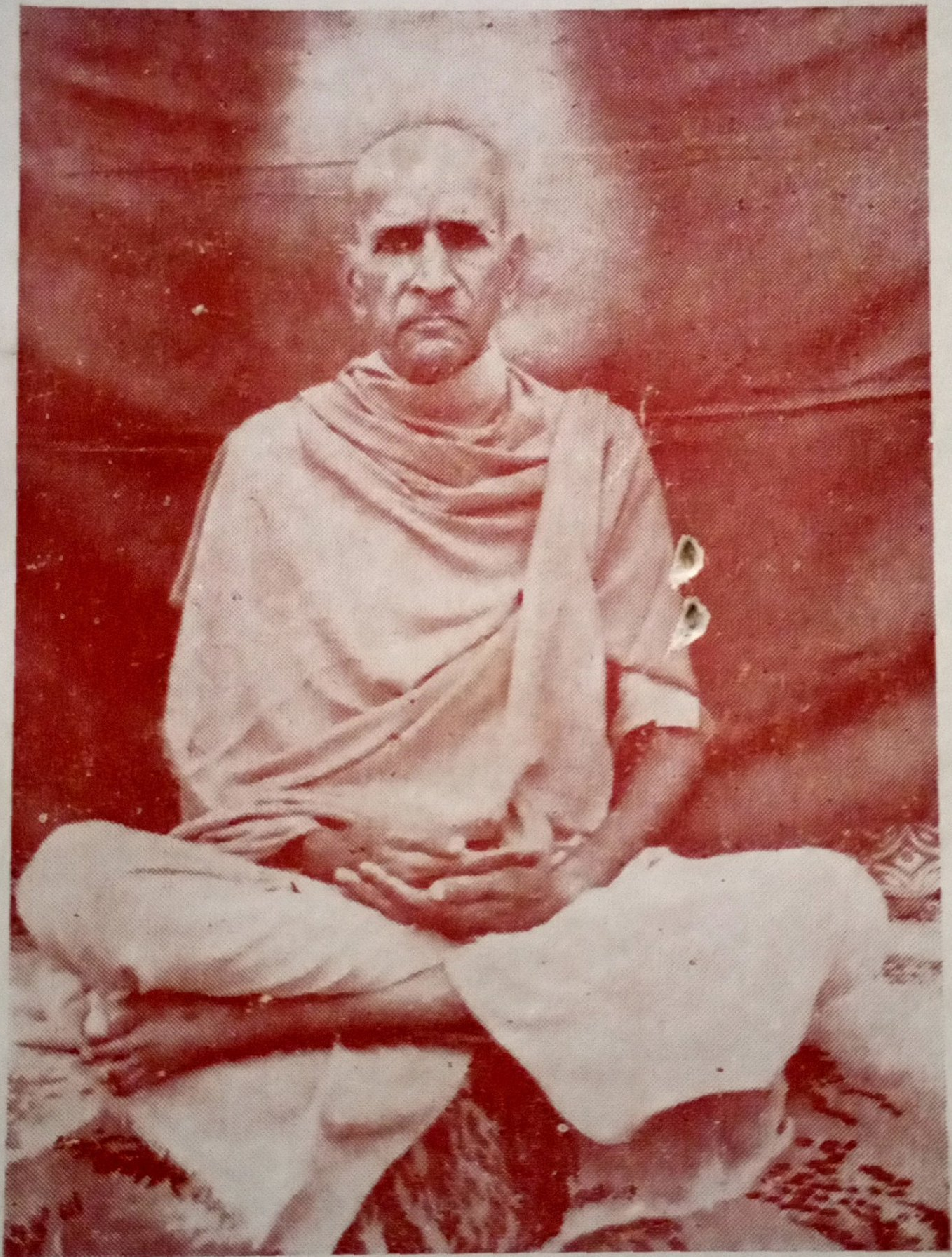
चौपाई

हे गुरुदेव आपने सुन्दर । बाग लगाया मम उर अन्दर ॥
नीति धर्म मर्यादा ध्याना । ज्ञान विराग पुष्प खिलवाना ॥
सब हि कुसुम एकत्र कर लाया । कर कवित पुस्तक में गाया ॥
करु समर्पण चरणों माई । तुच्छ भेट स्वीकार कराई ॥

आपका चरण सेवक

नित्यानन्द

श्री सद्गुरु



ब्रह्मलीन श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ महात्मा श्री श्री १००८
श्री बचनरामजी महाराज
आश्रम मु. पो. मींढा, जिला–नागौर (राजस्थान)

प्राक्कथन

श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज की प्रस्तुत पुस्तक "गुरु बचनामृत प्रकाश'' का प्राक्कथन लिखते हुये मुझको हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। भारतीय संस्कृति की सामान्य प्राथमिक बातों से प्रारम्भ कर वेदान्त सागर के विराट् को गागर में समाहित करने का यह सुन्दर एवं स्तुत्य प्रयास है।

स्वामीजी ने जितना कठोर तप सत्संग स्वाध्याय कर स्वयं को जिस उन्नत शिखर पर पहुँचाया है, उतनी ही उत्कट इच्छा जिज्ञासु भक्तों को सुगम और पक्षपातरहित ज्ञानोपलब्धी कराने की स्वामीजी की हर वक्त इच्छा रहती है और इसी हेतु "गुरु पूर्णिमा गीता'' गुरुवर श्री बचनरामजी महाराज की जीवनी आदि पुस्तकों की रचना की गई है।

प्रस्तुत पुस्तक में शुद्ध दिनचर्या से लेकर नीति, धर्म, भक्ति, दान, ज्ञान, वैराग विषयों को दोहा चौपाई जैसे लोकप्रिय छन्दों में रचा गया है। जिज्ञासु के लिये अष्ट साधन, योगांग और वेदान्त की प्रक्रिया सिद्धान्त जैसे गम्भीर विषयों को इस सरलता से समझाना स्वामीजी का इन विषयों के गम्भीर बोध का प्रमाण है। वेदान्त शास्त्र के लगभग सभी पद पदार्थों का विवेचन एक सा सरलता के साथ खूब हुआ है। जिज्ञासुओं के स्तर और वातावरण के अनुसार धर्मग्रन्थों की प्रचलित भाषा और शैली

का प्रयोग किया गया है, जो पुस्तक को सार्थक बनाता है।

आशा है इस पुस्तक के नियमित पठन–पाठन से जिज्ञासू भक्तों के घर मर्यादित आचरण से ऋषियों के आश्रमों के समान सुख शान्तिपूर्ण बनेंगे और समस्त पाठकों का लोक व्यवहार और पारमार्थिक जीवन कुशल से कुशलतर होता जायेगा।

मूलचन्द बर्वा
एम.ए.बी.काम.बी.एड़.
प्रधानाध्यापक
राजकीय मारवाड़ रिलीफ सोसायटी
उच्च माध्यमिक विद्यालय
किशनगढ़–रेनवाल, जिला जयपुर (राजस्थान)

तृतीयवृत्ति की प्रस्तावना

परम श्रद्धेय आदरणीय गुरुदेव श्री १०८ श्री स्वामी नित्यानंद जी महाराज द्वारा अपनी ब्रह्मनिष्ठ साधना के विभिन्न भक्तिभाव से हम जिज्ञासुओं के लिये प्रथम चुस्त श्री १००८ श्री सदगुरुदेव बचनराम महाराज का जीवन चरित्र तथा गुरु पूर्णिमा गीता, गुरु बचनामृत प्रकाश, गुरुबचन ज्ञान कुंजी, गुरु बचनोपदेश, सदगुरु बचन ब्रह्माभ्यास आदि ग्रन्थों की रचनाकर हम सभी जिज्ञासुओं के ऊपर बड़ी असीम कृपा की है।

हम सभी जिज्ञासुओं ने उपरोक्त ग्रन्थ का अध्ययन कर अपने जीवन में उतारकर आध्यात्मिक उन्नति की है। कीर्तन भक्ति भी ईश्वर एवं महापुरुषों की कृपा से ही प्राप्त होती है क्योंकि महापुरुषों के प्रेम, प्रभाव तत्व कीर्तन तथा ज्ञानरूपी रहस्यों की बातों को सुनने से एवम् शास्त्रों को नित्य निरन्तर पढ़ने से अंतःकरण के मूल विक्षेपादी की निवृत्ति होती है। सद्‌गुरु ज्ञान से आवरण दूर होकर स्वयं प्रकाश आत्मा स्वयं ही अन्दर प्रकाशित होकर आंवले के हस्त कमलवत अंतःकरण में दर्शन होते हैं।

श्री स्वामीजी द्वारा रचित "श्री गुरुबचनामृत प्रकाश" की प्रथम आवृती आकोला के सभी भक्तजनों की तरफ से प्रकाशित की गयी थी। द्वितीयावृत्ति अकोला निवासी स्वर्गवासी श्री मदनलालजी बागडोदिया की धर्मपत्नी श्रीमती गिन्नीबाई बागडोदिया रजपूतपूरा अकोला की तरफ से प्रकाशित की

गयी थी।

तृतीयावृत्ति को प्रकाशित करने का भार भी सद्‌गुरुदेव के परमभक्त श्रीमान सेठ दामोदरजी अग्रवाल पापड़वाले अकोला पापड़ भंडार, काला चबुतरा, अकोला इन्होंने स्वयं सहर्ष स्वीकार किया है।

श्री स्वामी जी द्वारा विरचित श्री गुरु वचनामृत प्रकाश में स्वामीजी ने उपनिषद, वेदान्त, गीता आदि की गुढ़ भाषा को जनसाधारण के लिये सरल भाषा में भक्तगणों को समझाने हेतु दोहा, चौपाई में पद्यों द्वारा भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, प्रक्रिया सिद्धान्त एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त सहज रीति से प्राप्त कराने का प्रयास किया है। मुझे विश्वास है कि सभी जिज्ञासू भक्तजन इस पुस्तक का नियमित अध्ययन कर अपने अंतःकरण के मल विक्षेप इत्यादि दोषों को दूर कर सहज ही आत्मज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन को आनंदमय बनायेंगे। श्री स्वामीजी महाराजजी ने इसे निष्काम भाव से प्रेमपूर्वक जिज्ञासुजनों के कल्याण के लिये अमृतमय उपदेश देकर सभी भक्तजनों पर ज्ञानामृत की वर्षा की है। ऐसे परम उपकारी श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सदगुरु महाराजजी को हमारा हृदयपूर्वक शत शत नमन।

रजिस्ट्रार
मीनाबाई कला व विधि महाविद्यालय
अकोला (महाराष्ट्र) ४४४००१

भवदीय
जयकुमार श्री रामजी अग्रवाल
जूना शहर, अकोला।

श्री महात्मा बचनरामजी महाराज के उत्तराधिकारी



पीठाधीश श्री १०८ श्री स्वामी भूमानन्दजी महाराज
श्री बचनाश्रम मींढा, जिला–नागौर (राज.)

॥ द्रव्यदान ॥

ा ब्राह्मण हितेषी हरिगुरू संतसेवी धर्मनिष्ठ श्रीमान सेठजी मोदर जी अग्रवाल पापड़ वाले अकोला पापड़ भण्डार आप ड़े श्रद्धालु भक्त हैं। आपकी धर्म पत्नि सौ. बाई विमला देवि था आपकी माताजी भागीरथी बाई भी बड़ी श्रद्धालु सद्भक्तया । श्री दामोदर की सद्प्रेरणा वो द्रव्य के द्वारा यह पुस्तक तियावृत्ति छपकर तैयार हुई है। श्री सद्गुरूदेव भगवान से प्रार्थना कि इन्हें आरोग्यता प्रदान करावे और सदा परमार्थ एवं ध्यात्मिक उन्नति सुख प्रदान करावें।

॥ श्रमदान ॥

(१)

ारे प्रियभक्त लक्ष्मीनारायण जी बघेरे आकोटफाईल अकबर ाट अकोला (महाराष्ट्र) निवासी इन्होंने "श्री गुरू बचनामृत काश" पुस्तक जो कि द्वितीयवृति बम्बई कल्याण में छपी थी। ् १९९४ मार्च में उसमें बहुत अशुद्धियाँ रह गई थी। इसलिये त्र तृतियावृति छपाई कराने हेतु इन्होंने सम्पूर्ण पुस्तक को ने हाथ से सुन्दर अक्षरों में लिखकर बड़े परिश्रम के साथ ार की, वही छपकर सभी भक्तजनों के हाथों में है। श्री रूदेव भगवान से सदैव प्रार्थना है कि इन्हें शारीरिक, आर्थिक, ासिक, आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करावे ताकि सदा शुभ कार्यों भागे बढ़ते रहें।

गौ ब्राह्मण हितेषी हरिगुरू संतसेवी परम भक्त कुँ. श्री प्रहलाद सिंह जी पुत्र श्री ठा. उम्मेद सिंह जी राठौड़ गाँव ठिकरिया जि. नागौर (राज.) हाल मुकाम प्लाट नं. ३५, के ५ सी कॉलोनी, चाँदबिहारी नगर के पास खातीपुरा, जयपुर -३०२०१२ निवासी।

आपने अपना अमूल्य समय व्यय किया। अन्य प्रेस में घूमना तथा पुस्तक छपाई में प्रूफ निरीक्षण में काफी परिश्रम किया। आपके माता-पिता भी हमारे बड़े श्रद्धालु भक्त हैं। श्री सद्गुरूदेव भगवान से सदा यही प्रार्थना है कि इन्हें शरीर आरोग्य एवं आर्थिक, मानसिक, आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करावे, ताकि सदा परमार्थिक कार्य में लगे रहें।

पुस्तक छपाई

परमभक्त श्रीमान शिवराज चौधरी (ग्राम पटवारी का वास श्रीमाधोपुर वाले) प्रो. चौधरी बाइंडर्स एण्ड प्रिन्टर्स १३३ रास्ता टिक्कड़मल, किशनपोल बाजार, जयपुर ने अन्य प्रेसों की अपेक्षा कम राशि लेकर पुस्तक की छपाई अच्छे कागज व अक्षरों में पूरा ध्यान देकर कुशल कार्यकर्त्ताओं द्वारा करवाई है। श्री सद्गुरूदेव भगवान से प्रार्थना है कि इन्हें सुख शान्ति प्रदान करावें।

स्वामी नित्यानन्द

हम सभी जिज्ञासुओं ने उपरोक्त ग्रन्थ
का अध्ययन कर अपने जीवन
में उतारकर आध्यात्मिक
उन्नति की है।

आत्म निवेदन

॥ ॐ श्री सद्गुरु परमात्मने नमः ॥

॥ शिवोऽहम् ॥

प्रातः स्मर्णीय परम श्रद्धेय, परम प्रकाश, परमात्मस्वरूप श्री सद्गुरुदेव श्री १०८ श्री स्वामी नित्यानन्दजी महाराज की अतिशय करुणामयी अनुकम्पा से आत्मा व अनात्मा विषय का सार तत्व "स्वस्वरूप" का अनुभव ज्ञान हुआ यह शरीर आपका अत्यन्त ऋणी है।

इस ग्रन्थ में स्वामीजी ने कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञान योग का प्रतिपादन कराने हेतु अथक प्रयास से वेदश्रुति, स्मृति, पुराण, उपनिषद, गीता भागवत और रामायण आदि विभिन्न ग्रन्थों से युक्तियों द्वारा अति सरल भाषा में वर्णन किया है। इस ग्रन्थ को पढ़कर मैं इसी जन्म में कृत्य कृत्य हुआ हूँ।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण दृढ़ विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रतिदिन अभ्यास करने से मुमुक्ष, जिज्ञासु एवं भक्तजनों को मैं शरीर नहीं, शरीर मेरा नहीं शरीर पंच भूतों का, मैं शुद्ध निराकार निर्गुण चेतन ब्रह्म ही हूँ इसकी अनुभूति अवश्य होगी। अहं ब्रह्म परमधामं ब्रह्माहम् परम पदम्

चरण रज सेवक
दामोदर अग्रवाल
शिवोऽहम्
राधाकृष्ण कॉम्पलेक्स, अकोला पापड़ भंडार, काला चबुतरा
जुना भाजी बाजार, अकोला (महाराष्ट्र)

दो शब्द

श्री स्वामी नित्यानन्दजी महाराज द्वारा रचित "श्री गुरु बचनामृत प्रकाश" नामक पुस्तक को मैंने आद्योपान्त पढा।

श्री स्वामीजी ने पुस्तक में वेदान्त जैसे कठिन विषय पर स्वनिर्मित पद्यों द्वारा जिज्ञासु भक्तजनों के उपकारार्थ अति सरल भाषा में प्रस्तुत किया है।

पुस्तक भारतीय संस्कृति पर प्रकाश डालने वाली अनुपम रचना है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक जिज्ञासु भक्तजन के लिये प्रकाशपुंज के समान साबित होगी।

प्रधानाध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. कुली
(सीकर)

कुशलसिंह नाथावत
रेनवाल

विषय-सूची

शुद्धिकरण

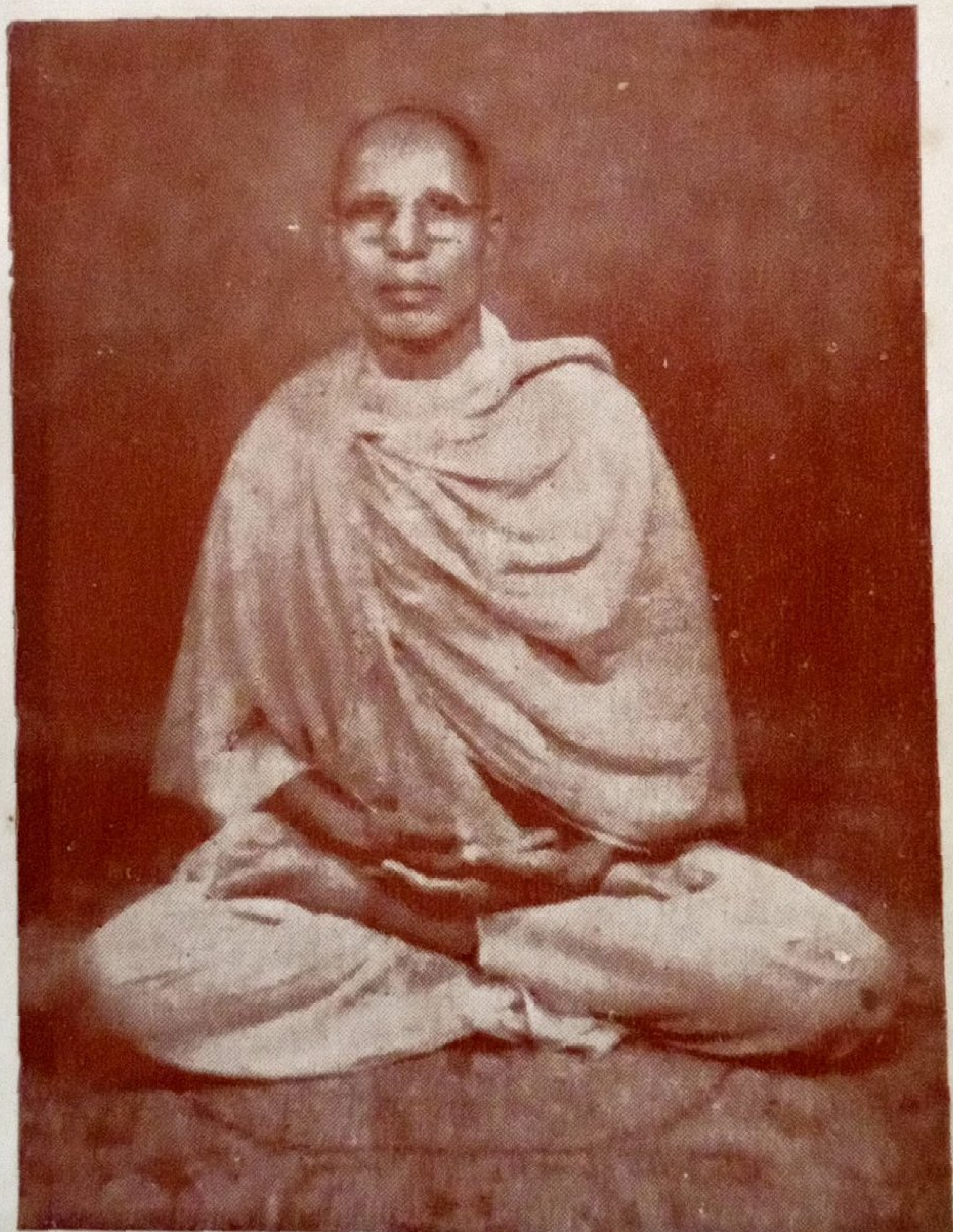
	लाइन नं.	अशुद्ध	शुद्ध
तृतीयावृत्ति में	१४	मूल	मल
पूर्वार्द्ध – विषय सूची में क्रम सं.	१६	त्रिपुरी	त्रिपुटी

भजन शुद्धिकरण

पेज नं.	लाइन नं.	अशुद्ध	शुद्ध
५४	१८	तुम	तव
५७	२१	आरू	अरू
५८	७	तब	तव
५९	३	बधारो	बधावो
५९	९	विहासा	बिठासा
६१	१४	मोह नींद सोवता	सूतों मोह नींद में
६१	१८	भगतो	भागतो
६२	२	भरभरा	भरमरा
६६	६	गया	भया
६७	१	निमि	जिम
६७	९	पाट	पट
७१	१५	जरहि	जर्राह
७५	५	मस्ती	भस्ती
७८	७	दोष	दोय
७८	२२	अक्त	भक्त
७९	५	शिन	सिर
७९	८	करे	कर
७९	१७	जिसमें नहीं	जिसमें नहीं भेद

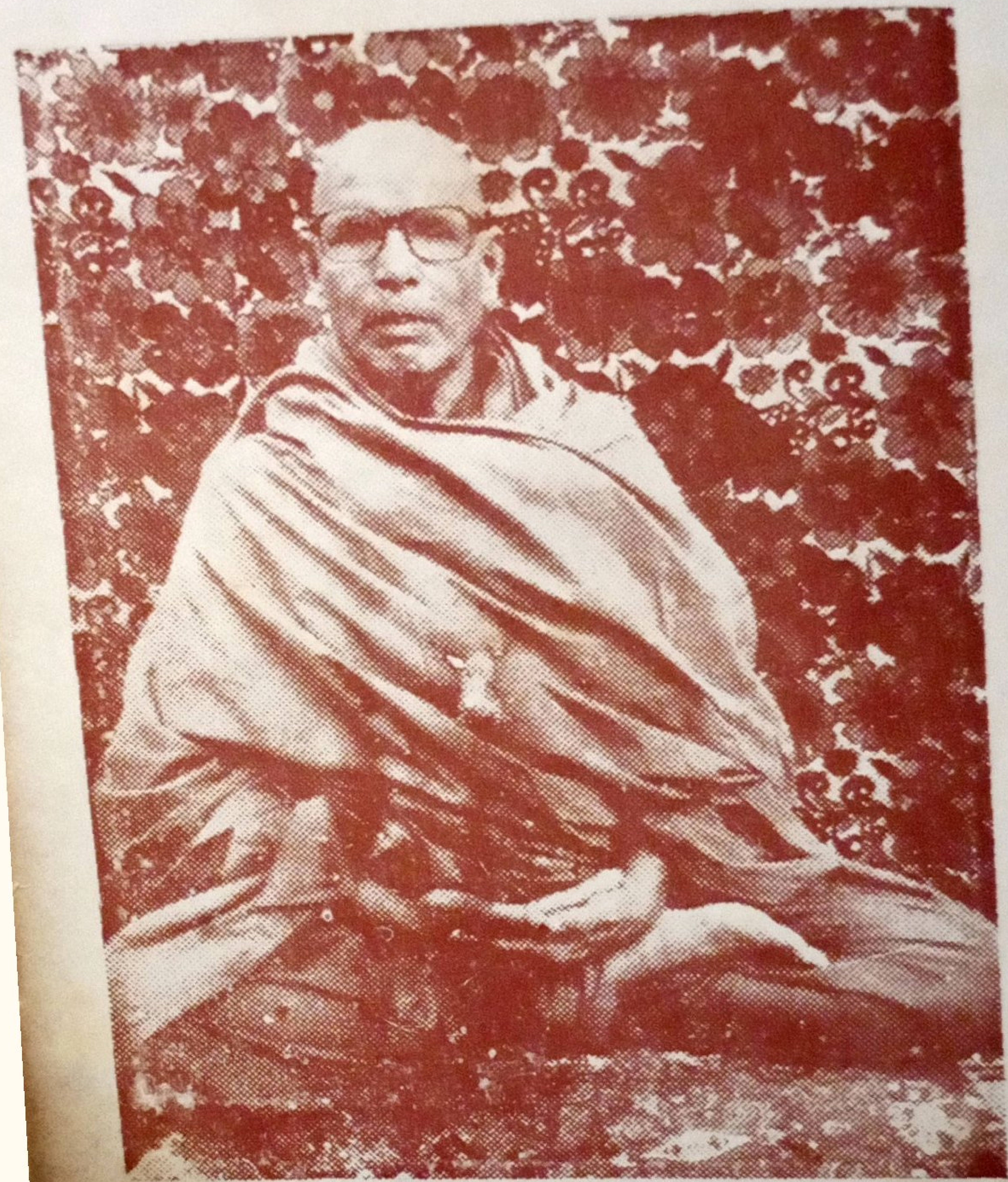
७९	२०	शिरताना	शिरतारा
७९	२२	हमारा	हमरा
८०	७	पूजा	पूरा
८०	२०	हमारे	हमरे
८४	१	जासो	जामो
८४	१	करानो	करायो
८६	५	पोट	पेट
८६	१३	रीछ	रीस
८९	१९	निराधार	निराधारा
९१	१६	लगाया	लगाना
९३	१२	वेद को	वेद की
९३	२१	आया	आपा
९५	१८	मार	मारे
९९	२१	चरणो	शरणो
१०३	१०	बढ़वता	बढ़ावता
१०४	८	कष्ट	काष्ट
१०४	९	जम	यम
१०५	३	कष्ट	काष्ट
१०६	१५	भाई	माई
१०७	१०	दाय	दास
१०८	२१	वया	क्या
११०	७	पूर्णमदं	पूर्णमिदं
१११	१३	निचार	विचार
११३	१५	अध्याय	अध्यास
११४	१३	महि	माहि
११५	२५	नानी	नाना

महात्मा श्री बचनरामजी महाराज के
मुख्य अधिकारी शिष्य



श्री १०८ श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज
मु० पो० दिवराला, वाया श्री माधोपुर
जिला-सीकर (राज.) पिन-३३२७०४

महात्मा श्री बचनरामजी महाराज के
मुख्य अधिकारी शिष्य



श्री १०८ श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज
मु. पो. दिवराला, वाया श्री माधोपुर
जिला सीकर (राज.) पिन ३३२७०४

॥ ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः ॥

श्री गुरु बचनामृत प्रकाश

मंगलाचरण

दोहा

आदि देव सतगुरु नमो, कृपा सिन्धु भगवन्त ।
सुमिरत ही सिद्ध होय सब, पावे ज्ञान अनन्त ॥
अगम अगोचर अलख अज, निर्विकार निर्वान ।
गुणातीत अक्षय अमर, निर्विकल्प निर्मान ॥
पूर्ण ब्रह्म परमात्मा, व्यापक जगदाधार ।
सो सतगुरु पर काज हित, लिया मनुज तन धार ॥
बचनराम गुरुदेव को, वन्दन बारम्बार ।
स्वयं ज्ञान उपदेश कर, तुरत किया भव पार ॥
बचनराम सतगुरु मिले, मस्त ज्ञान गम्भीर ।
नित्यानन्द निज ज्ञान दे, मेटी सब भव पीर ॥
सतगुरु दीक्षा ज्ञान दे, संषय भरम मिटाय ।
जिसका वर्णन मैं करूँ, कविता रुचिर बनाय ॥

चौपाई

एक गृहस्थ मुमुक्षु प्यारा । निशिदिन मन में करे विचारा ॥
कैसे हो भवसागर पारा । जनम मरण से मिले किनारा ॥
तब उपजा मन में वैरागा । तज गृह त्रिय सुत गुरु ढिग भागा ॥
बन में गया देखि कुटि सुन्दर । सतगुरु दरश किया जा अन्दर ॥

करी डण्डवत कीनी अरजी । गुरुवर मुझ पर कीजे मरजी ॥
जनम मरण का हूँ दुखियारा । तुम स्वामी दुःख मेटनहारा ॥
साधन मोहि कहो समझाई । जिससे भव दुःख सब मिट जाई ॥
कमल नयन गुरु ज्ञानी खोले । मस्तक हाथ धरा फिर बोले ॥
सतगुरु कही अमिय सम बानी । समझत मिटे चौरासी खानी ॥
जो श्रद्धा राखत विश्वासा । होय ज्ञान उर संषय नासा ॥
भारतीय संस्कृति बतलाऊँ । सुनो शिष्य सब शंक नसाऊँ ॥
देव संस्कृति श्रुति ने गाई । सुर नर मुनि सबको सुखदाई ॥
मानव धीर वीर गम्भीरा । जहाँ पशु पक्षी तक वीरा ॥
नीति धर्मं भक्ति वैरागा । अनुभव ज्ञान स्वरूप में जागा ॥
प्रक्रिया सिद्धान्त कुशल व्यवहारा । साधन सम्पन्न कुशल विचारा ॥
यह भारत की मान प्रधाना । ऋषि मुनिवेद पुरान बखाना ॥

दोहा

कर्मवीर अरु धर्मवीर, देश वीर जहँ थाय ।
दान भक्त अरु ज्ञान वीर, अन्य देश में नाय ॥

तर्ज राधेश्याम

सुन शिष्य प्रथम हम कहते हैं, भारत में नीति प्रधाना है ।
जिसके धारण से सुख पावे, कहे ऋषि मुनि वेद पुराना है ॥
मानव तन सुख साधन तांई, खुद सुखी होय पर सुखदाई ।
कर्तव्य पालने हेतु तुम्हें, सुख साधन अष्ट कहूँ गाई ॥

चौपाई

प्रथम सुख है निरोगी काया । आयुर्वेद में है बतलाया ॥
ब्रह्म मुहूर्त उठे सुखदाई । शौच स्नान तन शुद्ध कराई ॥
कसरत डंड करो व्यायामा । तन आरोग्य रहे आरामा ॥

भूख प्यास को रोको नाई । प्रकृति के अनुकूल चलाई ॥
मल मूत्र का वेग न रोको । छः घंटा निन्द्रा तन चोको ॥
द्वय ब्रह्मचर्य पालन करना । अष्ट मैथुन तज चित हरि चरना ।
तीजी विद्या पढ़ो चित लाई । होय विवेक बुद्धि चतुराई ॥
चौथा मित आहार कर सात्विक । युक्ति प्रमाण बढ़े बल आदिक ॥
पंचम होय परस्पर प्रेमा । जिस घर में यह रहता नेमा ॥
हर कारज की करे व्यवस्था । अनुशासित मर्यादा मस्ता ॥
अपशब्दों का हो न प्रयोगा । जिस घर में होवे न वियोगा ॥
जो कोई कार्य बतावें जिसको । समय प्रथम करे झट उसको ॥
आज्ञा पालन मात सिखावे । नीति धर्म बैराग बतावे ॥
करके मात पिता की सेवा । सुख सम्पत्ति पावो फल मेवा ॥
मात पिता सुत को समझावे । बुरे कर्म से सदा बचावे ॥
कुल मर्याद धर्म अरुनीति । कुशल बनावत कर निज प्रीति ॥
भाई हिलमिल रहे हमेशा । पढ़ ले रामचरित उपदेशा ॥
नारी एक पतिव्रत धारे । ईश्वर सम निज पति निहारे ॥
पुरुष एक नारीव्रत धारे । लक्ष्मी सम निज नारि निहारे ॥
सास ससुर की सेवा करना । घर में सभी नारी मिल रहना ॥
सास बहू कुँ पुत्रीवत राखे । अनुचित भेद दुराव न राखे ॥
यह मर्यादा उर में धारे । वह जन कभी होय न दुखारे ॥
षष्टम दूर रहे दुष्कर्मन । जिसका अब हम करते वर्णन ॥
वैश्यागामी चुगल जुआरी । निन्दक मद्यप मांसाहारी ॥
संत शास्त्र कहे इसे कुमारग । इनसे बचे वही कहत सुमारग ॥
कुसंग में कबहूँ नहीं जावे । खोटे कर्म नहीं मन लावे ॥
कभी किसी का बुरा न कीजे । पर उपकार हृदय मन दीजे ॥

यह दुष्कर्म कभी नहि करिये । विष से विष यह कभी न लहिये ॥

दोहा

खोटे करम सदा करे, रखे सफाई नाहिं ।
द्रव्यहीन बिन ज्ञान के, चार दरिद्रि बताहिं ॥

तजे राधेश्याम

सप्तम शुभ कर्मों को कर, अरु स्वारथ भाव त्याग करना ।
उठ प्रातः ध्यान कर निर्विकल्प, निर्मान अमल अज चित धरना ॥
नहीं कोई कल्पना उठने दे, हम तो है स्वयं आप रहना ।
सतगुरु का कहना सत मानो, गर्जन शिवोऽहम् की करना ॥

दोहा

स्वरूप स्थिति प्रार्थना, ध्यान सच्चिदानन्द ।
स्वयं तरे जगतारिणी, नाव बने निर्द्वन्द्व ॥

चौपाई

गुरु दिग विनय करी मृदुबानी । अपना लो प्रभू निज जन जानी ॥
आप स्वयं आनन्द के दाता । स्वयं ब्रह्मगुरु सब गुण ज्ञाता ॥
माया मोह न आने पावे । केवल अपना आप लखावे ॥
हमको सद्‌बुद्धि प्रभू दिजे । भेद खेद सबही हर लीजै ॥
अष्टम निज सम सब दुःख जानो । आतम एक सभी में मानो ॥
घर का सब हि काम सम्हारो । परमारथ व्यवहार सुधारो ॥
स्वयं आप निज अनुभव करना । बिना विचारे कुछ नहीं करना ॥
कारज करे विचार विज्ञाना । सुजन चले सत राह सयाना ॥
ज्ञान ध्यान भक्ति अरु धरमा । यथा समय किजे सब करमा ॥
अनुकूल समय सदा रह ज्ञाना । कर प्रतिकुल होय नुकसाना ॥
मर्यादा में रहना प्यारे । आलस त्याग बनो सुखीयारे ॥

ऐसा कर्म कभी नहीं कीजै । पश्चाताप आग में छीजे ॥
गुरु पितु मातु पूजनीय होई । तां सन्मुख कटु बोलत कोई ॥
नित्यानन्द मरघट तरु होवत । बैठत खग मलमूत्र करावत ॥
गुरु पितु मात को करो प्रणामा । आज्ञा पाल सेव निस्कामा ॥
गुरु के वचन न जाने पावे । चाहे प्राण भले ही जावे ॥
कर स्नान मंत्र को जपना । पूजा पाठ ध्यान कर अपना ॥
मैं हूँ निर्विकल्प निर्मांना । निर्विकार निर्मल निर्वांना ॥
यह निश्चय राखे जन कोई । सुख सम्पत्ति पावे नर वोही ॥

दोहा

रामायण गीता पढ़ो, अष्टावक्र सम्वाद ।
योग वसिष्ट अनुभव प्रकाश पढ़ होवो आजाद ॥

चौपाई

राजकाज खेती व्यापारा । आलस त्याग होय सुखियारा ॥
पुरुषार्थ कर द्रव्य कमाना । सुख सन्मान जगत में पाना ॥
मानव तन दुर्लभ जग माई । शुभ उद्देश्य कर्म शुभ ताई ॥
करो सदा सन्तो का संगा । मन पर चढ़े ज्ञान का रंगा ॥
समझो अपनी इज्जत जीवन । सहनशील अभ्यास करो मन ॥
क्रिया शुद्धि करो चतुराई । सदा सभी को सुख पहुँचाई ॥
प्रथम भवन की करो सफाई । फिर सब बरतन साफ कराई ॥
छोटे बालक नित नहलावो । धुले साफ कपड़े पहिनावो ॥
अपने कपड़े साफ रखाई । ब्रह्म मुहूर्त स्नान कराई ॥
जल बरतन धो छान भराई । भोजन शुद्ध बना चतुराई ॥
झूठ कपट चुगली तज निन्दा । वाणी शुद्ध कर पा आनन्दा ॥
काम क्रोध छल कपट तजाई । नित ही मन की करो सफाई ॥

बुद्धि की नित रखना सफाई । विद्या स्वयं ज्ञान रहवाई ॥
दृष्टि शुद्ध वातावरण शुद्धी । धर्म विचार कर्म की शुद्धि ॥
शुद्ध ज्ञान व्यवहारिक शुद्धी । अपना आप रखौ नित शुद्धी ॥
परमारथ विराग की शुद्धी । निर्विकल्प स्वरूप की शुद्धी ॥
यह शुद्धी धारे जन कोई । ज्ञान गहे सुख पावे वोई ॥
यहि विधी होय कुबुद्धि निवारण । नित्यानन्द निर्द्वन्द विचारण ॥

दोहा

जो पक्के रह नियम के, धीर वीर गम्भीर ।
पर दुःख माने आप सम, मिटे सकल भव पीर ॥

चौपाई

अपने सम पर वस्तु निहारा । वेद विहित कर लोकाचारा ॥
अपने हक की खाय कमाई । पर की आस करो मत भाई ॥
पर उपकार करो चित लाई । ज्ञान दान से होय भलाई ॥
मर्यादा में हरदम रहना । बेमर्याद भाव नहीं गहना ॥

दोहा

चार नियम पालन करो, अवलोकन निज ज्ञान ।
सुबह शाम सत्संग हो, श्वांस श्वांस निज ध्यान ॥
धर्म अर्थ अरु काम वो, मोक्ष पदार्थ चार ।
जिसने चारों पा लिया, वो ही नर हुशियार ॥
लेय नसीयत सभी की, गुण ग्राही जो होय ।
वही सुखी रह जगत में, सुख की निद्रा सोय ॥
हिन्दू ईसा जैन मत, यवन पारसी सिक्ख ।
नित्यानन्द पाले नियम, पावे सुख आदिक्क ॥

चौपाई

सुनो शिष्य तुमको समझावूं । दश प्रकार के धर्म बताऊँ ॥
हिन्दू मुस्लिम जैन ईसाई । सबके धर्म एक दरशाई ॥
सत्य धर्म पर चलो हमेशा । कभी किसी को देय न क्लेशा ॥
कभी किसी का दिल न दुखाना । किसी जीव को मार न खाना ॥
पर उपकार अतिथि सेवा । घर आये को आदर देवा ॥
पंचम रक्षा करो शरणागत । शिवी राजा की साख बतावत ॥
मात पिता निज देश समाजा । धर्म कार्य कर सेवा काजा ॥
सप्तम त्रयविधि दान बखाना । विद्या अर्थ अभय कर दाना ॥
अष्टम नार पतिव्रत धारे । नवम पुरुष नारी व्रत धारे ॥
दशमा हिन्दू धर्म सनातन । पावत सुख सम्पत्ति कर पालन ॥

दोहा

सदा धर्म करते रहो, जब लग घट में प्रान ।
मनु शास्त्र में दश लिखे, उसके खास निशान ॥

चौपाई

पहले तुम धीरज को धारो । दूजा क्षमा सदा उर धारो ॥
तीजा मन अपने वश करना । चौथा चोरी पेशा तजना ॥
पंचम शुद्ध हमेशा रहना । छठा इन्द्रियाँ वश में करना ॥
सप्तम बुद्धि शुद्ध विचारा । अष्टम विद्या उर में धारा ॥
नवम सत्य को धारण कीजे । दशवा क्रोध नाश करि लीजे ॥

दोहा

मनुज मात्र सबके लिये, ईश नियम इक जान ।
नित्यानन्द पालन करे, तिनका हो कल्याण ॥
वीरांगना नारियाँ, हो गई भारत माय ।
नित्यानन्द कछु नाम का, छन्द बनावूं गाय ॥

कविता

॥ मनहर छन्द ॥

मदालसा चुडाला कुन्ती, अनसुइया सहजा दमयन्ती ।
द्रोपदी सीता सतवन्ती, गारगी का ज्ञान भारी ॥
लक्ष्मी पदमा विद्याधरी, मैत्रेयी सावित्री शबरी ।
सुलोचना लीली मन्दोदरी, शुल्का पतिव्रता नारी ॥
सखु सुलभा मैणावती मीरा भारत भूषण हो गई ।
छोड़ा नहीं धर्मव्रत, दुख सहे आप भारी ॥
नित्यानन्द कहे बायो, सुनो सभी कान खोल ।
बनो वीरांगना सभी पतिव्रत धर्म भारी ॥

दोहा

वीर बहुत प्रकार के, हो गये भारत माय ।
नित्यानन्द ऐसी कथा, और देश में नाय ॥

॥ चौपाई ॥

खोटे करम त्यागकर वीरा । आलस तज शुभ कर्म गम्भीरा ॥
होय वीर अधर्म को त्यागे । बनकर वीर धरम में लागे ॥
सेवा देश करो बन वीरा । प्राण जाय पर हो न अधीरा ॥
विद्या अर्थ भूमि श्रमदाना । दाता दान वीर कहलाना ॥
अब मैं कहूँ भक्ति पद गाई । रामायण परमाण बताई ॥
श्री भगवान राम फरमाई । शबरी सार भक्ति समझाई ॥
रामायण में जिमि चौंपाई । जैसी की तैसी हम गाई ॥
प्रथम भगति संतन कर संगा । दूसरी रति मम कथा प्रसंगा ॥

दोहा

गुरु पद पंकज सेवा, तीसरी भगति अमान ।
चौथी भगति मम गुन गन, करई कंपट तजि गान ।।

चौपाई

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा । पंचम भजन सो वेद प्रकाशा ।।
छठ दम सील विरति बहु करमा । निरत निरंजन सज्जन धरमा ।।
सप्तम सम माहिं मम जग देखा । मोते सन्त अधिक करि लेखा ।।
अष्टम यथा लाभ सन्तोषा । सपने हु नहि देखइ पर दोषा ।।
नवम सरल सब सन छल हीना । मम भरोस हिय हरष न दीना ।।
इहि विधि भक्ति करे जन वीरा । वो ही पावत ज्ञान गम्भीरा ।।
ज्ञान वीर सो वीर कहावे । स्वरूप स्थिति संकल्प मिटावे ।।
जनम मरण अरु दुःख सुख माना । भूख प्यास पुन पाप बखाना ।।
कर्ता भोक्ता आना जाना । भेद अज्ञान न निज में माना ।।
पंच तत्व का यह तन माना । जनम मरण तिन धरम बखाना ।।
दुःख सुख पाप पुन्य मन माना । भूख प्यास यह धर्म ही प्राना ।।
करता भोगता अंतःकरणा । आवन जावन सूक्ष्म करणा ।।
भेद अज्ञान बुद्धि ने माना । चौदह धर्म से अलग रहाना ।।
शरीर इन्द्रिय प्राण मन आदि । इनके नाना लगत उपाधि ।
निराकार निर्मल निरमाना । निराधार अव्यय निरबाना ।
अकल अटल असीम अविनाशी । अनिह अव्यक्त स्वयं परकाशी ।
विधि निषेधरहित निर्विकारा । अचल अखंड अद्वैत अपारा ।।
अनघड अलख असंग अनूपा । अक्षय अनादि अभंग अरूपा ।।

दोहा

निर्विकल्प निज रूप में, रहे कल्पनाहीन ।
नित्यानंद खुदमस्त है, ज्ञान और ब्रह्म चीन ।।
विशेषणों के कथन से, स्वरूप चिन्तन होय ।
नित्यानंद चिंतन किये, देह भान सब खोय ।।
हे भगवन् मुझको कहो, कैसे हो वैराग ।
वीर बनू वैराग में, कल्पा माना त्याग ।।

चौपाई

सुनो शिष्य तुमको समझाऊँ । षट् प्रकार वैराग बताऊँ ।।
मुर्दा जलत देख शमशाना । एक दिवस हमकुँ यहाँ आना ।।
विषय भोग करते हो ग्लानी । कछुक काल वैराग बखानी ।।
प्रसव समय त्रिय हो विरागा । कछुक काल त्रिय नर कुँ त्यागा ।।
पुत्र नारि गृह सम्पती हीना । सुत दारा बन्धव दुःख दीना ।।
इस विधि जिसको होवे ग्लानी । वहि मंद वैराग बखानी ।।
सुख सम्पत्ति धन गृह सुत दारा । सपना सम जाने संसारा ।।
सर्व भोग आशक्ति त्यागे । विष सम जान विषय तज भागे ।।
सोई तीव्र वैराग बखाना । सतगुरू शरणे जाय सुजाना ।।
सर्व भोग इन्द्रादि भोगा । ब्रह्मलोक सब भोग वियोगा ।।
काकविष्ट लखकर सब त्यागे । साधन सम्पन्न गुरु ढिग आगे ।।
उपजही तीव्रतर वैरागा । हर दम निज स्वरूप में जागा ।।

दोहा

हे स्वामी मुझको कहो, प्रक्रिया कुशल किमि होय ।
नित्यानन्द समझाय के, सब संषय भ्रम खोय ।।

चौपाई

शिष्य चार अनुबन्ध संयुक्ता । अनुभव ज्ञान पाय होय मुक्ता ॥
हे स्वामी अनुबंध बताओ । संषय शोक भरम गढ़ ढाओ ॥
सुनो शिष्य चारों अनुबन्धा । समझत मिटे चौरासी फन्दा ॥
विषय प्रयोजन अरु सम्बन्धा । अधिकारी चारों अनुबन्धा ॥
अब मैं तोय नीको समझाऊँ । अरथ खोल सब शंक मिटाऊँ ॥
निस्काम कर्म उपासन कीना । मल विक्षेप नष्ट करि लीना ॥
चारों साधन सम्पन्न होई । ज्ञान गहे अधिकारी सोई ॥
षट् सम्पत्ति का मुमुक्षु वैरागा । हो विवेक स्वरूप में जागा ॥
जनम मरण का बन्धन भारी । किस विधि होय मुक्ति हमारी ॥
सोई मुमुक्षु गुरु शरणे जावे । ज्ञान गहे सब शंक मिटावे ॥
अब सुन षट् सम्पती समझाऊँ । नाम सुनाय अर्थ बतलाऊँ ॥
सम दम श्रद्धा उपरति जानो । समाधान तितिक्षा षट् मानो ॥
सम मन को विषयों से रोके । दम विषयन से इन्द्रिय रोके ॥
शीत उष्ण दुःख सुख सम जाने । सहे तितिक्षा बुद्धि जन माने ॥

दोहा

जग के सर्व प्रपंच से, जब होवे हैं निवृत्ति ।
नित्यानन्द उसको कहे, संत शास्त्र उपरति ॥
वेद वाक्य गुरु सत्य है, श्रद्धा अस विश्वास ।
समाधान ताको कहत, मन विक्षेप को नास ॥
षट् सम्पति साधन सहित, ताहि होय वैराग ।
इन्द्रादिक के भोग को, काक विष्ट सम त्याग ॥
सतगुरु के सत्संग से, होवत उसे विवेक ।
नित्यानन्द जग असत है, सत्य आतमा एक ॥

चौपाई

सतचित आनन्द अज अविनाशी। अक्षय अमल स्वयं परकाशी ॥
जनम मरण का मिट गया फन्दा। नित्यानन्द भया निर्द्वन्दा ॥

तर्ज राधेश्याम

ग्रन्थ और विषय का प्रतिपाद्य, प्रतिपादक भाव सम्बन्ध लहते।
ग्रन्थ प्रतिपादक प्रतिपाद्य विषय, नित्यानन्द इमि बुद्धजन कहते ॥
अज्ञान सहित यह जनम मरण, अनरथ की निवरती होवत है।
परमानन्द आत्मा की प्राप्ति, प्रयोजन ग्रन्थ बतावत है ॥
हे गुरु आपने फरमाया, प्रक्रिया में सदा कुशल रहना।
कर दया आप मोय समझावो, सब भेद प्रक्रिया का कहना ॥
अब सुनो शिष्य चित धर कर तुम, प्रक्रिया के भेद बताते हैं।
जिसको समझे आतम लख कर, सब संषय भरम मिटाते हैं ॥

दोहा

पाँच तत्व गुण तीन से, बन गया सकल जहान।
निराकार तुम आत्मा, इनसे न्यारा जान ॥

तर्जराधेश्याम

पृथ्वी जल तेज पवन नभ ये, पंच तत्व सब नाशी है।
इन पंच तत्व का देह बना, तू नित न्यारा अविनाशी है ॥

चौपाई

शोक पसारन निन्द्रा जानो। लार रोम नभ के पहिचानो ॥
काम धावन अरु तृषा जानो। श्वेद त्वचा वायु की मानो ॥
क्रोध बलन अरु क्षुधा बखाना। मुत्र नाड़ी तेज की जाना ॥
मोह चलन अरु कांती जाना। वीर्य माँस जल के पहिचाना ॥
भय आकुंचन आलस कहिये। रक्त अरु अस्थि अवनी के गहिये ॥

पंच तत्व के भाग न्यारे । आप आतमा जानन हारे ॥
पंच तत्व मिले जो भागा । सो हम वर्णन करने लागा ॥
शोक काम अरु क्रोध बखाना, मोह अरु भय पंच नभ माना ॥
पसारन धावन बलन जाना । चलन आकुंचन पवन पिछाना ॥
निन्द्रा तृषा क्षुधा को जानो । कांती आलस तेज पिछानो ॥
लार श्वेद मूत्र जो कहिये । वीर्य रक्त पाँचों जल गहिये ॥
रोम त्वचा नाड़ी अरु माँसा । अस्थि पृथ्वी के पाँचों खासा ॥

दोहा

पंचभूत पंचीकरण, अंस तमोगुण जान ।
पंचबीस समुदाय से, यह स्थूल पहिचान ॥
नाम जाति सम्बन्ध ये, गोरो कालो रंग ।
मोटा पतला छोटा बड, टेडो सीधो अंग ॥
जनम मरण बालक युवा, बूढ़ा मान शरीर ।
वर्णाश्रम अभिमान से, अलग ज्ञान गम्भीर ॥
अस्थि बिन्दु रस मेद है, मज्जा रक्त अरु मांस ।
यह स्थूल के धर्म है, मेरा सब जग वास ॥

तर्जराधेश्याम

अब भूत अपंचीकृत कहते, जिससे सूक्ष्म तनु बनता है ।
तूँ द्रष्टा निराकार आत्मा, निर्मल नित न्यारा रहता है ॥
अंतःकरण मन बुद्धि चित च्यार, पंचम अहंकार कहाया है ।
अंदर का ज्ञान करण हेतु, यह अंतःकरण बनाया है ॥

दोहा

व्योम सतोगुण से बना, अंतःकरण पिछान ।
प्रथम विषय है स्फुरणा, देव विष्णु भगवान ॥

पवन सत्वगुण से बना, यह मनवा बलवान।
संकल्प विकल्प विषय है, देव चन्द्रमा जान॥
तेज सतोगुण से बनी, बुद्धि बडी विशाल।
निश्चय करना विषय है, ब्रह्म देवता भाल॥
जल के सत्वगुण से बना, चित लिजीये मान।
चिंतन करना विषय है, वासुदेव सुर जान॥
भूमि सतोगुण से बना, अहंकार बलवान।
विषय करत है अहंपना, रुद्र देव पहिचान॥

तर्जराधेश्याम

अपंचीकृत पंच भूतों के, सत अंस ज्ञानेन्द्रियाँ बनती है।
तुम निराकार साक्षी न्यारा, इमि श्रुति साखा कहती है॥
नभ सत्व अंस से श्रोत्र बनी, अरु विषय शब्द इनका मानो।
कहते हैं देव दिशा इनके, तुम साक्षी स्वयं अलग जानो॥
वायु के सत्व से ज्ञानेन्द्रि, यह त्वचा नाम बतलाते हैं।
तांहि का विषय स्पर्श करना, सुर देव पवन कहलाते हैं॥
अग्नि के सत्व से ज्ञानेन्द्रि, चक्षु की उत्पत्ति गाते हैं।
अरु रूप देखना विषय सदा, सूरज को देव बताते हैं॥
जल सत्व अंस से ज्ञानेन्द्रि, रसना की उत्पती गाते हैं।
है विषय उसी का रस लेना, अरु देव वरुण बतलाते हैं॥
पृथ्वी के सत्व से ज्ञानेन्द्रि, यह घ्राण नाम बतलाते हैं।
सो विषय गंध को ग्रहण करे, सुर अश्वनीकुमार कहाते हैं॥

दोहा

नभ रज से वाणी बनी, विषय बोलना जान।
देव तांहि का अग्नि है, कह सतगुरु भगवान॥

वायु रजोगुण से बनी, हस्थ इन्द्रि बलवान ।
लेना देना विषय है, इन्द्र देव पहिचान ॥
तेज रजोगुण से बनी, पाद इन्द्रि यह जान ।
विषय तांहि का चलन है, देव उपेन्द्र मान ॥
जल के रजगुण अंस से, इन्द्रि उपस्थ पहिचान ।
मूत्र त्यागना विषय है, देव प्रजापति मान ॥
पृथ्वी रजोगुण से बनी, गुदा कर्मेन्द्रि जान ।
विषय कहे मल त्यागना, देव तांहि यम मान ॥

चौपाई

नभरज से यह बन गया व्याना । तांहि स्थान सर्वांग बखाना ॥
सर्वसंधिया मोड़न करता । चेतन आप अलग नित रहता ॥
वायु रज से बनता उदाना । कंठ जान तिनका स्थाना ॥
अन्न जल का विभाग कराया । इहि विधी शास्त्र कहे समझाया ॥
तेज रजोगुण्ण से बना प्राना । जिसका हृदय स्थान बताना ॥
इक्कीस सहस्त्र अरु छः सौ श्वासा । रात दिवस में आवत स्वांसा ॥
जल रजगुण से बना समाना । नाभी सोई स्थान बखाना ॥
खाय पीय अन्न जल के रस को । सब तनु में पहुँचा नस नस को ॥
पृथ्वी रज से बना अपाना । गुदा सोइ स्थान बखाना ॥
मल का त्याग क्रिया करवाना । साक्षी आप अलग रहवाना ॥

दोहा

नभ रज गुण से नाग बना, कंठ सोई स्थान ।
क्रिया सोई उद्‌गार है, ये हैं वेद प्रमान ॥
वायु रज से कुर्म बना, नेत्र सोई स्थान ।
पलके खोले मींचना, यहि क्रिया तुम जान ॥

वायु रजोगुण से बनी, हस्थ इन्द्रि बलवान ।
लेना देना विषय है, इन्द्र देव पहिचान ॥
तेज रजोगुण से बनी, पाद इन्द्रि यह जान ।
विषय तांहि का चलन है, देव उपेन्द्र मान ॥
जल के रजगुण अंस से, इन्द्रि उपस्थ पहिचान ।
मूत्र त्यागना विषय है, देव प्रजापति मान ॥
पृथ्वी रजोगुण से बनी, गुदा कर्मेन्द्रि जान ।
विषय कहे मल त्यागना, देव तांहि यम मान ॥

चौपाई

नभरज से यह बन गया व्याना । तांहि स्थान सर्वांग बखाना ॥
सर्वसंधिया मोड़न करता । चेतन आप अलग नित रहता ॥
वायु रज से बनता उदाना । कंठ जान तिनका स्थाना ॥
अन्न जल का विभाग कराया । इहि विधी शास्त्र कहे समझाया ॥
तेज रजोगुण से बना प्राना । जिसका हृदय स्थान बताना ॥
इक्कीस सहस्त्र अरु छः सौ श्वासा । रात दिवस में आवत स्वांसा ॥
जल रजगुण से बना समाना । नाभी सोई स्थान बखाना ॥
खाय पीय अन्न जल के रस को । सब तनु में पहुँचा नस नस को ॥
पृथ्वी रज से बना अपाना । गुदा सोइ स्थान बखाना ॥
मल का त्याग क्रिया करवाना । साक्षी आप अलग रहवाना ॥

दोहा

नभ रज गुण से नाग बना, कंठ सोई स्थान ।
क्रिया सोई उद्गार है, ये हैं वेद प्रमान ॥
वायु रज से कुर्म बना, नेत्र सोई स्थान ।
पलके खोले मींचना, यहि क्रिया तुम जान ॥

तेज रजोगुण से बना, वायु कृकल पहिचान ।
घ्राण तांहि स्थान है, क्रिया छींक ले जाना ॥
जल रज वायु देवदत्त, मुख सोई स्थान ।
जमवाई सौ क्रिया कर, इमि वेदान्त बखान ॥
पृथ्वी रज गुण से बना, वायु धनंजय जान ।
सर्व देह स्थान है, देह फुलावन मान ॥

चौपाई

सूक्ष्म देह के धर्म पिछाना । कर्त्ता भोक्ता दु:ख सुख माना ॥
लोक परलोक आना जाना । भ्रम अज्ञान शोक अरु ज्ञाना ॥
राग अरु द्वेष मान अपमाना । हो संकल्प विकल्प कहाना ॥
होय अंधपन अरु मंदपना । मेरा तेरा आवत स्वपना ॥
सात्विक राजस तामस मानो । त्रय वृत्तिया सूक्षम तनु जानो ॥
सूक्षम तनु के धर्म पिछाना । साक्षी आप अलग रह जाना ॥

दोहा

जो सूक्ष्म स्थूल का, बीज रूप अज्ञान ।
सोई कारण देह है, चेतन अलग पहिचान ॥
जीव ब्रह्म की एकता, कर अभेद निज ज्ञान ।
महाकारण सो देह है, साक्षी अलग पिछान ॥
मम शिवाय नहीं और है, मैं ही ये सब जान ।
सर्वरूप में हम ही हैं, केवल शरीर पिछान ॥
पंच भूत बपु पंच को, समझ शिष्य हर्षाय ।
वाचा भोग अवस्था कहु, संषय भरम मिटाय ॥
शिष्य वाणी सतगुरू सुनी, मन में मोद बढ़ाय ।
कहु अवस्था पंच की, शिष्य सुनो चितलाय ॥

तर्ज राधेश्याम

जहाँ चौदह त्रिपुटी सहित होय, जग का सब कार व्यवहारा है ।
है यहि अवस्था जागृत की, सब संत गुरु ग्रन्थ उचारा है ॥
है जागृत का स्थूल वपु, रज गुण वैखरी बानी है ।
इन्द्रियन भोग चक्षु स्थान, क्रिया शक्ति विश्व अभिमानी है ॥
जागृत में देखे सुने भोगे, सूक्षम जो होवे संस्कार ।
वहीं बनी अविधा दोषों से, सो स्वप्न अवस्था कर विचार ॥
सूक्षम तनु स्वप्न अवस्था है, सतगुण मध्यमा वाणी है ।
सूक्षम है भोग अरु ज्ञानशक्ति, वो तेजस कंठ स्थानी है ॥
जागृत अरु स्वप्न अवस्था लय, जब होवत है अज्ञान माय ।
सोई है अवस्था सुषोपती, गुरु बचन शास्त्र सब कहत गाय ॥
सुषोपती में कारण देह जान, तम गुण पश्यन्ति बानी है ।
है आनन्द भोग द्रव्य शक्ती, जीव प्राज्ञ हृदय स्थानी है ॥
जिसमें नहीं द्वैत भाव कोई, सो केवल आप रहाई है ।
जो स्वयं ज्ञान तुरीया कहते, गुरु बचनराम फरमाई है ॥
महाकारण वपु तुरीयावस्था, शुद्ध सतगुण भोग परा बानी ।
है अचिन्त्य शक्ती आभास जीव, नाभी मुर्धन्य है स्थानी ॥

दोहा

निर्विकल्प निज रूप की, स्थिति हो सो जान ।
यहि अवस्था उनमुनी, सो केवल पहिचान ॥

चौपाई

शिष्य कहे एक शंका आई । पंच कलेश कहो समझाई ॥
सुन शिष्य अब तोको समझाऊँ । पंच क्लेश का भेद बताऊँ ॥
अविधा अस्मिता राग अरु द्वेषा । पंचम कहत है अभिनिवेशा ॥

अन आतम में आतम बुद्धि । अशुचि पदार्थ मान कर शुद्धी ॥
अनित्य पदार्थ नित्य करि माने । सुत वित गृह दुःख सुख करि जाने ॥
ज्ञानी इनको कहत अविद्या । होय नाश जब पढ़ ब्रह्म विद्या ॥
बुद्धि दृश्य अरु आतम दृष्टा । मूढ एक लख पावत कष्टा ॥
मति के धर्म आप में माने । यह अस्मिता क्लेश बखाने ॥
स्वयं ज्ञान होय नहीं जब लग । जनम मरण दुःख पावत तब लग ॥
अनुकूलता में उपजत रागा । प्रतिकूल देख द्वेष करि भागा ॥
मृत्यु का भय सबको लागे । रक्षा खातिर इत उत भागे ॥
यहीं क्लेश है अभिनिवेशा । ज्ञानी रहत निशंक हमेशा ॥
पंच क्लेश जीव के भाई । अरु कर शंका कहु समझाई ॥
शिष्य कहे गुरुदेव बताई । पंच कोश का भेद लखाई ॥

दोहा

सुनो शिष्य चित लाय के, कोश बतावू पंच ।
भिन्न भिन्न कर समझावसू, शंक न राखू रंच ॥
अन्नमयकोश व प्राणमय, कोश मनोमय मान ।
विज्ञान आनन्द कोश से, आतम न्यारा जान ॥
पति पत्नी संयोग से, तन स्थूल को धार ।
अन्न खाय बढ़ने लगा, बाल किशोर कुमार ॥
एक दिन यह तनु क्षीण हो, मृतक होयगा सोय ।
माटी में मिल जायेगा, यहि अन्नमय जोय ॥
कर्म इन्द्रियाँ पंच ये, और पंच मिल प्रान ।
कोश बना मिल प्राणमय, चेतन न्यारा जान ॥

तर्जराधेश्याम

जिसमें ज्ञानेन्द्रियाँ पंच मिली और छठा मन मतवाला है ।

यह कोश मनोमय कहलाता, तूँ न्यारा जाननवाला है ॥
पंच ज्ञान इन्द्रियाँ मिल करके, अरु छठी बुद्धि भी मिलकर ।
सो कोश विज्ञान कहाता है, तू साक्षी नित न्यारा रह कर ॥
अन्तःकरण की है त्रय वृत्तियाँ, प्रिय मोद प्रमोद बताते हैं ।
सोई आनन्दमय कोश कहे, गुरु बचनराम फरमाते हैं ॥

दोहा

मन मैं इक शंका उठी, शिष्य कहे शिर नाय ।
पंच ख्याति हमने सुनी, मोय कहो समझाय ॥

चौपाई

असत ख्याति आतम ख्याती । अन्यथा त्रय चतुर अख्याती ॥
अनिर्यवचनीय पंचम गाई । सो अब तोय कहू समझाई ॥

(1) असत ख्याती ॥ दोहा ॥

रज्जू में नहीं और कही, शून्यवाद की रीति ।
लेकिन मिथ्या सर्प की, रज्जू बीछ प्रतीति ॥
असत सर्प का ज्ञान हो, रज्जू में ही मान ।
शशा सिंग सुत बांझ को, होना चाहिये ज्ञान ॥

(2) आत्म ख्याती ॥ दोहा ॥

सर्व दृश्य में बुद्धि ही, होय वस्तु आकार ।
बुद्धि बाहिर सर्प नहीं, विज्ञानी का सार ॥

''अन्यथा ख्याती'' ॥ दोहा ॥

कोय डंडमाला दिखे, कोई दिखे दरार ।
सबकी बुद्धि नहीं बने, सत्य सर्प जल धार ॥
सर्प रूप से भान जो, हवै रज्जू ही एक ।
निज निज मति अनुसार से, कैसे दिखत अनेक ॥

बुद्धि ही में सर्प जो, क्षणिक तुम्हारी सोय ।
किमि रह सकता जब तलक, रज्जू बोध न होय ॥

''अख्यांती'' ॥ दोहा ॥

प्रथम लखे की स्मृति, सर्प रज्जू के मान ।
रज्जू ज्ञान किमि जात है, स्मृति जाति नाय ॥

''अनिर्वचनीय ख्याती'' ॥ दोहा ॥

जो नहीं भया तो क्या भगा है वह गयो विलाय ।
सर्प अनिर्यवचनीय सौ, है नहि कही न जाय ॥
शिष्य सुनायो तोय मैं, जग ज्यू रज्जू सर्प ।
सत्य असत कुछ भी नहीं, सब संषय करि अर्प ॥
नाम रूप संसार सब, जो कुछ कल्पा मान ।
अनहोता यह भासता, आप ब्रह्म सत जान ॥

प्रश्न पंच भेद

शिष्य कहे दोऊ जोड़कर, हे गुरु दीन दयाल ।
पंचभेद किसको कहत, मेटो सब जंजाल ॥
सुनो शिष्य तुम हित कहू, पंच भेद समझाय ।
नित्यानन्द भिन्न भिन्न कहू, सब संषय मिट जाय ॥
पंचभेद यह जानिये, जड़ जड़ का है मान ।
जीव जीव का भेद है, ईश जीव का जान ॥
जड़ ईश्वर का भेद है, जड़ अरु जीव का मान ।
पंच प्रकार के भेद ये, मिथ्या कहे बखान ॥

चौपाई

स्वरूप दृष्टि से कुछ नहीं भेदा । केवल अपने आप अभेदा ॥
भेद भ्रान्ति पंच है मानी । आरोपिता सो कही बखानी ॥

ईश जीव में कोई न भेदा। बिम्ब प्रतिबिम्ब नहीं दोय अभेदा ॥
न मैं कर्ता भोगता कोई । मणिलाल पुष्प भ्रम खोई ॥
संग भ्रान्ति यह नहीं बनती। घट आकाश में संग न बनती ॥
नहीं विकार भ्रान्ति यह मानो । रज्जू सर्प दोय नहीं मानो ॥
ब्रह्म से भिन्न कोई है नाही । जिमि कनक मे भूषण नाही ॥
तत्वों की दृष्टि से देखा । नहीं भेद कछु कोई पेखा ॥
स्वरूप दृष्टि से न कछु भेदा। सोना भूषण एक अभेदा ॥
अनहोते कल्पे है माने । षट् प्रकार अध्यास पिछाने ॥

॥ अध्यास ॥ दोहा

भ्रान्ति ज्ञान का विषय जो, कहत तांहि अध्यास।
कल्पित मुझमें है सभी, निर्विकल्प निज खास ॥

॥ अर्थाध्यास ॥ दोहा

भासे रज्जू सर्प ज्यों, त्यों आतम जग जान ।
जानो अर्थाध्यास सो, यह मिथ्या ही मान ॥

॥ ज्ञानाध्यास ॥ दोहा

रज्जू में ज्यों सर्प का, होता सच्चा ज्ञान ।
त्यों आतम में विश्व का, भ्रम से भासा आन ॥

॥ केवल संबंधाध्यास ॥ दोहा

आप स्वयं में कुछ नहीं, भाषत भ्रम से और ।
भाषे पर संबंध से, जब कीन्हा निज गौर ॥

॥ संबंध सहित संबंधी का अध्यास ॥

मुझमें जो कुछ कल्पना, बनती मिटती जान ।
सम्बन्ध सहित सम्बन्धी, मुझमें कल्पित मान ॥

॥ केवल धर्माध्यास ॥

तन इन्द्रियन के धर्म को, स्वयं लेत है मान ।
इन्द्रियन तन नहि लेत है, केवल धर्म प्रमान ॥

॥ धर्म सहित धर्मीकाध्यास ॥

धर्मी अन्तःकरण को, कहते वेद पुकार ।
माने के सब धर्म है, तूँ साक्षी निराधार ॥

॥ अन्योन्याध्यास ॥

च्यार विशेषण आत्म के, सत चित आनन्द एक ।
च्यार हि कहे अनात्म के, जड़ दुख असत अनेक ॥
जड़ अरु असत अनात्म के, सत चित दाबे जान ।
जड़ अरु असत न भान हो, सत चित होता भान ॥
आनन्द एक को दाबते, दुख अरु नाना जान ।
आनन्द एक न भान हो, दुख अरु नाना भान ॥

॥ अन्तराध्यास ॥

दोनों में से एक का, हो अध्यास ही जान ।
हो अनात्म सम्बन्ध का, नहिं स्वरूप में मान ॥

॥ स्वरूपाध्यास ॥

इसी अनातम स्वरूप का, हो अभाव यह जान ।
बनता मिटता होत यह, आप अटल है मान ॥

चौपाई

यह कोई नहीं बनत अध्यास । आप स्वयम् ही रहता खास ॥
न कोई जग है न कोई पाया । स्वयम् आप ही आप लखाया ॥
मेरी तुम मेटी सब शंका । अनुभव ज्ञान लगाया डंका ॥
धन्य धन्य गुरुदेव हमारी । भेद भावना सभी निवारी ॥

हे गुरु अब मुझको समझावो । षट् प्रमाण भेद बतलावो ।।
तब गुरु कहे सुनो चित लाई । षट् प्रमाण कहे हम गाई ।।

।। प्रत्यक्ष प्रमाण ।। दोहा

पंच ज्ञानेन्द्रि सु प्रत्यक्ष, होय विषय को ज्ञान ।
यहि प्रत्यक्ष प्रमाण है, यह वेदान्त प्रमाण ।।

।। अनुमान प्रमाण ।। दोहा

सुत प्रत्यक्ष नहीं कर सके, पिता जन्म का ज्ञान ।
पावक निश्चय घूमते, सो प्रमाण अनुमान ।।

।। शब्द प्रमाण ।। दोहा

पिता मरण परदेस में, शब्द सुनत हो ज्ञान ।
यही शब्द प्रमाण कहत, आतम न्यारा जान ।।

।। उपमा प्रमाण ।। दोहा

गौ सदृश उपमा सुनी, देख रोझ लिया मान ।
ज्ञान गाय का यह प्रमा, सो प्रमाण उपमान ।।

।। अर्थापती प्रमाण ।। दोहा

भोजन करत न दिवस में, निशि में करता जान ।
मोटे तन से जानिये, अर्थापती प्रमाण ।।

।। अनुप्लब्धि प्रमाण ।। दोहा

जिस घर में कोई वस्तु का, नहीं होने का ज्ञान ।
जहाँ अभाव हो वस्तु का, अनुउपलब्धी जान ।।

चौपाई

हे सतगुरु अब मोय बतावो । षट लिङ्गम का भेद समझावो ।।
सुन शिष अब तोको समझावू । षट् लिङग शास्त्र रीति बतलावू ।।

॥ षट् लिङ्ग उपक्रम उपसंहार ॥

दोहा

आदि अन्त में ब्रह्म इक, कथन होय निज ज्ञान ।
उपक्रम उपसंहार यह, जाना एक समान ॥

॥ अभ्यास ॥ दोहा

पुनि पुनि पाठन होय यह, एक ब्रह्म है सार ।
तांहि कहत अभ्यास है, करिये सदा विचार ॥

॥ अपूर्वता ॥ तर्ज राधेश्याम

प्रकरण कर प्रतिपादि : ब्रह्म, श्रुति प्रमाण से भिन्न अविषयपना ।
न लगे प्रमाण तिहि जानन हित, ब्रह्म स्वयं प्रकाश अपूर्वतापना ॥

॥ फल ॥ दोहा

मुझ केवल निज रूप में, बन्ध मोक्ष नहिं जान ।
याँ को ही फल कहत है, लख गुरु मुख यह ज्ञान ॥

॥ अर्थवाद ॥

माया की निन्दा करे, ब्रह्म प्रशंसा कीन्ह ।
अर्थवाद सो जानिये, सदा रहो लव लीन्ह ॥

॥ उपपती ॥

एक ब्रह्म अद्वैत को, युक्ती से ले जान ।
कहे विविध द्रष्टांत से, सो उपपती बखान ॥

चौपाई

शिष्य कहे हे सतगुरू देवा । सप्त भूमिका मम हित केवा ॥
सतगुरू कहे सुनो चितलाई । सप्त भूमिका तुम हित गाई ॥

दोहा

प्रथम भूमिका शुभ इच्छा है, दूजो सुविचार ।
तीजी है तनुमानसा, सत्वापती है च्यार ।।
असंगशक्ती है पंचमी, छठी पदार्था भाव ।
सप्तम तुरीया जानिये, मैं हूँ अचल स्वभाव ।।

।। शुभ इच्छा ।। दोहा

विषय विषे भई द्वैषता, गुरू तीरथ अनुराग ।
कही शुभेच्छा तांहि को, कथा श्रवणमन लाग ।।

।। सुविचारणा ।। दोहा

प्रगट भई सुविचारना, उपजा तत्व विचार ।
सोधन लगे इकान्त में, को हम को संसार ।।

।। तनुमानसा ।। दोहा

तीजी है तनुमानसा, मन का प्रत्याहार ।
स्थिति हो निज रूप की, राखे नित्य संभार ।।

।। सत्वापती ।। दोहा

चोथी सत्वापती है, अनुभव उदय अभङ्ग ।
निज आतम में जग दिखे, जिमि जल मध्य तरङ्ग ।।

।। असंगशक्ति ।। दोहा

छूटे तन अभिमान जब, निश्चय कियो स्वरूप ।
अशंशक्ती यह भूमिका, पंचम सदा अनुप ।।

।। पदार्थ भावनी ।। दोहा

कहे पदार्थ बुद्धी लौ, निज में सभी अभाव ।
यहि पदार्थ भावनी, छठी भूमि लखाव ।।

॥ तुरीया ॥ दोहा

भाव अभाव न कछु यहाँ, सप्तम भूमिका जान ।
निर्विकल्प निज रूप है, संर्वा सर्व समान ॥

चौपाई

शिष्य कहे है सतगुरु देवा । राज योग को हम हित केवा ॥
राजयोग के कहो अष्ट अंगा । सुनकर हो मम संषय भंगा ॥

दोहा

राजयोग के अष्ट अंग, कहू शिष्य समझाय ।
हठ प्रदीपिका ग्रन्थ मै, कही सोय बतलाय ॥

तर्ज राधेश्याम

यम नियम प्राणायाम आसन प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा ध्यान कहे।
सुन अष्टम अङ्ग समाधी है, योगीजन जिसमें मस्त रहे ॥

॥ यम ॥

अहिंसा सत अस्तेय ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह पंच ये कहत यम ।

॥ नियम ॥

शोच संतोष तप अरु स्वाध्याय ईश प्रणिधान ये पंच नियम ॥

॥ आसन ॥

सुखपूर्वक एक जगह स्थिर, बैठन को आसन कहते हैं ।
आसन पर स्थिर हो करके, श्वासा को स्थिर करते हैं ॥

॥ प्राणायाम ॥

घ्राणेन्द्रि बाया स्वर चन्द्र, अरु वाम सुरज कहलाता है ।
चलती है मध्य में सुषुमना, योगी जहाँ ध्यान लगाता है ॥
पुरक कर श्वास चढ़ाते हैं, कुम्भक कर श्वासा रोकत है ।
रेचक श्वासा बाहिर छोड़े, इमि योग शास्त्र बतलावत हैं ॥

इड़ा से पूरक करते हैं, और कुम्भक कूँ ठहरावत है ।
फिर रेचक सुरज से करते, यूँ प्राणायाम बढ़ावत है ।।

॥ प्रत्याहार ॥

जिमि मधुकर राज मक्खी के, आधीन सभी मक्खीयाँ होवे ।
तिहि चित्त आधीन सभी इन्द्रियाँ इमि प्रत्याहार करके जोवे ।।

॥ धारणा ॥

नासिका के अग्रभाग भ्रूकुटी, या षट् चक्कर आधारादिक ।
चित बाँध जो ध्यान करते हैं, योगी धारणा हों माफिक ।।

॥ ध्यान ॥

चित की एकाग्रता ध्येयाकार, तांहि को ध्यान योगी कहते ।
पूर्वोक्त ध्यान त्रिपुटी रहित, ध्येय मात्र समाधी में रहते ।।

॥ समाधी ॥ गीत का छन्द

सुनु शिष्य अब समाधी लक्षण, मुक्ति योगी वर्तते ।
तहै सिद्ध साधक एक है, करि क्रिया कर्म निर्वते ।।
निरूपाधि नित्य उपाधि रहित, जु यहि निश्चय मानिये ।
कछु भिन्न भाव रहे न कोई, सो समाधी बखानिये ।। १ ।।
नहीं शीत उष्ण तृषा क्षुधा, मुर्छा न भ्रम आलस्य रहे ।
नहीं जागरण नहि स्वप्न सुषुपती, तत्त्वं पद योगी लहे ।।
ज्यो नीर महँ मिलि जाय लवण, सु एक मेकहि जानिये ।
कछु भिन्न आव रहे न कोई, सो समाधी बखानिये ।। २ ।।
नहि हर्ष शोक न सुख दुःख, नहिं मान अरू अपमान यों ।
पुनि मनो इन्द्रिय वृति नष्ट, रू ज्ञान नहि अज्ञान यों ।।
नहि जाति कुल नहिं वर्ण आश्रम, जीव ब्रह्म न जानिये ।
कछु भिन्न भाव रहे न कोई, सो समाधी बखानिये ।। ३ ।।

दोहा

हे स्वामी मोको कहो, ज्ञान ही साधन अष्ट ।
नित्यानन्द लख स्वरूप को, हो सब संषय नष्ट ।।
सुनो शिष्य तोय ज्ञान के, साधन अष्ट बताय ।
नित्यानन्द धारण किये, आतम रूप लखाय ।।

चौपाई

विवेक वैराग षट् सम्पति गाई । चौथा मुमुक्षु कहु समझाई ।।
श्रवण मनन निधिध्यासन मानो । तत् पद त्वं पद सोधन जानो ।।
याँ का अर्थ कहू समझाई । समझत सकल संषय भ्रम जाई ।।
ब्रह्म सत्य जग मिथ्या होई । कहत विवेक सन्त जन सोई ।।
ब्रह्मलोक के भोग को त्यागा । यह लक्षण सब कहत वैरागा ।।
सम दम उपरम तितिक्षा श्रद्धा । समाधान षट् सम्पती कहन्दा ।।
जनम मरण का दुख अतिभारा । किस विध यह सब मिटत हमारा ।।
गुरु शरण में रहत सुजाना । यहीं सब लक्षण मुमुक्षु लखाना ।।

दोहा

तात्पर्य वेदान्त का, युक्ती से ले जान ।
यहि श्रवण कहलावता, बचन गुरु कहे मान ।।
जैसे चुम्बक शक्ती करि, लोहा भ्रमण कराय ।
तिमि चेतन शक्ती करि, सब जग कार कराय ।।
बार बार चिन्तन करे, जीव ब्रह्म नहिं दोय ।
यहि मनन सतगुरु कहे, नित्यानन्द लख सोय ।।

तर्ज राधेश्याम

त्रिसकार विजाति अनात्मवृति, सजाति आत्म को धारण कर ।
अटल स्थिति निज आतम मे, नित्यानन्द नित निधिध्यासन कर ।।

दोहा

तत्त्वं पद सोधन कहूँ, जिहि वेदान्त बताय ।
तत् ईश त्वं जीव वाच्य, भिन्न भिन्न कर दरशाय ॥

तर्ज राधेश्याम

अव्याकृत माया ईश देश, जीव नेत्र कंठ हिय देश बना ।
उत्पत्ति स्थिति लय ईश काल, जीव काल सुषुपती जागृत सपना ॥
सत रज तम गुण त्रय ईश्वर की वस्तु, सामग्री यहि गाते है ।
जीव कारण लीङ्ग स्थूल वपु, यहि वस्तु सामग्री लाते हैं ॥
विराट हिरण्यगर्भ अव्याकृत, ईश्वर का तनु बताते हैं ।
कारण सूक्ष्म स्थूल तीन, ये जीव शरीर लखाते हैं ॥
विश्वनर सूत्रात्मा अन्तरयामी, ईश्वर अभिमान कहाते हैं ।
विश्व तेजस अरु प्राज्ञ तीन, अभिमानी जीव बताते हैं ॥
मैं एक हूँ सो बहुरूप होऊ, यह ईश कार्य बतलाता है ।
जागृत से आदि मोक्षपर्यन्त भोग, ये जीव कार्य कहलाता है ॥
सर्वशक्ती सर्वज्ञ व्यापक एक, स्वतंत्र समर्थ परोक्ष माया ।
ये अष्ट धर्म ईश्वर के है, वेदान्त ग्रन्थ में यूं गाया ॥
अल्प शक्ती, अल्पज्ञ परिच्छिन्न अनेक, पराधीन असमर्थ अपरोक्ष अविद्या ।
ये अष्ट ही धर्म जीव के है, जब मिटे पढ़ेगा ब्रह्म विद्या ॥
देश काल वस्तु वपु अभिमान, कार्य अरु धर्म कहे माया ।
माया में आभास अधिष्ठान ब्रह्म, मिल तत्पद वाच्य अर्थ गाया ॥
देश काल वस्तु वपु अभिमान, कार्य अरु धर्म मलीन माया ।
अविद्या में आभास अधिष्ठान कुटस्थ, मिल त्वं पद वाच्य अर्थ गाया ॥
यह सर्व छोड़ शुद्ध ब्रह्म ग्रहण, तत्र् पद का लक्ष्य अर्थ गाते हैं ।
तज जीव धर्म पूर्व शुद्ध ग्रहण, कुटस्थ त्वंपद लक्ष्यार्थ बताते हैं ॥

तत् त्वं दोऊ वाच्य अर्थ त्यागो, गोलीमार सूट कर भेदा सदा।
तत् त्वं लक्ष्णार्थ एक ही है, नित्यानन्द आप अभेद सदा ॥

दोहा

जीव ईश के देह को, अभेद कर बतलाय ।
नित्यानन्द विचारिये, तुरत भेद मिट जाय ॥

चौपाई

सर्व जीव मिल स्थूल शरीरा । ईश विराट कहे जन धीरा ॥
सर्व जीव मिल सूक्षम देहा । ईश्वर हिरण्यगर्भ लख लेहा ॥
सर्व जीवों के कारण देहा । ईश देह अव्याकृत केहा ॥
करिय विचार भेद नहिं रंचक । ईश जीव तनु अभेद बेशक ॥
सो तू तोय ताय नहि भेदा । बारि बारि इमि गाव ही वेदा ॥
मिट्टी घट रंचक नही भेदा । सोना भूषण एक अभेदा ॥
सूरज किरण दोय नहीं थाई । जल तरंग नहि दोय कहाई ॥
भेदभाव का करीये भंगा । नित्यानन्द फिर रहो निसंगा ॥

दोहा

हे भगवान मोको कहो, समान चेतन ब्रह्म ।
किमि व्यापक सबसे अधिक, किसी विधि होय सूक्षम ॥
अब शिष्य हम तोको कहत, सुनले चित धर कान ।
सूक्षम व्यापक अरु अधिक, चेतन ब्रह्म समान ॥
जो जो कारज होत है, सो स्थूल ही जान ।
अरु होवे परिच्छिन्न सो, यह निश्चय करी मान ॥
जो जो कारण होत है, सूक्षम व्यापक जान ।
बचनराम गुरु ने कहा, नित्यानन्द सत मान ॥
सबका कारण ब्रह्म है, व्यापक सूक्षम अधिक ।

सो अब तोय दिखात है, कहे वेदान्तादिक ॥
सागर जल सु कठिन फेन, और नमक बन जाय।
पृथ्वी लख अनुमान से, जल कारज कहलाय ॥
पृथ्वी से जल शुद्ध है, अरु सूक्षम है नीर।
पृथ्वी से दश गुण अधिक, जानत विरला धीर ॥
जल से शुद्ध अग्नि कहत, सूक्षम तेज पिछान।
जल से दश गुण अधिक है, गुरु बचन कहे मान ॥
पवन तेज से शुद्ध है, सूक्षम कहत विचार।
दश गुण अधिक तेज से, सतगुरु बचन पुकार ॥
वायु से शुद्ध नभ कहा, अरु सूक्षम नभ जान।
दश गुण अधिक पिछानिये, ये वेदान्त प्रमाण ॥
नभ सु अनंत गुण अधिक, कहत शास्त्र अज्ञान।
सोई अज्ञान ब्रह्म विषे, तनु में तिल सम जान ॥

चौपाई

तनु सम व्यापक ब्रह्म पिछानो, तिल सम अन्तःकरण को मानो।
अन्तकरण होय जहाँ भाई, भाषत तहाँ अज्ञान सदाई ॥

दोहा

एक देशी अज्ञान है, व्यापक ब्रह्म पहिचान।
सबहि कार्य अज्ञान जग, सो सब मिथ्या मान ॥
अस्ति भाँति प्रिय रूप तब, चेतन ब्रह्म समान।
नाम रूप कल्पित जगत, तो में मिथ्या मान ॥
धन्य धन्य गुरुदेव जी, कीना मोय निशंक।
नित्यानन्द इक बात की, और मिटा दो शंक ॥

दोहा

आप कहत गुरुदेव यू, तुझ आतम के माय ।
नहीं कोई कर्त्तव्य है, आप अकर्ता रहाय ।।
तब फिर कर्ता कोन है, आप मोय समझाय ।
नित्यानन्द निर्लेप लख, सब संषय मिट जाय ।।
सुनो शिष्य एक युक्ति से, तोय कहूँ समझाय ।
तुरत मिटे संषय सकल, नित्यानन्द हर्षाय ।।
एक बगीचा में गया, फल खाने को चोर ।
देख लिया माली उसे, करी पिटाई जोर ।।

चौपाई

देखे फल आँखों ने प्यारे । मन दिखाय हम जानन हारे ।।
चले पैर चलवाया मन ने । सभी धर्म यह जाने हमने ।।
तोड़े हाथ तुड़ाया मन ने । सब काहु को जाना हमने ।।
खाया मुँह खिलवाया मन ने । इन धर्मों को जाना हमने ।।

दोहा

जिव्हा स्वाद लेत फल, मन हि लिरावन हार ।
नित्यानन्द हम आतमा, सब को जानन हार ।।
पीठ पिटी कर ने पिटी, मन ही पिटावन हार ।
इन धर्मों से रहित हम, जाने जानन हार ।।
नेत्र तबहि रोने लगे, मन हि रुलावन हार ।
हम तो इनको जानता, यहि विचार उर धार ।।

चौपाई

मन ही दुखी होय दुख माना । हम दृष्टा तो यह सब जाना ।।
जो देखत व दिखावत नाही । जो दिखावे वो जानत नाही ।।

कैसा सुन्दर खेल पसारा। यह नाटक हम जानन हारा॥
हम तो खेल कभी नहि होते। ना हम जगते ना हम सोते॥
मन इन्द्रियन से काम करावे। खुद कर्ता पर से करवावे॥
इनसे रहित सदा हम जाने। और धर्म सब मन के माने॥
वाणी हमकु कह नहीं सकती। बुद्धि नहीं निश्चय कर थकती॥
हम अव्यक्त स्वयं निर्माना। हममें नहीं है ज्ञान अज्ञान॥

दोहा

हमें सिद्ध नहीं कर सके, वाणी मन यह कोय।
हमसे सब कुछ सिद्ध है, जो कुछ माना होय॥
नभ नीला मरु भूमि जल, रज्जू भूजङ्ग दिखाय।
सीप रजत नर ठूंठ यू, जग अज्ञानी लखाय॥
खांड खिलौना जल लहर, सुवर्ण भूषण होय।
माटी घट रुई वस्त्र, इमि ज्ञानी जग जोय॥
बाँझ पुत्र नभ में कुसुम, शशा सृङ्ग नहीं पाय।
रेत तेल नहीं नीर घृत, स्वरूपवान जग नाय॥
जल में पाहन नित रहे, जल प्रवेश नहीं होय।
श्रद्धा से नर हीन को, ज्ञान न होवे कोय॥
बाहिर भीतर रम रहा वस्त्र पोटली तोय।
वस्त्र नीर नहीं होत है, भक्त हरि नहीं होय॥
नमक डली जल में रहे, जल में रहे समाय।
लख गुरु मुख जिज्ञासु ब्रह्म, ब्रह्म रूप दोय जाय॥
भक्ती जल निस्काम शिला, साबुन ज्ञान लगाय।
नित्यानन्द निर्मल स्वयं, मल अज्ञान नसाय॥
पक्षी अंडा देय करी, बैठे सेवत तांय।

अंड फूट बच्चे भये, फिर बैठत है नांय ॥
कर्म उपास जब लग करे, मल विक्षेप हटाय ।
ज्ञान भये जो फिर करत, ज्ञानमंद पड़ जाय ॥
डबल एम.ए. का विषय, जो जन रहे पढ़ाय ।
प्राइमरी अरु मिडिल की, नित्यानंद रुचि नाय ॥
कर्म काण्ड है प्राइमरी, मिडिल भक्ती बतलाय ।
स्वयंज्ञान एम.ए. डबल, लख नित्यानंद छाय ॥
भीड़ सदा नर नार की, सब्जी मण्डी माय ।
नित्यानन्द हीरा बिके, बिरला जन तह जाय ॥
अष्टपुरी किसको कहे, मोय कहो गुरुदेव ।
नित्यानंद संषय मिटे, पावत सब ही भेव ॥

चौपाई

सुनो शिष्य तोको समझावू । अष्टपुरी का भेद बतावू ॥
पंच ज्ञान इन्द्रिय पंच प्राना । पंच कर्मेन्द्रिय अंतःकरण माना ॥
पाँचों तत्व काम ये षष्डम् । त्रिविध कर्म काम वासना अष्टम ॥
यहि अष्ट को कह अष्ट पुरीया । समझ शिष्य तुम उर में धरीया ॥

दोहा

शिष्य कहे हमने सुने, नव प्रकार के वाद ।
कहो सकल समझाय के, लख कर हो आजाद ॥
सुनो शिष्य तुम हित कहू, नव ही वाद समझाय ।
नित्यानंद सब शास्त्र मत, कहू अर्थ पद गाय ॥

॥ आरम्भवाद ॥ तर्ज राधेश्याम

पितामह आदि के बनवाये । पुराने गृह का नाश होय ॥
रहे ईंट आदि सामग्री से । फिर नवीन गृह आरम्भ सोय ॥

इहि कार्यरूप पृथ्वी आदिक। सब ही का नाश हो जावत है ॥
कारण परमाणु ज्यों के त्यों। नहीं नाश उन्हीं का होवत है ॥
तिन परमाणु से पंच तत्व। जग की रचना फिर होवत है ॥
कहे न्याय शास्त्र आरंभवाद। गुरु बचनराम समझावत है ॥

॥ परिणामवाद ॥

जिहि दूध बदल कर दधि होय, यू प्रकृति का परिणाम जगत।
नित्यानंद ये परिणामवाद, कहते हैं इस विधि सांख्य मत ॥

॥ विवृतवाद ॥

जिमि निर्विकार रज्जू विषे, विषमसत्ता अन्यथा सर्प होय।
सो रज्जू विवृत कल्पित कार्य, वेदान्त कहे दृष्टांत जोय ॥
निर्विकार ब्रह्म में विषम सत्ता, अन्यथा स्वरूप जगत होई।
सो ब्रह्म विवृत कल्पित कार्य, वेदान्त में विवृतवाद सोई ॥

॥ प्रतिबिम्बवाद ॥

चौपाई

अज्ञान में चेतन का जोई। प्रतिबिम्ब पड़ता है वोई ॥
वाच्य स्वरूप जीव का गाई। यू प्रतिबिम्बवाद बतलाई ॥
जिस चेतन का अज्ञान माई। प्रतिबिम्ब पड़ता है भाई ॥
बिम्बरूप चेतन जो भाई। ईश्वर वाच्य रूप बतलाई ॥

दोहा

यहि प्रतिबिम्बवाद है, कहा शिष्य समझाय।
अब अवच्छेदवाद का, भेद कहे हम गाय ॥

॥ अवच्छेदवाद ॥ तर्ज राधेश्याम

जो शुद्ध सत्त्वगुण सहित ही, माया से विशिष्ठ चेतन कहते।
ईश्वर का वाच्य स्वरूप सोई, अवच्छेदवाद मे यूं बकते ॥

जो मलिन सत्वगुण सहित ही, अंतःकरण का उपादान कारण।
अविद्या अंस उसमें विशिष्ठ चेतन, जीव वाच्य रूप यू बतलावण॥

दोहा

कहा वाद अवच्छेद को, तुम हित शिष हम गाय।
अब कहत आभासवाद, नित्यानंद समझाय॥

॥ आभासवाद ॥ चौपाई

शुद्ध सत्त्वगुण सहित ही माया। अधिष्ठान चेतन ही रहाया॥
चेतन आभास माया माई। त्रय मिल ईश वाच्य लख भाई॥
अंतःकरण उपादान कारण। मलीन सत्त्व अविद्या अस धारण॥
समान चेतन तां अधिष्ठाना। त्रय मिल जीव वाच्य लखाना॥

दोहा

कहा तोय समझाय के, शिष आभास हि वाद।
नित्यानन्द अब करत हूँ, दृष्टि सृष्टि हि वाद॥

॥ दृष्टि सृष्टिवाद ॥ तर्ज राधेश्याम

संसार स्वप्न सम मिथ्या है, सुषुपती में जग सब लय होई।
प्रपंच कछु प्रतीत न हो, नहीं द्वैत भाव भाषे कोई॥
वैसे ही अवस्था जागृत में, प्रपंच विश्व मिथ्या मानो।
सोई दृष्टि सृष्टिवाद कहे, अजातवाद भी यह मानो॥

॥ एक जीववाद ॥ चौपाई

एक जीववादी यू कहता। एक ही देह सजीव रहता॥
अन्य देह ऐसे तुम जानो। स्वप्न देह सम निर्जीव मानो॥

दोहा

जीव एक ही रहत है, नाना जीव न होय।
एक जीववादी कहे, नित्यानंद लख सोय॥

॥ नाना जीववाद ॥ तर्ज राधेश्याम

जैसे एक ही जाती यह, अनेक व्यक्तियों में रहती ।
वैसे अनेक ही जीवों में, अज्ञान अविद्या एक कहती ॥
जानो जिस अंतःकरण माय, ज्ञान की उत्पती होवत है ।
अंतःकरण निवृति हाने पर, प्रतिबिम्ब निवृति होवत है ॥

चौपाई

निज बिम्ब में प्रतिबिम्ब लय होई । अज्ञान तज उपाधि मुक्त होई ॥
अज्ञान संबंध बंध कहाई । तिनकी निवृति मोक्ष बताई ॥

दोहा

नव प्रकार के वाद को, कहा तोय समझाय ।
नित्यानंद लख कर सकल, संषय भ्रम विलाय ॥

चौपाई

हे प्रभू दश नयन है कैसा । सुन शिष दश नयन कहू ऐसा ॥
चर्म नयन दोय तीजी वाणी । चौथा श्रोत्र पंच मन जाणी ॥
षष्टम बुद्धि अरु सप्तम ज्ञाना । अष्टम नयन विराग कहाना ॥
विवेक अनुभव दश दृग माना । नित्यानन्द कहे शास्त्र प्रमाना ॥

दोहा

विधेय निषेध विशेषण, दोनों ही दश प्रकार ।
कहो आप समझाय के, मम संषय उर टार ॥
सत चित आनंद ब्रह्म एक, साक्षी स्वयं प्रकाश ।
उपदृष्टा दृष्टा कुटस्थ, विधेय विशेषण खास ॥

चौपाई

अव्यय अक्षर अखंड निराकार । अव्यक्त अनंत असंग निर्विकार ॥
नवम अजन्मा विशेषण जानो । दशम अद्वैत विशेषण मानो ॥

यही निषेध विशेषण धारो। नित्यानंद संषय भ्रम टारो॥
बीस विशेषण शिष्य यह जानो। दश विधेय निषेध दश मानो॥
विशेषणों से होवत ज्ञाना। नित्यानंद स्वयं थिर थाना॥
शिष्य इहि विधि करिये विचारा। मिटे भरम तब होय सुखारा॥

दोहा

इस तन में शुभ अशुभ कर्म, कौन करावन हार।
नित्यानन्द समझाय कहो, संषय भरम निवार॥
बुद्धि सात्विक होय जब, सत्संग में लग जाय।
मन इन्द्रिय से तब वही, शुभ कारज करवाय॥
बुद्धि कुसंग में जब लगे, तब रज तम बढ़ जाय।
मन इन्द्रियाँ संग तब वह, अशुभ कार्य करवाय॥

चौपाई

कर्म शुभाशुभ फल कुण भोगत। मन बुद्धि शुभाशुभ फल भोगत॥
भूख प्यास व्याकुल कुण होवत। व्याकुल भूख प्यास मन होवत॥
भूल याद तन में कुण करवत। भूल याद यह बुद्धि को होवत॥
कुण करता है तन में चिन्तन। चित्त ही करता तन में चिन्तन॥
कुण करता तन में अभिमाना। अहंकार करता अभिमाना॥
कुण तन में जागत सोवत है। मन अरु बुद्धि सोवत जागत है॥
ध्यान कौन करता है तन में। मन ही ध्यान करत है तन में॥
भिन्न भिन्न ज्ञान करत कुण तन में। बुद्धि ज्ञानेन्द्रि ज्ञान कर तन में॥
जग व्यवहार बात कुण सोचत। जग व्यवहार बात मन सोचत॥
मैं ब्रह्म हूँ यह अभेद ज्ञाना। यह निश्चय किसने है माना॥
शुद्ध बुद्धि को यह हो ज्ञाना। हम आतम साक्षी निर्वाना॥
मन को बस में कुण करतत है। शुद्ध मति मन को बस करतत है॥

दोहा

योगी भोगी होय कुण, इस स्थूल तन माय ।
नित्यानन्द समझाय कहो, संषय भ्रम मिट जाय ॥ १ ॥
तद्रूप हो मन आत्म संग, तब योगी कहलाय ।
होय विषयरति इन्द्रि मन, तब मन भोगी बतलाय ॥ २ ॥

चौपाई

यह तन नाशी मैं अविनाशी । मैं तो सर्व जगह का वासी ॥
यह तन असत कहावे कैसे । क्षण क्षण नाश होय यह ऐसे ॥
यह तन जड़ कैसे है माना । अपने को पर को नहि जाना ॥
यह देह दुःखरूप है कैसे । घिरी अनेक व्याधियाँ ऐसे ॥
आप आतमा सत किम होई । तीन काल में एक रस सोई ॥
आप आतमा चेतन कैसे । सबको जानत मैं यह ऐसे ॥
आप ही कैसे आनंदरूपा । सबसे परम प्रिय है स्वरूपा ॥
जनम मरण तोय होय न कैसे । निराकार मैं नहीं तन ऐसे ॥
जनम मरण इस तन का होई । हम निरलेप सदा निरमोई ॥
भूख प्यास तब लगे न कैसे । निराकार मैं प्राण न ऐसे ॥
दुःख सुख धर्म तोय नहीं कैसे । निराकार मैं नहि मन ऐसे ॥
ज्ञान अज्ञान तोय ना कैसे । निराकार में बुद्धि न ऐसे ॥
तुम क्यूँ नहीं कर्त्ता भोक्तापण । निराकार मैं नहीं अंतःकरण ॥
लोक परलोक गमन किमि नाई । निराकार में लिंग तनु नाई ॥
हो मुर्दा तनु तुम कित जाई । आय जाय नहिं व्यापक सदाई ॥
मैं हूँ निराकार निर्माना । अचल एक रस अरूप निर्वाना ॥
मैं हूँ स्वयं सच्चिदानंदा । माया मोह नहीं कछु फन्दा ॥
मैं ही अस्ति भाति प्रिय जाना । हूँ व्यापक सर्वत्र समाना ॥

नाम रूप माया का जाना । यह आरोपा कल्पा माना ॥
हम तो कभी न कल्पे जाते । कभी कहने में हम ना आते ॥

दोहा

सब कुछ हमसे सिद्ध है, सर्वा सर्व महान ।
जैसे जल में सभी कुछ, फेन तरंग बुदान ॥
हमसे सब कुछ बनत है, हम मैं मिटे जहान ।
हम तो ज्यों के त्यों रहे, नभ सम एक समान ॥

चौपाई

सब प्रपंच स्वप्न सम जानो । सत्य नहीं सब मिथ्या मानो ॥
यह सब बंध्यापुत्र समाना । अनहोता कल्पा है माना ॥
यह जग कभी हुआ ना होई । ना है नहीं होयगा सोई ॥
गुडियों का सा है यह खेला । आरोपा सब जगत झमेला ॥
न कहीं जग है न कहीं माया । कोई कछुहि है नहीं भाया ॥
सब संकल्प विकल्प मिटाया । हम ही हम है और न भाया ॥

दोहा

असत्य भाव हटाने हित, सत्य भाव बतलाय ।
जड़ का भाव हटाने हित, चेतन भाव लखाय ॥

तर्ज राधेश्याम

दुःख का भाव हटाने हित, ये आनंद भाव जनाया है ।
अरु भाव अज्ञान हटाने हित, यह ज्ञान भाव बतलाया है ॥
माना भाव हटाने को, निर्माना भाव लखाया है ।
साकार भाव हटाने हेतु, यह निराकार समझाया है ॥
नाशी भाव हटाने हित, ये अविनाशी कथ गाया है ।
और भेद भाव हटाने हित, ये अभेद भाव जनाया है ॥

विकार भाव हटाने हित, निर्विकार समझाया है ।
पर परकाश हटाने हित, यह स्वयं प्रकाश बताया है ।।
सविकल्प भाव हटावन हित, निर्विकल्प भाव लखाया है ।
परिच्छिन्न भाव हटवाने हित, यह व्यापक भाव बताया है ।।
माया का भाव हटाने हित, यह ब्रह्म भाव दरशाया है ।
अपेक्षा भाव हटवाने हित, निर्पेक्ष भाव कथ गाया है ।।

चौपाई

वैसे ये कछु है ही नाही । पता लगाया नहीं कछु पाही ।।
न कोई नाम रूप गम होई । नहीं व्यापक परिच्छिन्न हि कोई ।।
न कहीं नाम जाति यह कोई । तन इन्द्रियाँ मन बुद्धि न होई ।।
पल घड़ी रैन दिन नहीं बारा । नहिं यह मास साल युग च्यारा ।।
न कही काया न कही माया । न कही ज्ञान अज्ञान रहाया ।।
न कही जीव ईश संसारा । न कही निराकार साकारा ।।
न कही पूरण ब्रह्म समाना । न कही आतम जाना माना ।।
न कही विधि निषेध है कोई । नही निर्पेक्ष अपेक्षा होई ।।
न कही शून्य अशून्य है कोई । न आस्तिक नास्तिक है सोई ।।
न कही जनम मरण है कोई । न कही सुख दुःख है सोई ।।
न कही भूख प्यास है कोई । न कोई पुन्य पाप है सोई ।
न कही आना न कहीं जाना । न कहीं भेद खेद कुछ माना ।
न संकल्प विकल्प है कोई । समाधान नहि शंका होई ।
न कोई ज्ञानी न अज्ञानी । न कोई ध्यानी न विज्ञानी ।।
कभी कोई कुछ हुआ नहीं है । न कल्पा कुछ कोई कही है ।।
यह रहस्य गुरुदेव बताया । समझ शिष्य तुम हित हम गाया ।।

दोहा

संत शास्त्र सब वेद का, कहा सार समझाय ।
यहि भारतीय संस्कृति, दिनी तुझको बताय ॥
धन्य धन्य गुरुदेवजी, कोटि कोटि परणाम ।
संषय भ्रम अज्ञान मिटा, अब पायो विसराम ॥
कल्पा माना भार सब, दीना आप उतार ।
नित्यानन्द निरभय भया, छुटा सब ही विकार ॥
श्री सतगुरु भगवान जी, कभी न लादे भार ।
माना भार उतार कर, हमें किया निर्भार ॥

चौपाई

श्री सतगुरु भगवान की दाया । माना सारा भार हटाया ॥
श्री सतगुरु भगवान लखाते । सब बंधन से आप छुड़ाते ॥
श्री सतगुरु भगवान की बानी । तेरे शिवाय और नहि आनी ॥
श्री सतगुरु भगवान महाना । हमें लखाया है निर्माना ॥
श्री सतगुरु भगवान जनाते । आप आप सब आप लखाते ॥
श्री सतगुरु भगवान सम्हारा । कल्पा माना सभी निवारा ॥
श्री सतगुरु भगवान दयालु । सब छुड़वाया मोह का जालु ॥
श्री सतगुरु भगवान का अनुभव । सब कुछ न कुछ कोई है भव ॥
श्री सतगुरु भगवान का ज्ञाना । सर्वशक्ती तू मान महाना ॥
श्री सतगुरु भगवान समाना । आप सु भिन्न कोई नहि आना ॥
श्री सतगुरु भगवान विचारी । अनहोती लीला है सारी ॥
श्री सतगुरु भगवान आधारा । सब ही सिद्ध करे संसारा ॥
श्री सतगुरु भगवान का कहना । तू तो स्वयं आप ही अपना ॥
श्री सतगुरु भगवान सुधारी । माना मोह मु लिया उबारी ॥

दोहा

श्री सतगुरु भगवानजी, क्या का क्या कर दीन।
कल्पी मानी कही की, सभी मिटाई सीन ।।

चौपाई

सतगुरु का यह है उपकारा। हमको कीना पूर्ण सुखारा ।।
मुन्नी मुन्ना का यह खेला। कल्पित मिथ्या जगत झमेला ।।
करी कल्पना मुन्नी जानो। माना सब कुछ मुन्ना मानो ।।
इन दोनों का खेल पसारा। अनहोता जग नाटक सारा ।।
करी कल्पना बना पसारा। मिटी कल्पना मिटा पसारा ।।
आप हि करी कल्पना सारी। आप ही सब कुछ माना धारी ।।
आप न कल्पो आप न मानो। कभी कोई कछु है नहीं आनो ।।
शक्कर कभी न बनी खिलौना। तैसे आप शिवाय न आना ।।
हम ही हम सब हम ही हम है। तुम की कोई यहा न गम है ।।
न व्यवहार न है परमारथ। न उपकार नहीं कुछ स्वारथ ।।
नहि आरोप अपवाद कोई। ना कुछ पाया ना कुछ खोई ।।
कारण कारज नहि है उपाधि। जीव ईश नही परे समाधि ।।
राग विराग नहीं बंध मुक्ता। रूप अरूप नहीं अयुक्त युक्ता ।।
लय विक्षेप निकट नहीं दूरा। दिवस रैन चन्द नहीं सूरा ।।
धर्म न अर्थ काम नहीं मोक्षा। पाप न पुन्य अपरोक्ष परोक्षा ।।
कर्ता कर्म क्रिया नहीं कोई। दृष्टा दर्शन दृष्य नहि होई ।।
शून्य अशून्य अथिर न थीरा। तर्क अतर्क अधीर न धीरा ।।
चिंत्य अचिंत्य न अडोल न डोला। माप अमाप अतोल न तोला ।।
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय नहीं गम्य। ध्याता ध्यान ध्येय नहीं रम्य ।।
व्यक्त अव्यक्त अबुद्ध नहीं बुद्धा। रक्त विरक्त अशुद्ध नहीं शुद्धा ।।

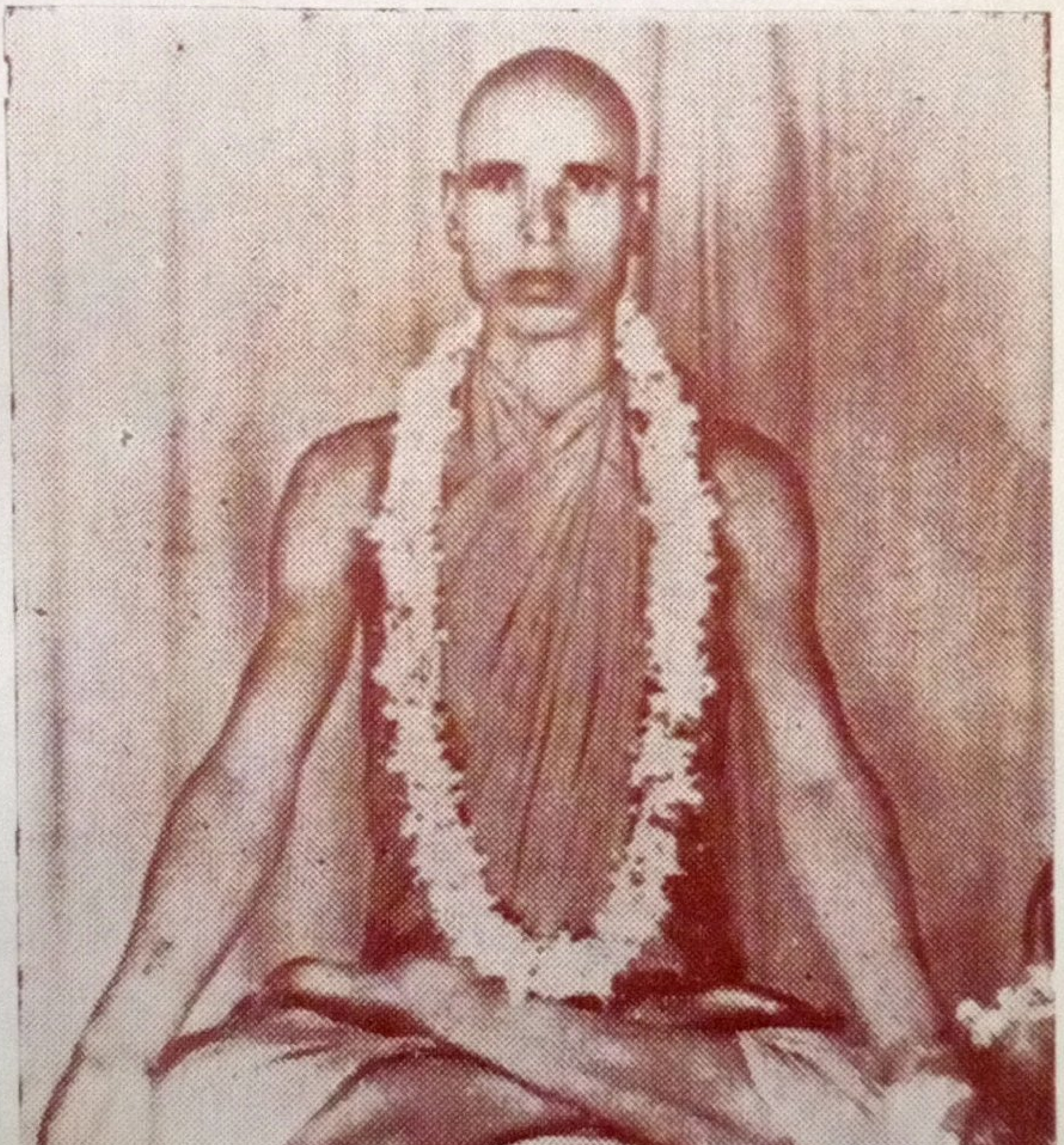
संध्या सूत्र न व्रत उपवासा । स्वर्ग भोग नर्कवास न त्रासा ॥
वाच्यरु लक्ष्य लगे ना कोई । केवल स्वरूप स्वयं निज सोई ॥
नाना एक न कहना सुनना । माया ब्रह्म न लखना बकना ॥
जो अवशेष रहा मम रूपा । बहुनाम् किम् उक्त च अनुपा ॥

दोहा

शिष्य की वाणी यह सुनी, हर्षित हो गुरुदेव ।
कहे धन्य शिष्य धन्य हो, पायो केवल भेव ॥
जो इच्छा होय सोई कर, नहीं कुछ बाधा दोष
नित्यानन्द निर्दोष तू, पाई जीवन मोक्ष ॥
मैं कयो तुम उर धर्यो, सब संषय भ्रम खोय ।
नित्यानन्द निर्भय भया, सहज समाधी सोय ॥
धन्य धन्य गुरुदेवजी, महिमा अगम अपार ।
माना मिथ्या आप में, सभी उतारा भार ॥
बार बार शिर नमन कर, गुरु की आज्ञा पाय ।
शिष्य चला हर्षाय कर, जीवन मुक्ती पाय ॥
सम्वत् दो सहस्त्र छतीस, शुक्ल पक्ष आसोज ।
विजयदशमी सोमवार, लिखा ग्रंथ उस रोज ॥

महात्मा श्री बचनरामजी महाराज के

मुख्य अधिकारी शिष्य



श्री १०८ श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज

मु. पो. दिवराला, वाया श्री माधोपुर

जिला सीकर (राज.) पिन ३३२७०४

॥ ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः ॥

श्री गुरु बचनामृत प्रकाश
उत्तरार्ध

(१)

भुजङ्ग प्रयात छन्द

निराकार निर्वाण निर्द्वन्द सत्यम् ।
निरंजन नित्यं सदा निर्विकल्पम् ॥
निजानन्द निश्चयल रहे निर्विकारम् ।
गुरु बचनरामं नमामि सदाऽहम् ॥ १ ॥
कुटस्थं अभेदं अनूपं अरुपम् ।
अद्वैतं अदेहं अछेहं अच्छेदम् ॥
अनंतं असंगं अलक्ष्यं अद्रश्यम ।
गुरु बचनरामं नमामि सदाऽहम् ॥ २ ॥
अव्ययं अपक्षं अशक्तं अव्यक्तम् ।
अगाधं अपारं अमानं अजानम् ॥
अकर्ता अभोक्ता नहीं बंध मुक्तम् ।
गुरु बचनरामं नमामि सदाऽहम् ॥ ३ ॥
नहीं वर्ण आश्रम नहीं नाम रूपम् ।
नहीं देह त्रियं नहि इन्द्रि प्राणम् ॥
तीनों अवस्था का साक्षी स्वरूपम् ।
गुरु बचनरामं नमामि सदाऽहम् ॥ ४ ॥
नहीं जन्म मृत्यु नहीं काल जालम् ।
नहीं ताप तीनों वो त्रिगुणातीतम् ॥

ज्यूं नभ व्यापक रहे आरपारम् ।
गुरु बचनरामं नमामि सदाऽहम् ।। ५ ।।
दुःखी जीव देखे बहे भव धारम् ।
परमधाम छोड़ धराया साकारम् ।।
किया योग ध्यानं दिया ब्रह्मज्ञानम् ।
गुरु बचनरामं नमामि सदाऽहम् ।। ६ ।।
आतम लखाया भगा द्वैत भरमम् ।
मिटा भय यम का भया अब निशंकम् ।।
शुद्धोऽहम् बुद्धोऽहम् मैं द्रष्टा शिवोऽहम् ।
गुरु बचनरामं नमामि सदाऽहम् ।। ७ ।।
पढ़े प्रातः अष्टक नित्यानंद नित्यम् ।
उर में हो ज्ञानं नसे अन्धकारम् ।।
मिटे गर्भवासं कटे सर्व शालम् ।
गुरु बचनरामं नमामि सदाऽहम् ।। ८ ।।

(२)

भुजङ्ग प्रयात छन्द

निरंजन निराकार निर्लेप नित्यम् ।
निराधार निर्गुण निराकृत सत्यम् ।।
निस्फन्द निरालम्ब शिव निर्विकल्पम् ।
नित्यानंद स्वरूपं सदा केवलोऽहम् ।। १ ।।
निरामय निर्द्वन्द निश्चयल निर्मानम् ।
निर्विकार निर्मल अटल निर्विभागम् ।।
निर्बाण निर्बाध निर्बोध निर्बध्यम् ।
नित्यानंद स्वरूपं सदा केवलोऽहम् ।। २ ।।

अनंतं अडोलं अबोलं अजानम् ।
अतुल्यं अमुल्यं अगाधं अपारम् ॥
अक्षय अजाई अगोचर अचलम् ।
नित्यानंद स्वरूपं सदा केवलोऽहम् ॥ ३ ॥
अगम्यं अजापं अमापं अतापम् ।
अव्ययं अव्यक्तं अशक्तं अयुक्तम् ॥
अदृश्यं अनिष्टं अभिष्टं अधिष्टम् ।
नित्यानंद स्वरूपं सदा केवलोऽहम् ॥ ४ ॥
हस्व न दीर्घ न बन्ध न मुक्तम् ।
शीत न ताप न मौनं न वक्तम् ॥
नर नार बाल न तरुणं न जीर्णम् ।
नित्यानंद स्वरूपं सदा केवलोऽहम् ॥ ५ ॥
वाणी न खाणी न कालं न जालम् ।
त्रय देह मन बुद्धि इन्द्रि न प्राणम् ॥
जागृत स्वप्नं सुषोपती पारम् ।
नित्यानंद स्वरूपं सदा केवलोऽहम् ॥ ६ ॥
प्रणव न पंच कलेश न षट् विकारम् ।
न पंच भ्रान्ति पंच कोश अतीतम् ॥
न वाच्य लक्ष्यार्थ न जीव ईशम् ।
नित्यानंद स्वरूपं सदा केवलोऽहम् ॥ ७ ॥
जहति अजहति नहीं भाग त्यागम् ।
देश काल वस्तु परिच्छेद रहितम् ॥
सजाति विजाति नही स्वगत भेदम् ।
नित्यानंद स्वरूपं सदा केवलोऽहम् ॥ ८ ॥

अध्यारोप अपवाद नहीं भूमि सप्तम् ।
न षट् उर्मि अर्ध उर्ध आद न अन्तम् ॥
उत्पति स्थिति नहीं लय भावम् ।
नित्यानंद स्वरूपं सदा केवलोऽहम् ॥ ९ ॥
पर ब्रह्म परमात्मा परिपूर्णम् ।
चिदाकाश चिन्मय व्यापक कुटस्थम् ॥
अवशेष साक्षी सदा शान्त रूपम् ।
नित्यानंद स्वरूपं सदा केवलोऽहम् ॥ १० ॥

(३)

हरि गीत छन्द

अक्षय अणगड़ अजब अविचल, निर्विकार निरंजनम् ।
परिपूर्ण परमानंद पर ब्रह्म, शुद्ध चेतन केवलम् ॥
अटल निर्विभाग निश्चयल, निर्विकल्प निर्मलम् ।
निर्गुण निर्द्वन्द निर्विचारम् भूमानंद स्वरूपऽहम् ॥ १ ॥
निराकार अदृश्य अव्यक्त निराधार निरंतरम् ।
निर्लेप निर्बध नित्य बुध शिव, सत्य सर्व व्यापकम् ॥
स्वयंम् प्रकाश स्वरूप चिद्धन, निर्विशेष निष्क्रियम् ।
आदि अंत मध्य शून्यम्, भूमानंद स्वरूपऽहम् ॥ २ ॥
निष्कलं निर्बोध साक्षी, अमर अद्वय अव्ययम् ।
मन वाणी रहित पर ब्रह्म, अप्रमाणं अगोचरम् ॥
प्रशान्त अमृत सदा उदितं, अभय अज नारायणम् ।
यो वै भूमा तत्सुखं स्वः भूमानन्द स्वरूपऽहम् ॥ ३ ॥
सर्व जग अधिष्ठान अनिह, अचल आत्मा अच्युतम् ।
पिण्ड ब्रह्मण्ड न समष्टि व्यष्टि, दृष्टा दृश्य न दर्शनम् ॥

पंच तत्व न प्राण इन्द्रिय अंत:करण न देहत्रयम् ।
जाति पाति न वर्ण आश्रम, भूमानन्द स्वरूपऽहम् ॥ ४ ॥
वाणी खाणी न त्रय अवस्था, सृष्टा सृष्टि न जीव ईशम् ।
पाप पुन्य न सुख दु:ख न, विधि निषेधं परिहरम् ॥
धर्म अधर्म काल कर्म न, नर्कवास न स्वर्गपदम् ।
निकट दूर न लय विक्षेपं, भूमानन्द स्वरूपऽहम् ॥ ५ ॥
राग वैराग न बंध मुक्त न साध्य साधक साधनम् ।
वेद शास्त्र न शब्द जालं, सन्ध्या सूत्र न मन्तरम् ॥
होम जप न स्वामी सेवक, तहाँ कारज कारणम् ।
विद्या अविद्या उपाधि रहितं, भूमानन्द स्वरूपऽहम् ॥ ६ ॥
ज्ञाता ज्ञान न ज्ञेय, श्रवण न, मनन नहीं निधिध्यासनम् ।
ध्येय ध्याता ध्यान नहीं, त्रिगुणातीत स्वरूप मम् ॥
दृष्टि मुष्टि न इष्ट अनिष्टं, नाम रूपं नश्वरम् ।
अतुल अनुपं अगम अरूपी, भूमानन्द स्वरूपऽहम् ॥ ७ ॥
सच्चिदानंद अभेद अविगत, अस्ति भांति प्रिय सुखम् ।
निजानंद अखण्डानंदम्, सर्वानंद निरक्षरम् ॥
स्वरूपानंदं मुक्तानन्दं, ब्रह्मानन्दं सर्वग्मम् ।
नित्यानन्द अनुभव स्वरूपी, भूमानन्द स्वरूपऽहम् ॥ ८ ।

गजल

चिदानन्द रूपं शिवोहहम् शिवोहहम् ॥ टेर ॥
मैं मन बुद्धि चित वो अहंकार नहीं हूँ ।
नहीं ज्ञान इन्द्रि कर्मेन्द्रि नहीं हूँ ॥
नभ वायु अग्नि जल भूमि नहीं हूँ ।
चिदानन्द रूपं शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ १ ॥

नहिं प्राण आदि न उप प्राण पंच ।
नहीं सप्त धातु नहीं कोश पंच ॥
मुझमें नहीं लेश भ्रान्ति है पंच ।
चिदानन्द रूपं शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ २ ॥
नहीं देह तीनों वर्णाश्रम से न्यारा ।
नहीं नारी पुरुष नपुंषक आकारा ॥
वृद्ध बाल तरुण नहीं षट् विकारा ।
चिदानन्द रूपं शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ ३ ॥
नहीं लोभ मोह नहीं द्वेष रागा ।
नहीं धर्म अर्थ काम मोक्षादि लागा ॥
नहीं मोमे भाव आभावादि दागा ।
चिदानन्द रूपं शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ ४ ॥
नहीं पाप पुन्यादि दुख सुख मुझमें ।
वेदादि यज्ञ मंत्र तीर्थ न मुझमें ॥
नही भोजनं भोग्य भोग्ता न मुझमें ।
चिदानन्द रूपं शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ ५ ॥
न मृत्यु शंका जन्म जाति झमेला ।
पिता मात बंधु न मित्र रहेला ॥
मैं सबसे निराला नहीं गुरु चेला ।
चिदानन्द रूपं शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ ६ ॥
मैं हूँ सदा निर्विकल्प निराकार ।
नहीं मोमे बंध मोक्ष मैं हूँ निर्विकार ॥
अकर्ता अभोक्ता अलिप्त निराधार ।
चिदानन्द रूपं शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ ७ ॥

सभी ठौर व्यापक सदा शुद्ध हूँ मैं ।
अजर हूँ अमर हूँ अखंडित हूँ मैं ॥
नित नित्यानन्द निरंजन हूँ मैं ।
चिदानन्द रूपं शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥ ८ ॥

दोहा

नमस्कार गुरुदेव को, धर चरणों में शीश ।
ज्ञान ध्यान बुद्धि विमल, करहुँ कृपा बख्शीश ॥
प्रथम ध्यान गुरु का करे, मिटे ताप त्रिय क्लेश ।
विमल मति अध नष्ट होय, हिरदे बसत हमेश ॥
बचनराम सतगुरु सदा, मम उर करहु निवास ।
संषय भ्रम अध नष्ट होय, करो ज्ञान प्रकाश ॥
बचनराम गुरुदेव को, पूर्ण ब्रह्म करि जान ।
मुरख नर मानुष कहे, नहि उन्हें पहिचान ॥
बब्वा सबमें बोलता, च चेतन पहिचान ।
न नाम राम सबमें बसे, सो बचनराम कर जान ॥
ब्रह्मा विष्णू महेश गुरु, पूर्ण ब्रह्म जगदीश ।
बचनराम सोई स्वरूप है, नित्यानन्द के ईश ॥
मंगलमय गुरु मूर्ति ध्यान, गुरु पद पूजन जान ।
मंगलमय गुरु मन्त्र है, कृपा मुक्ति पहिचान ॥
धर्म अनातम मानकर, स्वयं रूप बिसराय ।
चौरासी लख योनि में, भ्रमत फिरा दुःख पाय ॥
कृपा भई गुरुदेव की, सकल ज्ञान समझाय ।
संषय भ्रम अज्ञान मिटा, नित्यानन्द पद पाय ॥
गुरु ज्ञान उर में धरा, दृढ़ निश्चय पहिचान ।

मैं तन नहीं मेरा न तन, पंच भूत तन जान ॥
साक्षी सच्चिदानन्द मैं, जनम मरण तन जान ।
सुख दुःख मन का धर्म है, भूख प्यास धर्म प्राण ॥
ज्ञान अज्ञान मति के धर्म, मुझ आतम में नाय ।
कर्ता भोक्ता अंतःकरण, लिंग तनु आवत जाय ॥
सच्चिदानंद आतम अचल, निर्मल निर्विकार ।
नित्यानन्द अक्षय अमर, लगे न मोय विकार ॥
पावक से जलता नहीं, पवन सुखाये नाय ।
शस्त्रों में कटता नहीं, गले न जल के माय ॥
हर्ष शोक व्यापे नही, नहीं सुख दुःख मुझ माय ।
निर्विकल्प निर्लेप हम, रंग रूप कछु नाय ॥
मन वाणी की गम नाही, अगम अखण्ड अनूप ।
निराकार अणधड़ अलख, हम नित्यानंद रूप ॥
धन्य धन्य गुरुदेवजी, महिमा अगम अपार ।
कल्पा माना भार सब, दीना आप उतार ॥
सतगुरु के उपकार को, भूलू नहीं लिगार ।
नित्यानन्द निर्भय हुआ, छुटा सभी विकार ॥
बचनाश्रम स्थान ये, अस्पताल सम जान ।
सूक्षम तन के रोग की, मिले दवा लो आन ॥
संत वैद्य देवत दवा, आतम ज्ञान पिलाय ।
जनम मरण भव रोग को, देवत तुरत मिटाय ॥
योनि परिवर्तन करे, पाप पुन्य अनुसार ।
आवत जावत लिंग तनु, भोगत कष्ट अपार ॥
रोगी को दे औषधी, करे रोग निर्मूल ।
नित्यानन्द निज स्वरूप लख, मिटत ताप त्रिय शूल ॥

ब्रह्मवेता महापुरुष की, महिमा कही न जाय ।
नित्यानन्द श्रुति में कहा, पद कथ कर कहूँ गाय ॥
भोजन पुरसत सती नार, पावत संत सूजान ।
धन्य ग्रहस्थ पावन भवन, कहते वेद पुरान ॥
ब्रह्मवेता भोजन करत, सो घर धन्य कहाय ।
सकल विश्व की तृप्ती करे, सो फल श्रुति बखान ॥
भोजन करते ब्रह्मवित, सो घर पावन जान ।
कोटि विप्र भोजन करे, सो फल श्रुति बखान ॥
भोजन कर ब्रह्मवित को, देत वस्तु जो कोय ।
नित्यानन्द फल कोटि गुण अधिक कहे श्रुति होय ॥

(समाप्त)

॥ ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः ॥

भजन प्रारम्भ

(१)

तर्ज श्याम कल्याण

प्रणाम गणपतीजी को बारम्बार ॥ टेर ॥

जरणी न जायो उदर न आयो, शंकर गवरी कुमार ॥ १ ॥
प्रकृति गुण गण ईश गजानंद, कहे संत वेद पुकार ॥ २ ॥
जो जन प्रथम सुमिरे तुमको, तिनके सारो सब कार ॥ ३ ॥
विध्न निवारण मंगल कारण, रिद्ध सिद्ध के दातार ॥ ४ ॥
लय विक्षेप कषाय रसास्वाद, हरो विघ्न मम च्यार ॥ ५ ॥
नित्यानन्द कहे यहि वर दो प्रभु, नित रहे ब्रह्म विचार ॥ ६ ॥

(२)

तर्ज श्याम कल्याण

प्रणाम गुरुदेवजी को बारम्बार ॥ टेर ॥

ब्रह्मानन्दं परम सुखदम्, केवल ब्रह्म अपार ॥ १ ॥
द्वन्दातीतं गगन सदृशं, ब्रह्मज्ञान भण्डार ॥ २ ॥
तत्त्वमस्यादि लक्ष्य लखन्दं, साक्षी सर्वाधार ॥ ३ ॥
एकं नित्यं विमलं अचलं, निस्कामी निर्विकार ॥ ४ ॥
भावातीतं त्रिगुण रहितं, निजानन्द तत्सार ॥ ५ ॥
नित्यानन्दं सदा नमामि, नित ही ~~तुम~~ चरणार ॥ ६ ॥
तव

(३)

तर्ज श्याम कल्याण

प्रणाम जगदीश्वर तोय, बारम्बार ॥ टेर ॥
निराकार निर्मल निर्माया, नित निर्गुण निर्विकार ॥ १ ॥
पिण्ड ब्रह्मण्ड के बाहिर भीतर, व्यापक सर्वाधार ॥ २ ॥
जगत उपावन पालन कर्ता, तुमहीं करत संहार ॥ ३ ॥
असुर संहारन भक्त उबारन, घर कर रूप साकार ॥ ४ ॥
अज्ञानी तेरा भेद न जाने, ज्ञानी करत दीदार ॥ ५ ॥
नित्यानन्द सहाय करो प्रभू, होय ज्ञान उजियार ॥ ६ ॥

(४)

तर्ज श्याम कल्याण

आज मोरे सतगुरु आये मिजमान ॥ टेर ॥
गज मोतीयन को चौक पूरावू, हिगलू रो ढोल्यो ढलान ॥ १ ॥
चित का चन्दन हित का हार, उमंग पुष्प बरसान ॥ २ ॥
तनरो दिवलो मन री बाती, ज्योति जगाई ज्ञान ॥ ३ ॥
ताल मृदंग बंशरी बाजे, सखीया मंगल गान ॥ ४ ॥
भाव रो भोजन नेम की झारी, प्रेम रो पवन ढुलान ॥ ५ ॥
शीश नारीयल करो गुरु अरपण, तन मन धन कुरबान ॥ ६ ॥
नित्यानन्द निज स्वरूप लखाया, मिट गया भरम अज्ञान ॥ ७ ॥

(५)

तर्ज श्याम कल्याण

गुरु ने मोय ज्ञान देय किया है निसंग ॥ टेर ॥
सिंह रूप अपनों विसरायो, करके भेड़ का संग ॥ १ ॥
शुद्ध सच्चिदानंद भूल कर, लगा अनातम रंग ॥ २ ॥

जग की मान जीव बन बैठा, पाय दुःख हुआ तंग ॥ ३ ॥
त्रय अवस्था देह त्रय का दृष्टा, निर्विकार तूं असंग ॥ ४ ॥
जीव ईश नित्यानंद एक, किया भेद सब भंग ॥ ५ ॥

(६)

राग ध्वनी इमन माझ ताल धीमा

श्री सतगुरु दीन दयाल प्रभू, तुमको प्रणाम हमारा है ।
तुमरी कृपा बिना होवे नहीं, भव बंधन से छुटकारा है ॥ टेर ॥
मैं लख चौरासी में भटक फिरा, नहीं पाया दुःख का पारा है ।
कभी सुर असुर नर पशु पक्षी, किया जैसा ही तन धारा है ॥ १ ॥
जब पुन्य पूर्वला उदय हुआ, तब पाया दरश तुम्हारा है ।
नहीं दाता तुम सम है जग में, फिर ढूंढ लिया जग सारा है ॥ २ ॥
तुम ज्ञान मूर्ति गुरुदेव गुणी, परमानन्द पर उपकारा है ।
मम च्यार विघ्न त्रिय ताप हरो, रहे हरदम आतम विचारा है ॥ ३ ॥
शिर हाथ धरो महा वाक्य सुनाओ, करो जनम मरण से न्यारा है ।
नित्यानन्द सदा सतसंग मिले, यहि मांगत बारम्बारा है ॥ ४ ॥

(७)

राग ध्वनी इमन माझ ताल धीमा

मन सोच समझ के परख करना, यह लक्षण हो गुरु धारा रे ।
पलट करें अपने सम शिष्य को, संषय भस्म विडारा रे ॥ टेर ॥
ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय होय अनुभव, वाणी श्रुति अनुसारा रे ।
तत्त्वमस्यादि लक्ष्यार्थ लखा कर, भ्रान्ति अध्यास निवारा रे ॥ १ ॥
पंच कोश त्रय देह अवस्था, साक्षी लखावे न्यारा रे ।
अज्ञान द्वैत असार कल्पना, जिसमें नहीं लिगारा रे ॥ २ ॥
भव मिथ्या मृग तृषा समाना, द्वन्द रोग से न्यारा रे ।

जड़ चेतन में धारे समता, बुद्धि द्वेत निवारा रे ॥ ३ ॥
अस्ति भाति प्रिय पूर्ण सब में, निर्णय सार असारा रे ।
जल में तरंग सुवंण में भूषण, कार्य कारण नहीं न्यारा रे ॥ ४ ॥
पारस भँवर चन्दन सत्संगा, कर विवेक उर धारा रे ।
नित्यानन्द मिले गुरु ऐसे, छिन्न में करे भव पारा रे ॥ ५ ॥

(८)

राग ध्वनी इमन माझ ताल धीमा

धन्य भाग आज आनंद छाया, गुरुदेव हमारे आया है ।
निरखत नयन सफल भये उर मैं, वाणी सुन सुख पाया है ॥ टेर ॥
मैं मोह निन्द्रा में सोय रहा, गुरु शब्द की चोट लगाया है ।
लगते ही चोट मिटी मन की खोट, हुआ घायल सुध विसराया है ॥ १ ॥
कर्म उपासन ज्ञान बता कर, संषय भरम मिटाया है ।
पाँच तीन का सब ही ख्याला, यह जग जाल फैलाया है ॥ २ ॥
यह संसार मान लिया मन ने, मान मान दुःख पाया है ।
मन की मान्यता दूर करी तब, अपना पता लगाया है ॥ ३ ॥
देह इन्द्रिय मन मति का साक्षी, आतम स्वरूप लखाया है ।
सो नित्यानंद स्वरूप हमारा, अपना आप रहाया है ॥ ४ ॥

(९)

राम ध्वनी इमन माझ ताल धीमा

शंकराचार्य षट् श्लोक में गाई, परा पूजा करनी कैसे ।
श्रद्धा भाव सहित सब कर लो, खर्च न होय रूपीये पैसे ॥ टेर ॥
हे परमात्मन् तुम पूर्ण व्यापक, फिर मैं आवाहन करु कैसे ।
सर्वाधार स्वरूप तुम्हारा, आसन क्या दूँ आरु कैसे ॥ १ ॥
स्वयं स्वच्छ को पाद्य अर्ध्य क्या, शुद्ध को आचमन दूँ कैसे ।

निर्मल को स्नान है कैसा, विश्वोदर को वस्त्र कैसे ॥ २ ॥
निरालम्ब को यज्ञोपवित क्या, वासना रहित को पुष्प कैसे ।
निरालेप को गंध लेप क्या, स्वः रमणीय को भूषण कैसे ॥ ३ ॥
सदा तृप्त को नैवेद्य कैसे, विभू को ताम्बुल दूं कैसे ।
आप विराट अनंत स्वरूप हो, फिर मैं प्रदक्षिणा करूँ कैसे ॥ ४ ॥
हम तुम दोनों एक अभेदा, स्वः को नमन करूँ कैसे ।
नेति नेति कर वेद थके जहाँ, तब गुणगान करूँ कैसे ॥ ५ ॥
आप स्वयं प्रकाशी भगवन् तुमरी आरती करूँ कैसे ।
अंदर बाहिर सब में पूर्ण, जिसका विसर्जन हो कैसे ॥ ६ ॥
नित्यानंद यह परा पूजा नित, चित धर कर कोई कर ऐसे ।
ब्रह्मवेता तो सदा ही करते, अज्ञानी समझे कैसे ॥ ७ ॥

(१०)

बधावो (राग देश)

सैयाँ सतगुरु भले आया ये ।

दुवद्या दुर भई दरशन से, दीदार दिखाया ये ॥ टेर ॥
आज भांण भले उगीयो, सतगुरु घर आया ये ।
चरण पखालत सुधरी काया, परम सुख छाया ये ॥ १ ॥
अनंत जनम का सूता जीव ने, गुरु शब्द सुनाया ये ।
सुनता ही टेर उठा झट मोह की, नींद जगाया ये ॥ २ ॥
ज्ञान घटा ले गरजन लागे, अमृत बरसाया ये ।
उत्तम मध्यम कनिष्ट सबको, एक सार पिलाया ये ॥ ३ ॥
धन योवन बंधव सुत नारी, ये भरम भुलाया ये ।
खुल गई नींद मिटा स्वपना, त्यू ओ ज़ग दरशाया ये ॥ ४ ॥
ज्ञान सुनाया अज्ञान मिटाया, आतम दरशाया ये ।

बाहिर भीतर है एक सारा, वो अखंड अजाया ये ॥ ५ ॥
सतगुरु बचनरामजी स्वामी, मैं पूरण पाया है ।
नित्यानंद सतगुरु को बधावो, मगन होय गाया ये ॥ ६ ॥

(११)

राग देश बधावो

सैयाँ आज आनन्द मनासा ये, सतगुरु बचनरामजी स्वामी ने हर्ष बधासा ये ॥ टेर ॥
सोने रो सुरज उगो मारी सजनी मैं दरशन करसा ये ।
मन मोतियाँ रो चौक पूरा जाजम जुगत बीसासा ये ॥ १ ॥
आनन्द रा आसन सत रा सिंहासन पे गुराँ ने बिठासा ये ।
हिल मिल पाँच सखी सब चित सू चँवर ढुलासा ये ॥ २ ॥
चरण धोय चरणामृत लेकर शीश चढ़ासा ये ।
करणी री केसर ज्ञान सू घिसकर तीलक बनासा ये ॥ ३ ॥
हित का हार पहिनाय प्रेम का पुष्प बरसा साये ।
गमरी गुलाल उड़ाय सकल मिल मंगल गा साये ॥ ४ ॥
कर्म कपूर धूप धीरज सू जोत जलासा ये ।
आरती करो आनन्द सू जै जै धुन लगवासा ये ॥ ५ ॥
नौपत ढोल नगारा अनहद शंख पुरासा ये ।
ऐसा कार करो रीझे ज्यूं श्याम रींझासा ये ॥ ६ ॥
थिरता रो थाल छतीसां भोजन भोग लगासा ये ।
निरमल नीर जुगत री झारी भर मंगवासा ये ॥ ७ ॥
सांच सुपारी पान प्रेम सू पान करासा ये ।
शीश नारेल करां गुरु अरपण, विनय सुनासा ये ॥ ८ ॥
ले आसीस मीटा शंका यम फन्द छुड़ासा ये ।

नित्यानन्द चौरासी रा फेरा छिन में मिटासा ये ॥ ९ ॥

(१२)

आरती (राग चलत)

सैंयां आरती उतारो, सतगुरु ब्रह्म निरंजन की ॥ टेर ॥

सैंयां गगन मण्डल में श्याम बिराजे ।
लगनी लग रही, दरशन की ॥ १ ॥
सैंयां नेम चन्दन करणी केसर धिस करके ।
करों तैयारी पूजन की ॥ २ ॥
सैंयां हिरदा रो दिवलो, बनावसों ये ।
बाती कर डारो, मन की ॥ ३ ॥
सैंयां गुरुगम धीरत, पुरावसों ये ।
ज्योति जलावो, ज्ञान की ॥ ४ ॥
सैंयां अखण्ड उजाला, छावीयां ये ।
मिट गई, दुवधा, सब तन की ॥ ५ ॥
सैंयां नित्यानन्द, गुरु गम सुध पाई ।
सत चित आनंद, चेतन की ॥ ६ ॥

(१३)

राग पूर्व पद अनुसार

सैंयाँ आज रो आनंद, मारे मन भावना ॥ टेर ॥

सैंयां सोना रो सूरज, उगीयो ये ।
सतगुरु, आया पावना ॥ १ ॥
सैंयाँ पाँच पचीस मिल, करो बधावना ।
हिल मिल, मंगल गावना ॥ २ ॥
सैंयाँ चित चौक में, धारण ढोल्यो ढालसों ये ।

सम दम करो बिछावना ॥ ३ ॥
सैंयाँ भाव रा भोजनीया, ताजा करो तैयारीया ।
जरणा जल भर लावना ॥ ४ ॥
सैंयाँ प्रेम प्रीत रा, पंखा पवन ढुलावसों ये ।
गम री गुलाल उडावना ॥ ५ ॥
सैंयां ध्यान धूप धर, आरती उतारसों ये ।
श्रद्धा दीपक जोवना ॥ ६ ॥
सैंयां तन मन धन, भेट चढ़ावसो ये ।
रींझे ज्यूं रींझावना ॥ ७ ॥
सैंयां नित्यानंद, गुरु आतम ज्ञान देवे ये ।
जनम मरण, मिटावना ॥ ८ ॥

(१४)

राग पूर्व पद अनुसार ×सूतों

सैंयां सतगुरु देव, म्हारे मन भावीया ॥ टेर ॥
सैंयां अनंत जनम, ×मोह नींद ०सोवता । ०में
सुनाकर शब्द, जगावीया ॥ १ ॥
सैंयां जगत सत्य कर, जामे निशि दिन राच्या रेवता ।
स्वप्न सम झूठ लखावीया ॥ २ ॥
सैंया इन्द्रिय संग, हरामी मनड़ो बाहिर भगतो ।
ज्ञान सुन, अन्दर आवीया ॥ ३ ॥
सैंयां सोऽहम् मोती चुगाय के रे ।
बुग से हंस बनावीया ॥ ४ ॥
सैंयां अहं ममेति बंधन तोड़ के रे ।
पूर्ण ब्रह्म लखावीया ॥ ५ ॥

सैंयां बचनराम गुरुवेद संत की साक्षी देय के ।
भरमरा भूत भगावीया ॥ ६ ॥
सैंया द्वेत पड़दा टूटा मैं ही मैं सत भांषता ।
अब नित्यानंद छाबीया ॥ ७ ॥

(१५)

राग पूर्व पदानुसार

सर्व आनन्द देने वाले गुरु हैं ॥ टेर ॥
काम को हटावे गुरु, क्रोध को नशावें गुरु ।
शील वो संतोष को दिलाने वाले गुरु हैं ॥ १ ॥
राग को हटावे गुरु, द्वेषता छुड़ावे गुरु ।
एक रूप प्रेम में, लगाने वाले गुरु हैं ॥ २ ॥
बंध से छुड़ावे गुरु, मोक्ष को दिलावे गुरु ।
अनंत जन्म कर्मों को, नशाने वाले गुरु हैं ॥ ३ ॥
ध्यान में लगावे गुरु, ज्ञान को सुनावे गुरु ।
मोह नींद सोये को, जगाने वाले गुरु हैं ॥ ४ ॥
द्वैत को हटावे गुरु, पूर्ण ब्रह्म लखावे गुरु ।
जीव ईश भेद ग्रन्थि, तोड़न वालें गुरु हैं ॥ ५ ॥
बहिरंग वृत्ति तोड़े गुरु, अंतर वृत्ति जोड़े गुरु ।
ब्रह्माकार वृत्ति को, जगाने वाले गुरु हैं ॥ ६ ॥
भव दुख मिटावे गुरु, नित्यानंद लुटावे गुरु ।
रोते हुये प्राणी को, हँसाने वाले गुरु है ॥ ७ ॥

(१६)

राग पूर्व पदानुसार

मेरी काया नगरी में मतवाल छाई है ॥ टेर ॥
हिया को बनाय भाण्डो, विरह भट्टी उपर चाडो ।

धारणा विवेक ढक्कन, भाण्डा पे लगाई है ॥ १ ॥
निर्मल बुद्धि नीर डाल, गुरु गम गुड़ घाल ।
दया क्षमा सम दम श्रद्धा, छोड़ा तो भेलाई है ॥ २ ॥
पंच विषय झोका लगाय काम क्रोध लोभ जलाय ।
चतुर कलाल इहि विधि, भट्टी तो चेताई है ॥ ३ ॥
नाम चुल्लु भर छिड़काय, श्वासो श्वास नली चलाय ।
ज्ञानामृत निकाल, शान्ती मटकी भराई है ॥ ४ ॥
जुगती री जाजम लाय, सतसंग चौंक ढलाय ।
थिरता रो चुरबण प्यालो, अभ्यास भराई है ॥ ५ ॥
प्यालो पीयो आयो चक्कर, द्वैत के लगाई टक्कर ।
व्यापक सकल एक, ब्रह्म दरसाई है ॥ ६ ॥
बचनराम गुरु कलाल, प्यालो पाय कियो निहाल ।
नित्यानन्द दिवाना हुआ, खुद मस्ती छाई है ॥ ७ ॥

(१७)

राग पूर्व पदानुसार

भ्रमत फिरा मैं, अनंत जनम पाय ।
बहु दुःख पाय अब, चरणों में आवीया ॥ टेर ॥
मन्दिरों में जाय कर, मुर्ति को पूज कर ।
भैंरु देवी देव पित्र, बहु विधि सेवीया ॥ १ ॥
गंगा यमुना पुष्कर जाय, सकल तीरथ नहाय ।
तन का ही मैल धोया, सुख नहीं पावीया ॥ २ ॥
जप तप व्रत कर, तन को सुखाय कर ।
पोथी वो पुराण पढ़, भ्रम बहु छावीया ॥ ३ ॥
गुरुदेव शरण तोरी, नित्यानन्द विनती मोरी ।
भव में डुबत नाव, लाज तो रखावीया ॥ ४ ॥

(१८)

राग पूर्व पदानुसार

काहे दुखी होय तूं, भूल्यो फिरे बावरा ।
जरा तो विचार देख, तू ही सुख रूप है ॥ टेर ॥
स्वपना में नृप कोई, भ्रमत भिखारी होई ।
आँख के खुलत वो तों, भूप को ही भूप है ॥ १ ॥
स्वपना में जैसे कोई, कहे मैं तो ऊँट होई ।
जाग कर देखा वो तो, मानव स्वरूप है ॥ २ ॥
कपि घट बन्ध्यो जैसे, नलगी के सुवा तैसे ।
बकरों के संग सिंह, भूलो निज रूप है ॥ ३ ॥
देह इन्द्रिय संग पाकर, दुख सुख मान भ्रम कर ।
उलट विचार कर तूं निरालेप रूप है ॥ ४ ॥
तूं ही दृष्ट्रा देह त्रय हो, प्रकाशक अवस्था त्रय हो ।
अनंत अक्षय अज, नित्यानन्द स्वरूप है ॥ ५ ॥

(१९)

राम धमाल फागण

भजर करण ने मुरख मानुष तन मुश्किल से पायो रे ।
थारी मारी कर कर बातों जनम गमायो रे ।
भूलो राम ने, होरे भूलो राम ने ।
भूल्योड़ा भोंदू भोगे चौरासी, भूलो राम ने ॥ १ ॥
बालपणों हँस खेल गमायो, योवन काम सतायो रे ।
नारी के संग विषय भोग में जनम गमायो रे ।
बणीयो मतवालो । हांरे बणीयो मतवालो ।

दिन रात पलंग पर पड़ीयो रेतो रे।

बणीयो मतवालो ॥ २ ॥

माया में मोयोडो मूरख जोड़ जोड़ धन धरतो रे।

पच्छ पच्छ मरतो बैल जीयु तो नित को लड़तो रे।

कोड़ी कारणे, हाँ रे कोड़ी कारणे।

धन महल मालीया धरीया रेसी रे।

कोड़ी कारणे ॥ ३ ॥

डाड दांत हालन ने लाग्या, हाथ पाँव शिर धूजे रे।

नाक झरे सुणवारो घाटो, नैन न सूंजे रे।

आयो बुढ़ापो, हाँ रे आयो बुढ़ापो ।

सुत नार केवे कद मरसी डोकरीयो ॥

आयो बुढ़ापो ॥ ४ ॥

रुक गये कंट दशो दरवाजा, दे रहा जम शिर घ्यारी रे।

नित्यानन्द पीर देवो रो लगे न कारी रे।

करणी थारी रे। हाँ रे करणी थारी रे।

सतगुरु की सीख हिये नहीं धारी रे।

करणी थारी रे ॥ ५ ॥

(२०)

राग म्हाने सतगुरु मिलवारो कोड़ उमेदी गेरी लाग रही

मारे सतगुरु बन आये वैद्य बीमारी सारी दूर करी ॥ टेर ॥

जनम मरण भव रोग बीमारी, अनंत जनम की लार।

वैद्य हकीम डाक्टर सब की, ले ले दवाई हार ॥ १ ॥

जप तप वरत किया बहू तेरा, रोग मिटन के काज।

मन्दिर देवरा सब जाय हेरा, फिरीया चहुँ दिश भाज ॥ २ ॥

पुन्य पूर्बला उदय हुआ जब, वैद्य मिला मस्तान ।
श्रवण द्वार उतार जुगत से, रगड़ बूटी ब्रह्मज्ञान ॥ ३ ॥
पीवत दवा गई उर अन्दर, दुवध्या रही न लिगार ।
नित्यानन्द भया अब निरभय, फेर जनम नहीं धार ॥ ४ ॥

(२१)

राग पूर्व पदानुसार

माने सतगुरु दीना रे बताय, भरम भूत भाग भया ॥ टेर ॥
स्वयं सच्चिदानंद आप हैं, सब में पूर्ण थया ।
जग की मान जीव बन बैठा, जिमि सिंह भेड़ गया ॥ १ ॥
कल्पा माना भूल भरमना, मिथ्या दीवी छुड़ाय ।
निर्बन्धन गुरुदेव कराया, भ्रान्ति भेद मिटाय ॥ २ ॥
गुड़ीयों का सा यह जग खेला, बन्ध्या पुत्र समान ।
अनहोता आरोपा माना, आप शिवाय न आन ॥ ३ ॥
निर्विकल्प निर्लेप निरंतर, निर्विकार निर्वान ।
अकल अक्रिय अखंड अनुपा, नित्यानंद निर्वान ॥ ४ ।

(२२)

राग पूर्व पदानुसार

सोई पावे पद निर्वाण, जिन्होंने गुरु ज्ञान सुना ॥ टेर ॥
तन इन्द्रिय अपने बस राखे, मन विषयों से मोड़ ।
सप्त व्यसन दश दोष नशा तज, गुरु चरणों में चित जोड़ ॥ १ ॥
सुख दुःख तन व्याधि सम जाने, जरा नहीं घबराय ।
बैठ एकान्त ध्यान धरे शुरा, कायर देख डर जाय ॥ २ ॥
जग हित कर्म करे निस्कामी, त्याग रहे चाहे ग्रहस्त ।
जल में कमल लिपे नहीं तैसे, जग में रहे अलमस्त ॥ ३ ॥

नभ निमि व्यापक लख निज चेतन, द्वैत उड़ावे धूर ।
निर्विकल्प नित्यानन्द निर्मल, निरख लिया निज नूर ॥ ४ ॥

(२३)

राग पूर्व पदानुसार

मैं तो हुआ दिवाना अलमस्त, गुरु ने ऐसा ज्ञान दिया ॥ टेर ॥
कुटुम्ब कैद गृह बंधन तोड़ा, मोह ममता को त्याग ।
स्वप्ना सम जग जान के रे, विषयों से हुआ है वैराग ॥ १ ॥
बहिरंग वृति अन्दर कीनी, ध्यान धरे एकान्त ।
तन मन इन्द्रियाँ बस मैं करके, लख लीया सार वेदान्त ॥ २ ॥
मल विक्षेप आवरण पट फाटा, आतम लख भरपूर ।
पूर्ण ब्रह्म सतगुरु दरशाया, नहीं नेड़ा नहीं दूर ॥ ३ ॥
तीन अवस्था तीन देह का, साक्षी स्वयं प्रकाश ।
नित्यानन्द सोई स्वरूप हमारा, द्वैत भरम हुआ नाश ॥ ४ ॥

(२४)

राग जोगीया आसावरी

ऐसा मेरा सतगुरु ज्ञान सुनाया रे ।

फँस रहा मोह जाल फास में, कर कृपा कटवाया रे ॥ टेर ॥
दुर्लभ ज्ञान दिया गुरु मुझको, सुनत परम सुख छाया रे ।
घर की शुद्ध बुद्ध भूल गया मैं, पुन्य पूर्वला पाया रे ॥ १ ॥
घर का धन्धा सबसे गन्धा, मोह जाल में बन्धा रे ।
होकर बस नारी के संग में, रहे काम बस अन्धा रे ॥ २ ॥
चीज वस्तु घर में नहीं पावे, नारी स्यान बीगारा रे ।
पास में पैसा जब नहीं होवे, बनीया बके बाजारा रे ॥ ३ ॥
मात पिता भ्राता सुत नारी, दीसत है ठग मोटा रे ।

धनवन्ती को सब कोई पूछे, निर्धन से ले ओटा रे ॥ ४ ॥
मान बड़ाई शोभा कारण, करम करत नित खोटे रे।
झूठ कपट कर घर को पालत, बांधत पाप की पोटे रे ॥ ५ ॥
घर में रहने से सुख नाहीं पावे, ओला ज्यूं गल जावे रे।
बैठ एकान्त निकल कर घर से, प्रभू से प्रेम लगावे रे ॥ ६ ॥
सतगुरु बचनरामजी स्वामी, गृहस्थ ग्राह से छुड़ाया रे।
नित्यानन्द काल के मुख से, पल में आय बचाया रे ॥ ७ ॥

(२५)

राग पूर्व पदानुसार

साधो भाई ऐसा निश्चय हमारा।

आवू न जावू मरु नहीं जनमू। सदा रहू इकसार ॥ टेर ॥
नारी पुरुष नपुंषक नहीं बालक, तरुण वृद्ध नहीं धारा।
मात पिता सुत दारा न मेरे, वर्ण आश्रम से न्यारा ॥ १ ॥
पाँच पचीस सप्त धातु नाही, नहीं षट् लगत विकारा।
पंच कोष तीनों गुण नाही, षट् उर्मि से न्यारा ॥ २ ॥
अन्तःकरण प्राण दश इन्द्रि, इनको प्रकाशन हारा।
तीनों देह अवस्था त्रय का, दृष्टा अगम अपारा ॥ ३ ॥
मल विक्षेप आवरण नहीं मुझमें, क्रिया कर्म न लिगारा।
बंधन मुक्त दोऊ नहीं मुझमें, कार्य कारण से न्यारा ॥ ४ ॥
उत्पत्ति स्थिति लय न त्रिपुटी, शब्दातीत निर्विकारा।
निर्विकल्प नित्यानन्द निर्मल, नित चेतन निराधारा ॥ ५ ॥

(२६)

राग जिला टोडी ताल तीन

दुनिया में बाबा देखा अनेको ढांग ॥ टेर ॥

गुरु की भक्ति हिये नहीं लावे, अपने सेवक शिष्य बनावे ।
भोली दुनिया को फुसलावे, गुरु की ओट से खावे मांग ॥ १ ॥
कहते जिम खुद करते नांई, औरों को उपदेश बताई ।
नई कविता नित बनाई, ज्ञान ध्यान में राखे टांग ॥ २ ॥
सतसंग में ब्रह्मज्ञान सुनावे, बाहिर थोथी बात बनावे ।
झुट कपट निन्दा चित लावे, गुरु का बचन ऊलांग ॥ ३ ॥
अपनी हठ को कभी न छोड़े, परमारथ से मुखड़ो मोड़े ।
धर्मराज जिनका शिर फोडे, रोवेंगे दे दे लम्बी बांग ॥ ४ ॥
सतगुरु बचनराम दे हेला, नित्यानंद सुनो रे चेला ।
सत्य बचन हिरदे घर मेला, लाजे पाखण्ड से सांग ॥ ५ ॥

(२७)

राग पूर्व पदानुसार

मोय आय अचम्भा, दुनियां है कैंसी दीवानी ॥ टेर ॥
मूल पेड़ की खबर भूल कर, पान फूल फल में मन लाकर ।
पाखंड पूजा चित्त लगाकर, खोय दीनी जिन्दगानी ॥ १ ॥
झाड़ पेड़ पूजे मन लाई, मन्दिर मस्जिद देवरे धाई ।
भैंरू भूत मनावत माई, पूजत पाहन पानी ॥ २ ॥
जप तप व्रत करे उपवासी, दौड़ दौड़ कर तीरथ नहासी ।
आतम देव भूल अविनाशी, भटकत चारो कानी ॥ ३ ॥
सत्य बचन को कभी न माने, द्वैत मतों की खींचातानी ।
आप भूल दुःख को सुख माने, निज सुख दिया भूलानी ॥ ४ ॥
दुर्मत गांठ धुली अति भारी, भेड़ चाल चाले संसारी ।
स्वयं विचार करे न लिगारी, जब तक रहा भूलानी ॥ ५ ॥
बचनराम गुरु मेटी शंका, अनुभव ज्ञान लगाया डंका ।

नित्यानन्द भया है निशंका, मिट गई खींचातानी ॥ ६ ॥

(२८)

राग पूर्व पदानुसार

ज्ञान बिन प्यारे, होये नहीं निस्तारा ॥ टेर ॥
कर्म उपासन जप तप सारा, विद्या पढ़ करे नेम आचारा ।
च्यारो धाम नहाय हरिद्वारा, कोटि यत्न करी हारा ॥ १ ॥
जटा बढ़ावे भस्म रमावे, पंच धूनी तप तन को सुखावे ।
सेव मेघाडम्बर दुःख पावे, जल में मंत्र जप हारा ॥ २ ॥
जैसे सर्प बम्बी के माई, बम्बी पीटे मरता नाई ।
तैसे तम उर अंदर छाई, तन के कष्ट से हो न उजारा ॥ ३ ॥
जिमि रजनी घर में अन्धियारा, बिन प्रकाश न मिटे अंधेरा ।
तिमी उर में अज्ञान असारा, बिन ज्ञान होवे न उजियारा ॥ ४ ॥
कस्तूरी मृगा उर माई, सूँघत घास बन में धाई ।
यूं चेतन सबके उर मांई, बिना ज्ञान भटकत हारा ॥ ५ ॥
मिले ब्रह्मनिष्ठ सतगुरु पुरा, संषय भ्रान्ती भेद करे दूरा ।
करें द्वैत का चकना चूरा, दरशावे ब्रह्म अपारा ॥ ६ ॥
नित्यानन्द स्वयं प्रकाशी, अजर अमर आतम अविनाशी ।
मिटे तबी चौरासी फासी, फेर जनम नहीं धारा ॥ ७ ॥

(२९)

राग पूर्व पदानुसार

निज रूप भूल गयो बनके, दीवाना माया माय ॥ टेर ॥
शीश महल में जैसे कूकर, रूप अनेक देख घबराकर ।
निज को भूल मरो भूस भूस कर, अपनी शुद्धि विसराय ॥ १ ॥
कस्तूरी मृग नाभी माई, बन में घांस सूंघता धाई ।

तहाँ सुगंधी पावत नाई, भरम भरम मर जाय ॥ २ ॥
नारी गल भूषण विसराई, बाहिर ढूंढत बहु दुःख पाई ।
कोई विवेकी दिया बताई, नित प्राप्त प्राप्ती कराय ॥ ३ ॥
सतगुरु का करके सतसंगा, संषय भरम भेद करे भंगा ।
पावो पूर्ण देव अभंगा, सुदृढ़ बोध कराय ॥ ४ ॥
सतगुरु बचनराम सुख राशी, अजर अमर अक्षय अविनाशी ।
कोशातीत अवस्था त्रय साक्षी, स्वयं नित्यानन्द थाय ॥ ५ ॥

(३०)

राग पूर्व पदानुसार

सतगुरु बिना प्राणी, मिथ्या भव दुःख पाई ॥ टेर ॥
आतम भुप महल तन माई, अज्ञान नीन्द जग स्वप्न फुराई ।
भूप रूप अपना वीसराई, जीव दरिद्र बन जाई ॥ १ ॥
कल्पित लिंग देह अंतरगत, अंतःकरण रूप पग पकड़त ।
अविद्या रूपी गादड़ी काटत, जनम मरण धाव थाई ॥ २ ॥
असली आत्मदेव खुद राजा, कर्ता भोक्ता बन अज्ञान काजा ।
भव दुःख जीव मानकर भाजा, द्वैत गुरु जसहि ढिग जाई ॥ ३ ॥
ऐसे गुरु स्वार्थ बस होकर, द्वैंत भावना दृढ़ जमाकर ।
अविद्या कल्पित रोग लगाकर, जन्म मरण दुःख बढ़ जाई ॥ ४ ॥
पूर्व पुन्य बचन गुरु आई, ब्रह्मज्ञान की दवा पीलाई ।
मिटा रोग नित्यानन्द छाई, संषय भरम विलाई ॥ ५ ॥

(३१)

राग मारवाड़ी सीता माता की गोदी में हनुमत डाली मुंदडी

आ यो भुन्डो रै बुढ़ापो, किस विध भोगना रे ॥ टेर ॥

हाथ पांव अरु माथो धूजे, फूटे नैन दोऊ नहीं सूजे ।
अब तो घर का कोई नहीं बूजे । निशि दिन नाक झरे ॥
सब तन में रोग सताव नारे ॥ १ ॥
रीछ सम शिर पे बाल बढ़ आसी, खुल खुल चले रात दिन खाँसी ।
छोरा देख करै नित हाँसी, पड़ गई कमर बाँकी ।
कर में लकड़ी लेवना रे ॥ २ ॥
शिर पर बाल हुआ सब धोला, मुँख में दाँत पड़े सब खोला ।
काना सुने न हो गया बोला, पड़ गया खाट माय,
सब तन में रोग सतावना रे ॥ ३ ॥
झाड़े पड़ीयो खाट में जावे, नित को गाडर ज्यू गरणावे ।
तन में जुँआ घणेरी खावे, कपड़ा फटीया मैल में कीच,
गंधगी आवना रे ॥ ४ ॥
फाटी देवे बिछावन राली, रोटी घाले फूटोड़ी थाली ।
बहुओ देवे बड़ाबड़ गाली, बुढल्यो पडीयो पडीयो खाय,
धमीड़ा लेवना रे ॥ ५ ॥
बुढ़ारो मन मीठा पर चाले, बेटा केवे कमाने खाले ।
खाटी छाछ राबड़ी घाले, सुका टुकड़ा देवे लाय,
भाय तो खावना रे ॥ ६ ॥
नारी केवे मरे कद डाकी, इणरा किताक दिन रया बाकी ।
मैं तो हीड़ा कर कर थाकी, कद हो इणरो मुखड़ो कालो,
घणा सतावना रे ॥ ७ ॥
देख दुःख रोये माथो धूण, अबे मने पाणी पावे कुण ।
कमाया पाप भरा अवगुण, प्रभू को भूलो मुरख गिवार,

अबे पछतावना रे ॥ ८ ॥
जैसा कर तैसा फल पावे, संग में पाप पुन्य दोऊ जावे ।
सतगुरु बचनराम समझावे, नित्यानन्द मान यहि सीख,
हिया बिच धारना रे ॥ ९ ॥

(३२)

राग पूर्व पदानुसार

ऐसा कर्म करे ग्रस्ताश्रम में, जब हो कल्याना रे ॥ टेर ॥
प्रथम ब्रह्म मुहुर्त में उठना, मात पिता गुरु चरणन पड़ना ।
शौचादिक स्नान फिर करना, आसन सिद्ध मन स्थिर,
प्रभु का ध्यान एकान्त लगाना रे ॥ १ ॥
धार्मिक ग्रन्थ हमेशा पढ़ना, तीरथ व्रत दानादिक करना ।
सत्संग महापुरुषों का करना, तज दुर्व्यसन दोष दश,
काम क्रोध अरु लोभ हटाना रे ॥ २ ॥
एक दिन मरना ऐसे मानो, सब में पूर्ण ब्रह्म पहिचानो ।
सम दम श्रद्धा दया उर आनो, तन मन इन्द्रियाँ बस में करके,
परहित में लग जाना रे ॥ ३ ॥
पर नारी माता समजाना, परधन मिट्टी करके माना ।
पुरुषार्थ कर द्रव्य कमाना, करना घर आये सत्कार,
पंच यज्ञ नित करवाना रे ॥ ४ ॥
नारी करना पती की सेवा, पती ईश्वर सम मानो देवा ।
शास्त्र पुराण मनूजी केवा, सेवा कर नित सास ससुर की,
सहज सुरधाम पठाना रे ॥ ५ ॥
विधवा पति मरणे के बाद, तज श्रृंगार रहो न आजाद ।
सूक्ष्म निन्द्रा भोजन मरियाद, ध्यान एकान्त गुरु का संग,

तबी पद पा निर्वाना रे ॥ ६ ॥

पुत्र मान मात पितु देव, करना तन मन धन से सेव।
आज्ञा कभी न टलने देव, लेय नित मात पिता आशीश,
धर्म सच्च कहलाना रे ॥ ७ ॥

भाई रखना प्रेम अटूट, कभी मत करो द्वैषता फूट।
गई रावण की लंका लूट, रखना राम लखन सम प्रेम,
रामायण नित बतलाना रे ॥ ८ ॥

पुत्र को शिक्षा दे पितु मात, ध्रूव प्रहलाद सुनावे बात।
कुल मर्याद धर्म सिखलात, देकर मदालसा के सम,
उपदेश ज्ञान करवाना रे ॥ ९ ॥

रहकर ग्रस्ताश्रम के माय, शास्त्र विधि कर्म करे चित लाय।
जग मिथ्या लख नाय फसाय, सहज ही होवे प्राप्त ज्ञान,
पद नित्यानन्द पाना रे ॥ १० ॥

(३३)

राग पूर्व पदानुसार

मेरे रक्षक श्री गुरुदेव, दया कर डूबत तार दिया ॥ टेर ॥
भटकत अनंत जनम दुःख भारी, अब के दुर्लभ नर तन धारी।
मात पिता भ्राता सुत नारी होकर इनके वश गृह मोह का,
भारी बंधन डाल दिया ॥ १ ॥

सतगुरु ज्ञान समुद्र निर्द्वन्द, मुझको पाई ज्ञान की बून्द।
पीवत खुल गई झटके चून्द, सोय रहा अज्ञान नीन्द,
गुरु शब्द सुनाय जगाय दिया ॥ २ ॥

लखीया स्वप्ना सम संसारा, झटसे इनसे लिया किनारा।
विष सम विषय लख तज डारा, जगीया उर अन्दर वैराग,

गुरु का शरणा धार लिया ॥ ३ ॥
सतगुरु कृपा ऐसी किनी, पास बिठा सब युक्ति दीनी ।
तन मन इन्द्रियाँ बस में किनी, कीना कठिनासन एकान्त,
भजन रंग मुझ पर डार दिया ॥ ४ ॥
नेति धोतीभस्ती न्योली गज साधी, भूख प्यास कम हुई उपाधि ।
सतगुरु ऐसी शक्ति दिला दी पी नित पाव दूध,
शीत उष्ण तितिक्षा, सहन कराय दिया ॥ ५ ॥
बैठ गुफा में ध्यान लगाई, चक्षु उलट त्रिकुटी लाई ।
झिलमिल जोत तहा दरशाई, घंटा शंख बंसरी वीण,
मृदंग नित तहां पर बाज रि या ॥ ६ ॥
मनवा मस्त भया धर ध्याना, सतगुरु बुग से हंस बनाना ।
मोती सोऽहम् शब्द चुगाना, पठाया ब्रह्म समुद्र माय,
आवागमन मिटाय दिया ॥ ७ ॥
सतगुरु बचनराम कृपाल, दीनी आत्म ज्ञान की लाल ।
निर्धन को धन देकर निहाल, नाशा जनम मरण दुख दरिद्र,
अब नित्यानन्द छाय रिया ॥ ८ ॥

(३४)

पदराग

मानव तन पाकर, भज ले श्री भगवाना ।
तेरी उमर बीती जाय, फेर पछताना ॥ टेर ॥
मकड़ी जिम करके जाल स्वयं फस जाना ।
सुत नारी के बस मोहा जाल अलुझाना ॥ १ ॥
जग ओस का मोती, तू सत जान लुभाना ।

तब चिन्ता तृष्णा, लगी उपाधि नाना ॥ २ ॥
मन इन्द्रियों के संग, विषयों में भटकाना ।
भय मैथून भूख, निद्रा में जन्म गमाना ॥ ३ ॥
तज काम क्रोध मोह, लोभ झूठ अभिमाना ।
उर दया क्षमा सन्तोष, शील सत लाना ॥ ४ ॥
सतसंग गंग, श्रद्धा के घाट नहाना ।
होय निर्मल, नित्यानंद परम पद पाना ॥ ५ ॥

(३५)

राग पूर्व पदानुसार

लड़ते हैं शूरमा, संत आय मैदाना ।
रणक्षेत्र देख, कायर कांपे अज्ञाना ॥ टेर ॥
जन्मों का वैरी, मोह राजा बलवाना ।
पाँच पचीस सिपाई, मन जिसका कपताना ॥ १ ॥
कायर वेरी की, देख फौज घबराना ।
शूरा कूदा, रणक्षेत्र शस्त्र ले नाना ॥ २ ॥
बजे बाजा ध्यान का सत्संग शुद्ध स्थाना ।
क्षमा बखतर पहन झट ज्ञान अश्व चढ़ आना ॥ ३ ॥
शमशेर शील, धीरज की ढाल बनाना ।
वैराग कटक सम दम कर शेल संभाना ॥ ४ ॥
ले विवेक धनुष, सुमिरण का बाण चलाना ।
गुरु सेन कवच को धार लड़े मस्ताना ॥ ५ ॥
शब्दों की चोट खा, मन संग फौज भगाना ।
मोह राजा मार तन नगरी बस करवाना ॥ ६ ॥
शुद्ध मति दीवान को, सोऽहम् हुकम सुनाना ।

बन गया बादशाह आतम अलमस्ताना ॥ ७ ॥
गुरु बचनरामजी अमर पट्टा दिलवाना ।
अब नित्यानन्द निरभय से निशान घुराना ॥ ८ ॥

(३६)

राग पूर्व पदानुसार

मेरे सतगुरु सारा, संषय भरम मिटाया ।
जग झूठ जान यूं, निश्चय मन ठैराया ॥ टेर ॥
मरुभूमि जल को देख मृगा ललचाया ।
जिम ठूंठ में भूत को, देख झूठ भ्रम छाया ॥ १ ॥
जिम रज्जू में सर्प को, देख बहुत डर पाया ।
जिमि सीप में चाँदी, देख उठाने धाया ॥ २ ॥
जिम नभ में नीलता, भ्रम कर सत दिखलाया ।
यूं असत्य जगत को, भ्रम कर सत दरशाया ॥ ३ ॥
किया अधिष्ठान का ज्ञान, भरम गढ़ ढाया ।
नित्यानन्द पूर्ण, खल्विदं ब्रह्म पाया ॥ ४ ॥

(३७)

राग पूर्व पदानुसार

मैं प्याला मद का पीना है ब्रह्म ज्ञाना ।
तन मन की शुद्ध बुद्ध, भूल हुआ मस्ताना ॥ टेर ॥
भोजन सत्संग, सतगुरु का पा रोजाना ।
खाकर श्रवण मुख, उर में मनन कराना ॥ १ ॥
तृप्ति निधिध्यासन, अनात्म भ्रम विलाना ।
आई ब्रह्माकार की, मस्ती न दिसे नाना ॥ २ ॥
सर्व खल्विदं ब्रह्म, श्रुति करत बखाना ।

मिटी जीव ईश की, ग्रन्थी भेद मिटाना ।। ३ ।।
आदि मध्य अन्त में, एक ही ब्रह्म पहिचाना ।
नित्यानन्द निर्मल, नित निर्गुण निर्वाना ।। ४ ।।

(३८)

गजल परज ताल तीन अथवा कव्वाली

परमानन्द की प्राप्ति, कोई विरला जन ही पाय है ।
छांटे सार असार को, सब द्वैंत भाव मिटाय है ।। टेर ।।
दोय अविद्या दोय संषय, दोय ही अहंकार है ।
दोय उपासन दोय समाधि, दोय वाक्य विचार है ।। १ ।।
तीन दोष अरु तीन ताप, आनन्द तीन प्रकार है ।
तीन जीव अरु तीन आतम, कर्म तीन प्रकार है ।। २ ।।
च्यार ध्यान अरु च्यार ज्ञान, च्यार प्रकार की मुक्ति है ।
च्यार वाणी च्यार खाणी, च्यार चित निरोध युक्ति है ।। ३ ।।
पंच यम पंच नियम कहिये, प्रलय पंच कहात है ।
पंय यज्ञ पंच योग भूमिका, मुद्रा पंच बतात है ।। ४ ।।
षट् अनादि पदार्थ षट् रस, देह षट् विकार है ।
नित्य कर्म षट् षट् शास्त्र, षट् अवस्था सार है ।। ५ ।।
सप्त दीप अरु सप्त सागर, सप्त विश्व का अंग है ।
अष्ट योग अष्ट पाश कहिये, अष्ट ब्रह्मचर्य अंग है ।। ६ ।।
नौ खण्ड नौ भक्ति कहिये, नौ वाद विचार है ।
दश दोष दश धर्म लक्षण, नाड़ी दश प्रकार है ।। ७ ।।
ग्यारह रुद्र अरु ग्यारह साधन, द्वादश सुर्य कहात है ।
तेरह धर्म भक्त भागवत, चौदह लोक विख्यात है ।। ८ ।।
पन्द्रह माया नाम देखो, षोडस कला भगवन्त है ।

अचल अखंड अद्वैत अणधड़, आदि न जिनका अन्त है ॥ ९ ॥
निर्मल निर्विकार सतगुरु, बचनराम अभेद है ।
नित्यानन्द स्वरूप सोई, त्रिय काल नहीं भेद है ॥ १० ॥

(३९)

ये नारी धर्म कहाया ॥ पति सेवा में मन लाया ॥ टेर ॥
पति आज्ञा को शिन धारे, हरदम पति रूप निहारे जी ।
ईश्वर सम पति कहाया ॥ ये नारी धर्म कहाया ॥ १ ॥
करे सास श्वसुर की सेवा, हिलमिल सब घर में रेवाजी ।
गृह कारज करे चित्त लाया ॥ ये नारी धर्म कहाया ॥ २ ॥
गृह सामग्री स्वच्छ रखना ॥ उत्साह चतुर नित रहना जी ।
नित प्रेम से रहो हर्षाया ॥ ये नारी धर्म कहाया ॥ ३ ॥
नहीं कभी स्वतंत्र रहना ॥ संतान का पालन करना जी ।
दे शिक्षा धर्म सिखाया ॥ ये नारी धर्म कहाया ॥ ४ ॥
रहे गृहस्थ धर्म लवलीना ॥ निस्काम कर्म सब कीनाजी ।
नित्यानन्द परम पद पाया ॥ ये नारी धर्म कहाया ॥ ५ ॥

(४०)

राग जिला झंझोटी ताल तीन

मेरे मत का कहुं विचारा । सतगुरु से भेद निहारा ॥ टेर ॥
है अभेद पंथ हमारा, जिसमें नहीं लिगाराजी ।
परमारथ से इकसारा ॥ १ ॥
ब्रह्मज्ञान सम्प्रदा हमारी, हम धर्म सनातन धारी जी ।
सब धर्मों का शिरताबा ॥ २ ॥
मेरा निराधार है खंभा, नित नास्तिक करत अचंभा जी ।
झंडा हमारा ॐ कारा ॥ ३ ॥

धूणी है अखंड हमारी अद्वैत अखाड़ाधारीजी ।
मेरा परम धाम गुरुद्वारा ॥ ४ ॥
जहाँ अधर तख्त है भारी, गादी निश्चयल निर्विकारी जी ।
जहाँ बैठे गुरु हमारा ॥ ५ ॥
जहाँ सूर्य चन्द्र नहीं तारा, दिन रात न तम उजियारा जी ।
वो स्वयं प्रकाश अपारा ॥ ६ ॥
इस मत को लखे कोई शूरा, नित्यानन्द मिले गुरु पूरा जी ।
वो फेर जन्म नहीं धारा ॥ ७ ॥

(४१)

राग पूर्व पदानुसार

मोय सतगुरु ज्ञान सुनाया, सब संषय भरम मिटाया ॥ टेर ॥
नहीं जनम मरण मुझ मांई, यह देह का धर्म कहाई जी ।
जो थिर रहने नहीं पाया ॥ १ ॥
ये हर्ष शोक मन माई, भूख प्यास प्राण के कहाई जी ।
मैं षट् उर्मि में नहीं आया ॥ २ ॥
मैं अजर अमर अविनाशी, निर्विकल्प स्वयं प्रकाशी जी ।
अद्वैतं ब्रह्म निर्माया ॥ ३ ॥
मैं नित निर्गुण निर्विकारा, नित्यानन्द निश्चयल निराधारा जी ।
सत चेतन अलख अजाया ॥ ४ ॥

(४२)

राग पूर्व पदानुसार

हम सदा अक्षय निर्विकारा । नहीं हमारे लगत विकारा ॥ टेर ॥
अग्नि से हम नहीं जलता, नहीं शस्त्रों से हम कटता जी ।

नहीं पवन सुखावन हारा ॥ १ ॥
हम जल से गलता नाई, नहीं लघु दीर्घ कहाई जी ।
हम नहीं हलका नहीं भारा ॥ २ ॥
हम अक्रिय असंग अपारा, व्यापक सूक्षम निराकाराजी ।
हम हर्ष शोक से न्यारा ॥ ३ ॥
सच्चिदानन्द नित्यानन्दा, निर्विकल्प स्वयं निर्द्वन्दाजी ।
हम कहन सुनन से न्यारा ॥ ४ ॥

(४३)

राग कान्हड़ा ठुमरी ताल तीन

जिन सतसंग का आनंद लूटा ! कुसंग से वह रहत अपूटा ॥ टेर ॥
चन्डु सुरट चिलम बीड़ी भंगा । गांजा अफीम बिगाड़े अंगा ॥
जरदा पान काफी चाय न पीना । जो कोई चाहे सुख से जीना ॥ १ ॥
खेल कूद वैश्या जहाँ गावे । तिन में उनका मन नहीं जावे ॥
घुड़दौड़ पोला नाटक आदि । टी.वी. सिनेमा देख हो बरबादी ॥ २ ॥
सतरंज चौपड़ तास खेलाई । इनमें नित प्रति होवे लड़ाई ॥
जाय हताई कबहुं न करता । बैठ एकान्त ध्यान नित धरता ॥ ३ ॥
जुवा चोरी मांस वैश्या शराबा । परधन पर नारी सब हो खराबा ।
सप्त व्यसन को दूर हटावे । दशो ही दोषों से वर्जित रहावे ॥ ४ ॥
जंतर मंतर जादु टोणा । इण में सारा जग भरमाणा ॥
भेंरू भूत आन देव न पूजे । स्वयं मस्ती शिवोऽहम् गुंजे ॥ ५ ॥
सतगुरु बचनराम मिले पूरा । जिन मेरा भरम किया सब दूरा ॥

नित्यानन्द निज स्वरूप लखाया। जनम मरण का बन्धन छुडाया ॥ ६ ॥

(४४)

राग पूर्व पदानुसार

सतगुरू ज्ञान दिया मोय भारी। जनम मरण का बंधन टारी ॥ टेर ॥
सतगुरू सकल शिरोमणी दाता। अनुभव वेद शास्त्र के ज्ञाता ॥
महावाक्य का शब्द सुनाया। श्रोत द्वार होय उर में पूगाया ॥ १ ॥
अहं ममता देह बंधन छुड़ाया। संषय शोक भरम गढ़ ढाया।
ईश्वर जीव अभेद लखाया। सच्चिदानन्द पूर्ण दरशाया ॥ २ ॥
देखण सुनन कहन में नाई। यह सब काल पसारा भाई।
देश काल वस्तु परिच्छेद में नाई। नभ जिम व्यापक अखंड सदाई ॥ ३ ॥
बचनराम गुरू नित निर्विकारा। अक्रिय अखंड अद्वैत अपारा।
नित्यानन्द निर्विकल्प स्वरूपा। शुद्ध चेतन हम आप अनूपा ॥ ४ ॥

(४५)

राग पूर्व पदानुसार

ये निज खास सिद्धान्त हमारा। वेद सन्त सब ग्रन्थ उचारा ॥ टेर ॥
मुझसे उपजे सब संसारा। फिर मुझमें ही लय होय सारा ॥
जैसे तरंग बुदबुदा जल माई। उत्पन्न हो फिर तां में समाई ॥ १ ॥
मैं हूं सकल जगत आधारा। सर्व वस्तु को प्रकाशन हारा ॥
जो दिसे सब नूर हमारा। सबमें व्यापक अखण्ड अपारा ॥ २ ॥
नित्य निरन्तर शुद्ध निर्विकारा। निश्चयल निर्विकल्प निराकारा ॥
गुण क्रिया में आवत नाई। अद्वैंत अचल अखंड अजाई ॥ ३ ॥
सच्चिदानन्द अनंत अनूपा। निर्मल साक्षी ब्रह्म शिव रूपा ॥

नित्यानन्द मन की गम नाई । बोध स्वरूप अप्रमाण सदाई ॥ ४ ॥

(४६)

राम धमाल

हाँ रे भुरकी डारी रे । साची प्रीत प्रभू से लांगी,
हुयो सुख भारी रे भुरकी डारी रे ॥ टेर ॥
सतगुरू भुरकी ऐसी डारी, तन की शुद्धि बिसारी रे ।
चैन नहिं पड़े रात दिन अन्न जल, लागे खारी रे ॥ १ ॥
महा वैराग जगा उर अन्दर, जग से लिया किनारी रे ।
स्वप्ना ज्यूं सब जाण कुटुम्ब से, मनसा मारी रे ॥ २ ॥
विषय भोग की गागर फोड़ी, ज्ञान कपाट उघाड़ी रे ।
अनंत जनम की भूल भरमना, छिन्न में टारी रे ॥ ३ ॥
जनम मरण का संषय मेटा, दिया ज्ञान तत् सारी रे ।
एको ब्रह्म सकल में व्यापक, निश्चय धारी रे ॥ ४ ॥
सतगुरू बचनराम शुद्ध चेतन, नित निर्गुण निर्विकारी रे ।
नित्यानन्द सोई स्वरूप, भुरकी भरम निवारी रे ॥ ५ ॥

(४७)

राम पूर्व पदानुसार

हाँ रे खेलो होरी । सतगुरू सतसंग मिली,
खेल अब फागण आयो री । खेलो होरी ॥ टेर ॥
लख चौरासी में भटकत फिरीयो, कष्ट घणेरो पायो री ।
ब्रह्मानन्द लूटो अब दुर्लभ, नर तन पायोरी ॥ १ ॥
पाँच पचीस सखी बुद्धि राधिका, शुद्ध मन कृष्ण कन्हैया री ।
गुरू गम भंग पीला करके मतवाल उड़ायो री ॥ २ ॥
धीरज लहंगो शील चु्न्दड़ी, सब सखीयो ने पेरायोरी ।

च्यारो साधन जामो धारण, कृष्ण करानो री ।। ३ ।।
सत का चन्दनप चित्त से घिस कर, सब के लेप करायो री ।
उमंग पुष्प बरसाय, हर्ष का हार पेरायो जी ।। ४ ।।
नेम की मटकी प्रेम रंग भर, पिचकारी ज्ञान छोड़ायो री ।
ध्यान का ढोल बजाय, द्वैत गुलाल उड़ायो री ।। ५ ।।
हृदय भूमि में शब्द डंडीया, नाच निवृत्ति नचायो री ।
श्रवण मनन निधिध्यासन कर, परमानन्द पायोरी ।। ६ ।।
बचनराम गुरु बड़े खिलाड़ी, अक्षय खेल खिलायो री ।
निर्विकल्प नित्यानन्द निर्मल, अलख अथायो री ।। ७ ।।

(४८)

राग हुजाज अथवा आसावरी अथवा सूर मलार

ईश्वर का वाचक लक्ष्य बताया ।
कर भिन्न भिन्न यथार्त गाया ।

तत्पद वाच्य अर्थ ईश का, देश अव्याकृत माया ।
उत्पति स्थिति प्रलय ईश के, तीनों ही काल बताया ।। १ ।।
सत रज तम गुण वस्तु ईश की श्रृष्टि सामग्री ये थाया ।
विराट हिरण्यगर्भ अरु अव्याकृत, तीनों ही देह धराया ।। २ ।।
विश्वनर और सुत्रात्मा, अंतरयामी कहाया ।
ये तीनों अभिमान ईश के, यू वेदान्त बताया ।। ३ ।।
मैं एक हूँ बहुरूप हो ऐसी, इच्छा सहित संकल्प थाया ।
जीव रूप करके प्रवृत्त हुआ सोई ईश्वर कार्य कहाया ।। ४ ।।
सर्वशक्ति सर्वग्य व्यापक एक, समर्थ स्वाधीन थाया ।
माया उपाधि परोक्ष आठो, ईश्वर धर्म बताया ।। ५ ।।
इन सब सहित माया में प्रतिबिम्ब, चेतन ब्रह्म का आया ।

माया सहित प्रतिबिम्ब मिल, तत्पद वाच्यार्थ गाया ॥ ६ ॥
सर्व उपाधि ये भाग त्याग कर, अब शेष ब्रह्म रहाया ।
विराट हिरण्यगर्भ अव्याकृत का अधिष्ठान साक्षी शुद्ध ब्रह्म थाया ॥ ७ ॥
सोई तत्पद का लक्ष्य अर्थ है, निर्विकल्प निर्माया ।
नित्यानन्द निर्विकार स्वरूपा, अद्वय अलख अजाया ॥ ८ ॥

(४९)

राग पूर्व पदानुसार

जीव का वाच्य रुलक्ष्य बताया, भिन्न भिन्न कर समझाया ॥ टेर ॥
त्वं पद वाच्यार्थ जीव का, देश चक्षु कंठ हिय थाया ।
जाग्रत स्वप्न सुषुपति तीनों, जीव के काल कहाया ॥ १ ॥
स्थूल सूक्ष्म कारण तीनो, जीव शरीर धराया ।
यहि त्रय जीव के भोग सामग्री, जिनसे कार कराया ॥ २ ॥
विश्व प्रथम अरु दूजा तेजस, तीजा प्राज्ञ कहाया ।
ये तीनों अभिमान जीव के, यू वेदान्त बताया ॥ ३ ॥
जाग्रत जादि ले मोक्ष पर्यन्त, भोग रूप जग थाया ।
सोई जीव का कार्य कहाया, सतगुरु भेद बताया ॥ ४ ॥
अल्पशक्ति अल्पज्ञ परिच्छिन्न नाना, पराधीन पन आया ।
असामर्थ अपरोक्ष अविद्या उपाधिपन, अष्ट धर्म जीव कहाया ॥ ५ ॥
इन सब सहित अविद्या में प्रतिबिम्ब, साक्षी कुटस्थ का आया ।
अविद्या प्रतिबिम्ब कुटस्थ मिल तीनों, जीव वाच्य अर्थ गाया ॥ ६ ॥
सर्व उपाधि भाग त्याग कर अधिष्ठान साक्षी रहाया ।

तत्पद लक्ष्य कुटस्थ नित्यानन्द निर्विकल्प निर्माया ॥ ७ ॥

(५०)

राग आसावरी टोडी ताल तीन

देखा रे सन्तो हमने जगत में, धूमर पान का खेल ॥ टेर ॥
कड़क तम्बाकू बिड़ी चुरट ये और पीवे सिगरेट ।
गांजा भांग चण्डु चरस ये, नहीं पिवे तो केवे दुखे पोट ॥ १ ॥
हुक्का चिलम भर भर पीवता, केवे रे लेवो एक फूंक ।
दम उठ खुल खुल खांसी चले, नाक झरे भरे थूंक ॥ २ ॥
बैठे जटे बदबू करे, चलती बीमारी लेवे मोल ।
रखते राख भर ठीकरा, छोरा करे ज्योरी रोल ॥ ३ ॥
चीलम झारे जटे जीव मरे, पीवत कलेजो जाल ।
तन छीजे जग हंसत है, खोवत गाँठ को माल ॥ ४ ॥
सूंघत सदा जो सूगला, खावे सो डाकी कहे नीच ।
अवगुण इण में बहुत है, प्रगट करूँ तो माने रीछ ॥ ५ ॥
खर भी जिन्हें खावे नहीं, तिन्हें मनुष्य हंस खाय ।
वेद संत मनुजी केवे, ते नर नरके जाय ॥ ६ ॥
पराधीन में सुख नहीं, मत हो इण रे आधीन ।
नशा दोय अन्न जल कहा, करत रहो लवलीन ॥ ७ ॥
प्रथम पेड़ी यहि ज्ञान की, कर व्यवसनों का त्याग ।
खान पान तन की शुद्धि, तब उपजे वैराग ॥ ८ ॥
बचनराम सतगुरु मिले, समझाया सार असार ।
नित्यानन्द निर्भय भया, जनम मरण भव पार ॥ ९ ॥

(५१)

राग पूर्व पदानुसार

देखो रे संतो हमने जगत में, दारू पीवणीयो रा खेल ॥ टेर ॥
जावत लूच्छोरी टोली हाट पे, केवे कलाली दारू देय ।
भर बोतल ले हाथ में, गटक गटक पी लेय ॥ १ ॥
खावा ने चावे चरको चरपरो, कीमो कलेजी ताजो माँस ।
चिलम तम्बाखू बिना ना सरे, खाँसी चले उठे स्वांस ॥ २ ॥
मुख में आवे भूण्डी वासना, घणो सतावे काम ।
पातरीयों संग पोडता, खोवे गांठरा दाम ॥ ३ ॥
घर की नारी को नित मारता, करजदार करे तंग ।
अन्न बिना टाबर रोवता, कपड़ा फटा सब अंग ॥ ४ ॥
खावत्त धुकड़ियो गिर पड़े, प्राण घुटे आव छाड़ ।
मल मूत्र में मुख भरे, गंडक करें ज्यारों लाड़ ॥ ५ ॥
फैलत कमजोरी सारे बदन में, रग रग व्यापे रोग ।
लेवत दवाई जाय वैद्य से, खर्चे दाम हँसे लोग ॥ ६ ॥
पी दारू नित झगड़ते, काड़त सौ वर्षों को वैर ।
छप्पन कोटि यादव मरे, लगी न देर हुआ ढेर ॥ ७ ॥
नेम धर्म जाने नहिं, माने नहीं संतो री सीख ।
घर में आदर कोई नहिं करे, मांगी मिले नहीं वाने भीख ॥ ८ ॥
बचनराम गुरु सत कहै, छोड़ नशा दे कान ।
नित्यानन्द धृत दुध पी खूब बनो बलवान ॥ ९ ॥

(५२)

राग पूर्व पदानुसार

देखा संतो हमने जगत में, माँस खावणियों रा ख्याल ॥ टेर ॥
जीभ स्वाद के कारणे, करें पशुओं री घात ।
काट चून चाडे डेगची, नमक मसालो रलात ॥ १ ॥

सीजत स्वाद कर सरावता, कर कर मन में कोड़ ।
कीमों कलेजी खावै धाप के, बैठे मूंछ मरोड़ ॥ २ ॥
रज वीर्य हड्डी चामड़ी, सेन्डों खून खेंकार ।
कौन उत्तम इन में चीज है, मन में करो विचार ॥ ३ ॥
झटका कर हिन्दू खावते, मुस्लिम करके हलाल ।
लागी लाय दोनों दीन में, यम खीचे वारी खाल ॥ ४ ॥
जितने रोंम पशु बदन में, उतने वर्ष भोगे नरक ।
वेद संत मनुजी केवे, इण में नहीं है फरक ॥ ५ ॥
असली नर खावे नहीं, हिंसक पशुयों रा खाण ।
मेवा मीठाई दांखा दुध घी, खावो पुष्ट रेवे प्राण ॥ ६ ॥
बचनराम सतगुरू कहे, दया धर्म को मूल ।
नित्यानन्द पालन करो, वेद साख मत भूल ॥ ७ ॥

(५३)

तजो धर्म हित प्राण, धर्म पर डट जाना ॥ टेर ॥
मोरध्वज ने धर्म न हारा । पुत्र शीश पर धर दिया आरा ॥
हुये प्रसन्न भगवान ॥ धर्म पर डट जाना ॥ १ ॥
राज त्याग हरिचन्द्र धर्म पर । काशी में बिक गये डोम घर ॥
रखी धर्म की शान । धर्म पर डट जाना ॥ २ ॥
नृप शिवी रक्षा करि शरणागत । कांट मांस तन अपना डालत ॥
तुले तराजू लान । धर्म पर डट जाना ॥ ३ ॥
भीत चुने गुरु गोविन्द बाला । धर्म न तजा प्राण दे डाला ॥
होय निरभय बलिदान । धर्म पर डट जाना ॥ ४ ॥
गाँधीजी बहु कष्ट उठाया । धर्म हेतु निज प्राण गमाया ॥
कीना काम महान । धर्म पर डट जाना ॥ ५ ॥

धर्म न तजो मरो मिट जावो । कायरता नहीं मन में लावो ॥
सदा रहे यह ध्यान । धर्म पर डट जाना ॥ ६ ॥
करत धर्म की रक्षा जो नित । धर्म भी उसका करत सदा हित ॥
जिससे होय कल्याण । धर्म पर डट जाना ॥ ७ ॥
धर्म ते विरति योग ते ज्ञाना । ज्ञान मोक्ष पद वेद बखाना ॥
नित्यानन्द पद पान । धर्म पर डट जाना ॥ ८ ॥

(५४)

राग धुनि

आवो रे संगी सब मिल बोलो, ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॥ टेर ॥
ॐकार वेदों ने गाया, शिव विष्णु ने ध्यान लगाया ।
ब्रह्माजी गाय सुनाया । हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॥ १ ॥
ॐकार महामन्त्र कहावे, शेष सहस्त्र मुख निशि दिन गावे ।
नारद बीण बजावे । हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॥ २ ॥
इन्द्र गणेश शारदा सारे । सनकादिक शुकदेव उचारे ।
वेद व्यास लिख हारे । हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॥ ३ ॥
जो नित ध्यान ॐ का धरता, आपा खोज आप को पाता ।
अक्षय रूप बन जाता । हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॥ ४ ॥
हर्ष शोक व्यापे नहीं कोई, जहाँ माया का लेश न होई ।
निरालेप है सोई । हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॥ ५ ॥
निरगुण निराकार निराधार, अव्यय अटल निरालम्ब न्यारा ।
स्वयं प्रकाश अपारा । हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॥ ६ ॥
सतगुरु बचनराम है सोई । ॐ मंत्र दिना मोई ।
नित्यानन्द सुख होई । हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॥ ७ ॥

(५५)

राग शब्द झड़ लागो रे बरसण लागो रंग

बोले रे काया मन्दिर माय, सोऽहं शब्द विचार ॥ टेर ॥
दांत जीभ बिना होठ हिलाई
बिना कर माला फिरत सदाई ।
अजप्पा जाप जपाय, लगी रहे धुन इकतार ॥ सोऽहं ॥ १ ॥
बैठ एकान्त लगाकर आसन,
बस में कर इन्द्रियाँ अरु तन मन ।
ध्यान श्वांस में लाय, अर्ध अरु ऊर्ध संभार ॥ २ ॥
हं से श्वासा बाहिर आवे
सो मे श्वासा अन्दर जावे ।
हं से सो उलटाय, लखो तब सोहं सार ॥ ३ ॥
सो का अर्थ वही परमात्मा
हं का अर्थ सोई मैं आत्मा ।
निशिदिन यहि लिवलाय, द्वैत भ्रम भेद निवार ॥ ४ ॥
अजर अमर अक्षय सतरुपा,
निर्मल नित्यानन्द अनूपा ।
सो नहीं आवे नहीं जाय, सेन सतगुरु की धार ॥ ५ ॥

(५६)

राग पूर्व पदानुसार

सुनो रे काया मन्दिर माय, अनहद का झनकार ॥ टेर ॥
पद्मासन एकान्त लगावो,
बहिरंग वृति अन्दर लावो ।

दोऊ कर अंगुली लगाय, रोक दोय कान के द्वार ॥ अनहद ॥ १ ॥

झिनी धुनि में सुरत लगाना,

रिल मिल बाजे करो पिछाना ।

भिन्न भिन्न टेर सुनाय, मधुर धुनि लग रही प्यार ॥ २ ॥

घंटा शंख, बंसरी वीणा,

मृदंग ताल नंगार झीणा ।

बादल सम घुरराय, बजे अनहद झनकार ॥ ३ ॥

धुनी सुनकर मन होय मस्ताना,

ब्रह्म ज्योत का दर्शन पाना ।

नित्यानन्द परम पद पाय, होय भवसागर पार ॥ ४ ॥

(५७)

राग पूर्व पदानुसार

देखो रे काया मन्दिर माय, झिलमिल जोत अपार ॥ टेर ॥

सतगुरु बिन यह, भेद न पावे,

मूरख नर पच-पच मर जावे ।

कोटि यत्न कराय, भरम रहा सब संसार ॥ झिलमिल ॥ १ ॥

आसन सिद्ध एकान्त लगाया,

नेत्र बन्द कर दृष्टि जमाना ।

त्रिकुटी ध्यान लगाय, देख तहाँ खेल अपार ॥ २ ॥

पहले बिजली, ज्यूं चमकारा,

फिर रवि चन्दा दरसे तारा ।

ब्रह्म ज्योति दरशाय, खण्डित नहीं होय लिगार ॥ ३ ॥

निशिदिन ध्यान धरे कोई बन्दा,

नित्यानन्द मिटे सब फन्दा ।

वो फेर जन्म नहीं पाय, देख लिया निज दीदार ॥ ४ ॥

(५८)

राग पूर्व पदानुसार

खेलाया काया मन्दिर माय, सतगुरु मुझको फाग ॥ टेर ॥
शब्द ज्ञान पिचकारी भर कर, अनुभव रंग डार कर मुझ पर।
तन मन दिया भिगाय, जगा उर में वैराग ॥ सतगुरु ॥ १ ॥
सुत नारी गृह बंधन तोड़ा, विष सम जान विषय मुख मोड़ा।
गुरु चरणों चित लाय, त्रिगुण अविद्या भ्रम भाग ॥ २ ॥
ज्ञान भानु उर में दरशाया, असत जड़ दुःख क्लेश मिटाया।
सच्चिदानन्द दरशाय, अखण्ड अज निर्विभाग ॥ ३ ॥
गुरु बचनराम सोई ब्रह्म स्वरूपा, निर्मल नित्यानंद अनूपा।
सो कहन सुनन में नाय, जहाँ नहीं द्वेष अरु राग ॥ ४ ॥

(५९)

राग पूर्व पदानुसार

गुरु ने दिया ज्ञान सुनाय, जग से भया वैरागा ॥ टेर ॥
अनंतबार चौरासी माई, धरकर कर जन्म बहुत दुःख पाई।
मोह का बंध छुड़ाय, विषय रंग सब त्यागा ॥ जग से ॥ १ ॥
सतगुरु कृपा ऐसी कीनी, पास बिठा सब युक्ति दीनी।
साधन सरल बताय, भजन का रंग लागा ॥ २ ॥
नेति धोति गज न्योली भस्ती, उलट नयन त्राटक धर दृष्टि।
त्रिकुटी ध्यान लगाय, ज्योति में मन लागा ॥ ३ ॥
घंटा शंख बंसरी बाजत, मृदंग ताल नंगारा गाजत।
झीनी टेर सुनाय, गगन घुरवा लागा ॥ ४ ॥

सुन मन मस्त भया धर ध्याना, एक अखंडित देव पिछाना ।
अब नित्यानन्द छाय, भरम भय दुःख भागा ॥ ५ ॥

(६०)

राग पूर्व पदानुसार

लखो रे सतसंग जाय, हरि व्यापक सब माय ॥ टेर ॥
अपनी भूल से जुदा बताई, अज्ञान पर्दा घट में छाई ।
गुरु बिना लख्यो न जाय, करो चाहे कोटि उपाय ॥ १ ॥
पूर्ण एक विश्व के माई, जैसे दूध में घृत सदाई ।
तिल में तेल रहाय, पुष्प में सुगंध लखाय ॥ २ ॥
जिहि मेंदी में लाली छाई, पाहन में ज्यो आग रहाई ।
गन्ना में रस छाय, ऐसे हरि रहा समाय ॥ ३ ॥
जिसमें नाना भेद न किंचित, द्वितीया धार होय भय निश्चित ।
सो मृत्यु मुख जाय, वेद को श्रुतियां गाय ॥ ४ ॥
गुरु बचनराम की सतसंग पाई, संषय शोक भ्रम विलाई ।
नित्यानन्द निर्विकल्प थाय, कहन सुनन में नाय ॥ ५ ॥

(६१)

राग पूर्व पदानुसार

हमें सतगुरु देव रिझाना है । देव रिझाना गुरुदेव रीझाना,
दुनियाँ को नाई रीझाना है ॥ टेर ॥
भजन बनाय गाय, मस्त बन जाना, तन मन शुद्ध विसरना है ॥ १ ॥
भक्तजनों को गाय सुनाना, उन्हें मगन बनाना है ॥ २ ॥
दुनियाँ माने या नहीं माने, उनको नाई मनाना है ॥ ३ ॥
प्रेम मगन मतवाला होकर, आया द्वैत मिटाना है ॥ ४ ॥
ध्याता लीन ध्यान में होकर, ध्येय रूप बन जाना है ॥ ५ ॥

नित्यानन्द परम पद पाकर, आवागमन मिटाना है ॥ ६ ॥

(६२)

राग पूर्व पदानुसार

हमें सतगुरु श्याम मिलाय दिया ॥ टेर ॥

सुत नारी गृह बंध छुड़ाकर, अपनी शरण में लगाय लिया ॥ १ ॥
स्वप्ना सम सब विश्व लखाकर, विषयों से मन को हटाय दिया ॥ २ ॥
उर अज्ञान कपाट खोलकर, ज्ञान की जोति जगाय दिया ॥ ३ ॥
तत्त्वमस्यादि लक्ष्य लखा कर, जीव ईश भेद मिटाय दिया ॥ ४ ॥
अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म लखा कर द्वैत की धूड़ उड़ाय दिया ॥ ५ ॥
निर्विकल्प नित्यानन्द चेतन, अपना आप बताय दिया ॥ ६ ॥

(६३)

तर्ज बाहिर ने काई ढूंढती फिरे

सतगुरु बिना कोई भेद नहीं पावे, संषय भरम नहीं जावे ॥ टेर ॥
च्यारो धाम फिरो चाहे जाकर, सब तीरथों में नहावे ।
जप तप व्रत उपवास कर बहु, दुर्बल होय दुःख पावे ॥ १ ॥
जैसे घर में रहत अन्धेरा, बिना प्रकाश नहीं जावे ।
तैसे उर अज्ञान अन्धेरा, बिना ज्ञान नहीं जावे ॥ २ ॥
मृगा नाभी में बसे कस्तुरी, घास सूँध बन धावे ।
कर सतसंग खोज घट भीतर, आतम की शुद्धि पावे ॥ ३ ॥
जिमि रवि एक अनंत घट दरशे, घट विनसे नहीं जावे ।
नभ जिमि घट मट व्यापक चेतन, नहीं जावे नहीं आवे ॥ ४ ॥
हर्ष शोक सुख दुःख नहीं व्यापे, जन्म मरण नहीं आवे ।
निर्विकार नित्यानन्द निर्मल, अपना आप रहावे ॥ ५ ॥

(६४)

राग पूर्व पदानुसार

बाहिर ने क्या तू ढूंढती डोले मारी सुरता,
तन मन्दिर में हरि बोले ॥ टेर ॥
पाँच पचीस का यह तन मन्दिर, दशवा द्वार पट खोले ।
चेतन देव बिराजे अन्दर, अज्ञान पड़दा के ओले ॥ १ ॥
चौदह पुजारी पूजा करते, प्राण पवन नित ढोले ।
हृदय दीप मन बाती बुद्धि घृत, ज्ञान की ज्योति संजोले ॥ २ ॥
पंच सखी मिल मंगल गावे, अनहद बाजे ढोले ।
त्रिकुटी महल में खेल अपारा, उलट दृष्टि कर जोले ॥ ३ ॥
मन्दिर नाश देव अविनाशी, अचल अखंड अडोले ।
कर दर्शन नित्यानन्द छाया, मस्त भया क्या बोले ॥ ४ ॥

(६५)

पद राग रागलूर

म्हारों अब के बेड़ो पार करो गुरुदेव, धर्मराज की अदालत से ॥ टेर ॥
लख चौरासी जगत जेल भारी, भरमों की भीत बुरज खाणी च्यार ॥ १ ॥
गर्भ पींजरो नरक से भरीयों, जनम मरण फांसी गल बिछ डार ॥ २ ॥
मोह की बेडी स्नेह हथकड़ी, मूला अविद्या जंजीर चोलडी धार ॥ ३ ॥
तृष्णा तगारी शिर पर देवे, झूट कपट गृहस्थ करावे कारोबार ॥ ४ ॥
पाँच पचीस सीपाई लारे रेवे, चिंता फिकर रा संटर मार बूरी धार ॥ ५ ॥
नित्यानन्द इण दुःख से छुड़ावो, जनम जनम नहीं भूलू उपकार ॥ ६ ॥

(६६)

राग पूर्व पदानुसार

मेरा सत्य शब्द शिष्य समझ उर धार,
अज्ञान आवरण सब क्षय होवे ॥ टेर ॥

सर्वाधार स्वरूप तुम्हारा, अनुभव कर शिष्य समझ विचार ॥ १ ॥
सच्चिदानन्द स्वरूप भूलाना, धर्म अनातम निज में निहार ॥ २ ॥
देह अवस्था वृति बन मिटती, तू सत रूप सदा इकसार ॥ ३ ॥
देह इन्द्रि मन बुद्धि अवस्था, चेतन तुम ही प्रकाशन हार ॥ ४ ॥
जन्म मरण देह भूख प्यास प्राण, हर्ष शोक सुख दुःख मन धार ॥ ५ ॥
कर्ता भोक्ता अंतःकरण, ज्ञान अज्ञान ये मति के विचार ॥ ६ ॥
पाप पुन्य अनुसार लीङ्ग देह, आवत जावत बहु योनि धार ॥ ७ ॥
नभ जिम व्यापक रूप तुम्हारा, वेद संत सब करत पुकार ॥ ८ ॥
निर्विकल्प नित्यानन्द निर्मल, अजर अमर अक्षय तू निर्विकार ॥ ९ ॥

(६७)

राग पूर्व पदानुसार

मैं तो अजर अमर वर पाया ये माय, पूर्ण गुरु परताप से ॥ टेर ॥
अनंत जनम से भटकत फिरीयो, कष्ट घणेरा पाया ये माय ॥ १ ॥
अब के सतगुरु सामर्थ मिलीया, मोह की नींद जगाया ये माय ॥ २ ॥
कर्म उपासन ज्ञान बताकर, संषय शोक मिटाया ये माय ॥ ३ ॥
श्रुति संत प्रमाण बताकर, भ्रम का भूत भगाया ये माय ॥ ४ ॥
सच्चिदानन्द स्वरूप लखाकर, चिद्जड़ ग्रन्थि हटाया ये माय ॥ ५ ॥
चार अवस्था देह चार का दृष्टा, अलग लखाया ये माय ॥ ६ ॥
अजर अमर अक्षय अविनाशी, निर्विकार निर्माया ये माय ॥ ७ ॥
निर्विकल्प नित्यानन्द निर्मल, अपना आप रहाया ये माय ॥ ८ ॥

(६८)

कव्वाली

मनुष्य जन्म वृथा नहीं खोना, नाम सुमिर ले दो घड़ी।
सुबह शाम भगवान को तू, याद करले दो घड़ी ॥ टेर ॥
कीना कवल तैने प्रभू से, गर्भ में जब झूलता।
बाहिर निकालो करु भजन, उस कवल को क्यों भूलता।
गौर कर मन में जरा तू, याद करले वो घड़ी ॥ १ ॥
नर जन्म साधन धाम, मुक्ति द्वार पुनि पुनि ना मिले।
भूमि गिरा टूटा पुष्प पुनि वृक्ष के वो न खिले।
मोह ममता को छोड़ जरा, शुभ कर्म करले दो घड़ी ॥ २ ॥
बैठ कर एकान्त दृढ़ आसन जमा ले तू जरा।
बहिरंग वृति अंतर करो, तन मन को बस में कर जरा।
हो रहा अजप्पा जाप, सोऽहम् ध्यान कर ले दो घड़ी ॥ ३ ॥
पंच कोश परे त्रय देह अवस्था, त्रय का साक्षी आत्मा।
नित्यानन्द स्वरूप तेरा, भ्रम द्वैत कर खातमा।
ब्रह्म निष्ठा संत लखावे, तू सतसंग में जाना दो घड़ी ॥ ४ ॥

(६९)

राग पूर्व पदानुसार

इस तन मन्दिर माई नित ही, हो रहा सोऽहम् जाप रे।
सतगुरु से पहिचानो, मन का मेल होय सब साफ रे ॥ टेर ॥
हिलता नहीं है होठ, दाँत वो जीभ भी नहीं हालती।
बिन हाथ माला फिरत है, इकसार निशि दिन चालती।
संसारी नर समझत नाही, मिटे नहीं संताप रे ॥ १ ॥
एकान्त आसन दृढ जमा कर, तन को सीधा कर जरा।

मन इन्द्रि स्थिर करके, बहिरंग वृति अंतर कर जरा।
उठत बैठत श्वास परखले, कटे जनम के पाप रे ॥ २ ॥
जब नाभी से श्वासा उठे, हं शब्द बाहिर आवता।
पुनि बैठ श्वासा नाभी में, सो शब्द अन्दर जावता।
हंसो सोहं उलट पलट कर होवत सोऽहम् जाप रे ॥ ३ ॥
जिमि लट भ्रंग का ध्यान करते, भ्रंग ही हो जाय रे।
यूं ध्यान सोऽहम् करत नित नर, ब्रह्म माय समाय रे।
नित्यानन्द कटे भव बन्धन, मिट जावे त्रय ताप रे ॥ ४ ॥

(७०)

राग रामकली अथवा सोहीनी

रणुकार धुन लाई, ऐसे रणुकार धुन लाई रे ॥ टेर ॥
बैठ एकान्त गुफा के माई, आसन सिद्ध जमाई रे।
सरल शरीर दृढ़ इन्द्रियाँ करके, नाशा दृष्टि जमाई रे ॥ १ ॥
रणुकार की धुनि लगाई, मन को तहाँ लगाई रे।
शने शने अभ्यास बढ़ा कर, मन गलतान कराई रे ॥ २ ॥
फिरता को थिरता कर दीना, गरक ध्यान के माई रे।
आनंद उमंग उठत उर अन्दर, तन की शुद्धि विसराई रे ॥ ३ ॥
बचनराम गुरु दया दृष्टि कर, साची सेन लखाई रे।
नित्यानन्द भया मस्ताना, फेर जन्म नहीं पाई रे ॥ ४ ॥

(७१)

राग धुन ताल केहरवा अथवा देश

सतगुरु ने मुझको साधन सरल बताया ॥ टेर ॥
पास बैठा कर युक्ति लखाई, भिन्न भिन्न कर समझाया।
गुरु आज्ञा से इहि विधि हमने, साधन में चित लाया ॥ १ ॥

बैठ एकान्त गुफा में दृढ़ होय, आसन सिद्ध जमाया ।
तन मन इन्द्रिया बस में करके, अन्तर ध्यान लगाया ॥ २ ॥
भूख प्यास मिटी अन्न जल तज कर दूध पाव नित पाया ।
रणुकार की धुन्न लगाई, तामें मन ठहराया ॥ ३ ॥
अजप्पा जाप जपा घट अन्दर, सोहं परिचय थाया ।
जीव ईश भ्रम भेद विलाई, जल में तरंग समाया ॥ ४ ॥
कल्पा माना भूल भरमना, दुतीया भाव मिटाया ।
निर्विकल्प नित्यानन्द निर्मल, अपना आप रहाया ॥ ५ ॥

(७२)

तर्ज प्राणी राम सुमिर ले रे

मनवा तू दुःख पासी रे । मानव जन्म अमोलक हीरो,
वृथा गमासी रे ॥ टेर ॥
ओ संसार ओस को पानी निश्चय नासी रे ।
हाथी घोड़ा महल खजाना, थारे काम न आसी रे ॥ १ ॥
सुत नारी के मोह बस होय, गल डारी फाँसी रे ।
अन्त समय में कोई नहीं तेरो, सब छिटकासी रे ॥ २ ॥
काम क्रोध मोह लोभ बसी होय, नरके जासी रे ।
क्षमाशील संतोष दया धर, आनन्द पासी रे ॥ ३ ॥
होय निस्काम हरि भज निशि दिन, मिटे चौरासी रे ।
नित्यानन्द गुरु शरण जाय, वे ज्ञान बतासी रे ॥ ४ ॥

(७३)

राग पूर्व पदानुसार

मनवा मत हो उदासी रे । सतगुरु चरणो धार ।
पार भव से होय जासी रे ॥ टेर ॥

मल विक्षेप हटा निस्काम कर, कर्म उपासी रे ।
साधन सम्पन्न होय, विधिवत, गुरु शरणे आसी रे ॥ १ ॥
गुरु ईश्वर सम जान, चरण सेवा चित लासी रे ।
होय प्रसन्न सतगुरु, जब तोय महावाक्य सुनासी रे ॥ २ ॥
बैठ एकान्त मनन कर बगुरे, गौ तृण खासी रे ।
युक्ति प्रमाण दृष्टांत लेय, संषय मिट जासी रे ॥ ३ ॥
तृप्ति गौ ज्यों निश्चय होय, जब कर निधिध्यासी रे ।
तत्त्वं दोऊ सोध, असी पद में थिरथासी रे ॥ ४ ॥
नभ जिमि व्यापक लख निज चेतन अज अविनाशी रे ।
नित्यानन्द शिवोऽहम् साक्षी, स्वयं प्रकाशी रे ॥ ५ ॥

(७४)

तर्ज इण काया मन्दिर माई जी
म्हानें राम से मिलावो ला कांई सा

इण काया मन्दिर माई जी, सतगुरु हरि दरश कराया ॥ टेर ॥
बनीयों पाँच पचीस सतरन को, त्रय मंजिल मन्दिर टणको ।
ज्यारे खम्बो बीच पवन को जी, नव द्वार खुला रखवाया ॥ १ ॥
मन्दिर में पाँच कोटड़ियो, चढ़ने री च्यार पेड़ीयो ।
सब जन त्रय उत्तरे चढ़ीया जी, चोथी गुरु गम चढ़ पाया ॥ २ ॥
मन्दिर में आतम देवा ज्यारी चौदह पुजारी करे सेवा ।
बिन दिया घृत जोत जगेवा जी, जहाँ अखंड उजाला छाया ॥ ३ ॥
मन्दिर में नाचे परीया, अनहद बाजे बांसरीया ।
फल फूल बाग रहे हरिया जी, जहाँ अमृत जल बरसाया ॥ ४ ॥
गुरु बचनराम जी आया, जिन भिन्न भिन्न कर समझाया ।
नित्यानन्द सब भरम मिटाया जी, मन्दिर का दरशन पाया ॥ ५ ॥

(७५)

पद राग कालिंगड़ा

चालना चालना चालना रे, कोई सतसंग में चालना रे ॥ टेर ॥
संत सरवर निर्मल जल भरीया, तामें डूबकी लगावना रे ॥ १ ॥
ज्ञान धार महावाक्य तरंगा, श्रद्धा से स्पर्स करावना रे ॥ २ ॥
भरम करम संषय सब नाशे, चंचल मन थिर थावना रे ॥ ३ ॥
कोशातीत देह त्रय दृष्टा, लख नित्यानन्द छावना रे ॥ ४ ॥

(७६)

हम स्वयं सच्चिदानन्द, आत्मा अविनाशी ॥ टेर ॥
नहीं हम देह सूक्ष्म स्थूला, नहीं कारण अज्ञान मूला ।
नहीं माया का फन्द ॥ १ ॥
तीन अवस्था से हम न्यारा, कोशातीत स्वरूप हमारा ।
साक्षी परमानन्द ॥ २ ॥
मुझमें मिथ्या सकल पसारा, जैसे जल में तरंग विकारा ।
निर्विकार निर्द्वन्द ॥ ३ ॥
मन वाणी की गम नहीं मो मैं, अगम अगोचर अक्षय सो मैं ।
सो हम नित्यानन्द ॥ ४ ॥

(७७)

राग हेली बाहिर भटके काई

मारा सतगुरु दीन दयाला । माने पाया ज्ञान का प्याला ॥ टेर ॥
मैं मोह निन्द्रा में सोया । नर जन्म अमोलक खोया ।
गुरु झटके आय जगाया । मेरा संषय भरम मिटाया ॥ १ ॥
महावाक्य श्रवण कराया । कर मनन एकान्त दृढ़ाया ।
जीव ईश भेद भ्रम भागा । परिपूर्ण एक अथागा ॥ २ ॥

सोई नाम रूप से न्यारा । मैं निश्चय किया दिदारा ।
जिस कर जड़ सत होय भाषे । वो अपना आप प्रकाशे ॥ ३ ॥
वो नहीं बंध मुक्ता । वों नहीं प्रगट नहीं गुप्ता ।
सोई अजर अमर निर्द्वन्दा । सत चेतन नित्यानन्दा ॥ ४ ॥

(७८)

राग श्याम कल्याण ताल 'अथवा परज ताल' ३

विचार देख बदल रहा संसार ॥ टेर ॥

पल घड़ी पहर रात दिन बदले, बदलत सातों ही वार ॥ १ ॥
पक्ष मास ऋतु अयन भी बदले, बदलत वर्ष युग च्यार ॥ २ ॥
त्रय तन तीन अवस्था बदले, बदलत है गुण च्यार ॥ ३ ॥
रवि शशि तारे नक्षत्र सब बदले, बदलत सब साकार ॥ ४ ॥
विधि हरि हर इन्द्रादिक बदले, बदलत सब अवतार ॥ ५ ॥
पंच भूत पिण्ड ब्रह्मण्ड भी बदले, बदलत माया का विकार ॥ ६ ॥
हम नित्यानन्द कबहु नहीं बदलत, निर्विकल्प निर्विकार ॥ ७ ॥

(७९)

राम सोरठ

फकिरी में बिरला उतरे पार ।

ढाल वैराग त्याग रो खाण्डो, श्रद्धा कर में संभार ॥ टेर ॥
सुत नारी ग्रह बंधन त्यागे, मात पिता परिवार ।
स्वप्ना सम जाने संसारा, विष सम विषय निवार ॥ १ ॥
वर्णाश्रम देह का अभिमाना, लेश मात्र नहीं धार ।
शीत उष्ण भूख प्यास करे बस, सुख दुःख एकणसार ॥ २ ॥
दृढ़ आसन कर इन्द्रियाँ जीते, तन मन तजत विकार ।
काम न क्रोध मित्र नहीं द्रोही, राग न द्वैष लिगार ॥ ३ ॥

समदृष्टि सब ही में देखे, निशि दिन ब्रह्म विचार ।
द्वैत भरम की धूड़ उड़ावे, लख निज आतम सार ॥ ४ ॥
गुरु बचनराम मिले मोय पूरा मेटा भेद विकार ।
नित्यानन्द भया अब निर्भय, फेर जनम नहीं धार ॥ ५ ॥

(८०)

हरि गीत छन्द

मद्य मांस खा हिंसा करे, धन चोर कर घर लावता ।
गांजा तम्बाकू, भांग पी नित, पान मुख में चाबता ॥
नाटक सिनेमा देखता, वैश्या के घर नित जावता ।
धन खरच इज्जत खोय, गारी गीत में मन राचता ॥ १ ॥
जाले कलेजा चाय पीकर, रोग देह बढ़वता ।
निन्द्रा क्षुधा की होय कमी, निज श्रेय से गिर जावता ॥
शुभ कर्म तो कीना नहीं, कुसंग में चित्त लावता ।
खोकर के नित्यानन्द नर तन, यमपुरी को जावता ॥ २ ॥

(८१)

आज दिन आनन्द आय, दीपावली त्यौहार ॥ टेर ॥
देह भवन की करो सफाई, सप्त व्यसन दस दोष नसाई ।
छल कपट प्रमाद मिटाय, तजो त्रय नर्क के द्वार ॥ १ ॥
इन्द्रिय झरोंका शुद्ध कराई, कर्म उपासन रंग पोताई ।
मल विक्षेप दूर हटाय, धार उर साधन चार ॥ २ ॥
हृदय दीप मन बाती बनालो, गुरु गम तेल ब्रह्म ज्योति जगालो ।
अज्ञान अन्धेरा भगाय, स्वयं प्रकाश अपार ॥ ३ ॥
द्वैत फटाका छोडो भाई, लक्ष्मी पूज ब्रह्म विद्या सदाई ।
जीवन मुक्ति धन पाय, दरिद्र नहीं रहे लिगार ॥ ४ ॥

७-घम

स्वरूप स्थिति खाय मिठाई, तृप्ति शिवोऽहम् डकार आई।
अब अपना आप रहाय, अचल अज निर्विकार ॥ ५ ॥
जनम मरण का मिट गया फेरा, विधि निषेध का उठ गया डेरा।
अब नित्यानन्द छाय कल्पना सब ही निवार ॥ ६ ॥

(८२)

मेरे सतगुरु दीन दयाल, कर दिया मालोमाल ॥ टेर ॥
स्वयं सच्चिदानन्द भूल कर जीव बना कंगाल ।
आत्म ज्ञान धन दे सतगुरु ने, पल में किया निहाल ॥ १ ॥
ज्ञान अग्नि उर प्रगट भई जद, कर्म काष्ट दिया जाल ।
पाप पून्य भ्रम लेखा फाटा, अब क्या करसी मेरो काल ॥ २ ॥
अस्थि भाती प्रिय स्वरूप हमारा, नाम रूप जंजाल ।
मुझमें मिथ्या सकल पसारा, ज्यूं नीर बुदबुदा झाल ॥ ३ ॥
मैं हूँ अजर अमर अविनाशी, अचल अद्वैत विशाल ।
निर्विकल्प नित्यानंद निर्मल, लखे गुरु का बाल ॥ ४ ॥

(८३)

राग धमाल

ब्रह्म ज्ञानियों रो आयो रे धडिन्दो

भेदवादियों री छाती धड़के डरपो मती रे
डरपो मती परम धाम पहुँचावा झटके डरपो मती रे
डरपो मती अमरलोक ले जांवा झटके डरपो मती रे
डरपो मती जीवन मुक्त करावां झटके डरपो मती रे ॥ टेर ॥
व्यापक ब्रह्म एक दरशाकर, द्वैत मतों को दूर हटाकर
संषय सकल मिटावां सटके । डरपो मती रे ॥ १ ॥
शोक, मोह, भ्रान्ति, अध्यास मिटाकर ।

जीव ईश दोऊँ एक लखाकार।
तत्वमसि लख सोऽहं बोल अडके । डरपो मती ॥ २ ॥
ज्ञान अग्नि कर्म काष्ट जलाकर। पाप पुन्य यम लेखा फंटाकर।
काल किया टाल हुआ बेधड़के । डरपो मती ॥ ३ ॥
कल्पित नाम रूप आधारा। अस्ति भाति प्रिय स्वरूप हमारा
अब छाया नित्यानंद मिटे सब खटके । डरपो मती ॥ ४ ॥

दिया

(८४)

॥ पद ॥

नमो नमो श्री सतगुरु स्वामी। बचनराम जी अन्तरयामी ॥ टेर ॥
बुद्धि ज्ञान करो प्रकाशा। पल पल हृदय करो निवासा ॥ १ ॥
जन्म पाय मैं बहु दुःख पाया। सब तज शरण आपकी आया ॥ २ ॥
ऐसी कृपा कर दो दाता। जन्म मरण में फिर नहीं आता ॥ ३ ॥
नित्यानन्द चरण का चेरा। लख चौरासी मेटो फेरा ॥ ४ ॥

(८५)

तर्ज चौपाई

जै जै बचनरामजी स्वामी, घट घट व्यापक अंतरयामी ॥ टेर ॥
बब्बा सबमें बोलन हारा, चच्चा चेतन घट घट सारा ॥ १ ॥
न ना निराकार नहीं नासा, र रा रुम रुम परकाशा ॥ २ ॥
म मा मेहरम सबकी जाने, पिन्ड ब्रह्मण्ड सकल पहिचाने ॥ ३ ॥
इस विध गुरु व्यापक सब माई, नित्यानन्द यू सकल समझाई ॥ ४ ॥

(८६)

॥ तर्ज (लावणी-कव्वाली) ॥

धन धन बचनराम महाराज जी, जीवाँ ने तारने वाले ॥ टेर ॥
निरगुण से सगुण घर काया, जगत उद्धारण आया।

मींढा में जनम धराया जी, अधर्मों को उद्धारण वाले ॥ १ ॥
बन गये सन्त अलमस्ता, मोह माया में नहीं फँसता ।
नित ध्यान हरि का धरता जी, जग झुट जानने वाले ॥ २ ॥
सिद्ध आसन खूब दबाया, मन पवन एक घर लाया ।
गुरु ऐसा योग कमाया जी, देही की सुद्ध पाने वाले ॥ ३ ॥
सत संगत हर दम करते, नित अनुभव ज्ञान सुनाते ।
आत्मा का निश्चय कराते जी, सब भ्रम मिटाने वाले ॥ ४ ॥
जो शरण आप की आवे, बाँरा जनम मरण मिट जावे ।
यूँ नित्यानन्द गुण गावे जी, यम फंद छुड़ाने वाले ॥ ५ ॥

(८७)

॥ तर्ज हरी कीर्तन हरी ॐ ॥

धन धन बचनराम महाराज तुमको लाखों प्रणाम,
तुमको लाखो प्रणाम ॥ टेर ॥
निरगुण से सरगुण घर काया, जगत उधारण जग में आया,
सन्त का रूप धारने वाले, तुमको लाखों प्रणाम ॥ १ ॥
मींढा गाँव मरुधर के भाई, जहाँ पर प्रगट भये तुम आई,
क्षत्रिय कुल उजियारन वाले, तुमको लाखों प्रणाम ॥ २ ॥
छः महिना का साधन करिया, बैठ एकान्त गुफा में रहिया ।
अन्न जल त्यागने वाले, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ३ ॥
आठों अंग योग कर लीना, षट् चक्र को छेदन कीना ।
पाँचु मुद्रा साधने वाले, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ४ ॥
अनुभव ज्ञान हुआ घट माई, जब हीं आतम की शुद्धि पाई ।
सब भरम मिटाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ५ ॥
बने सन्त अलमस्त फकीरा, दे उपदेश बंधावो धीरा ।

तन की तपत बुझाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ ६ ॥
महिमा तुमरी किस विध गावूं, अगम अपार पार नहीं पावूं ।
त्रिगुण ताप मिटाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ ७ ॥
जो प्रभू तुम मिलता नहीं आई, लख चौरासी में गोता खाई ।
यम फन्द छुड़ाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ८ ॥
भाग पुखला उदय हुआ है, नित्यानन्द को शरण लिया है ।
ब्रह्मज्ञान सुनाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ९ ॥

(८८)

॥ राग बिहार ताल ॥

श्री बचनराम महाराज शरण मैं तोरी
ये बिनती सुनना दास जान कर मोरी ॥ टेर ॥
मैं डूब रहा इस भव सागर के माही
कर दया उबारो जल्द पकड़ कर बाँहीं ॥ १ ॥
मैं जनम जनम का भूंला बाहिर भटकूँ
अब राह बताओ दुखी जानकर हमकूँ ॥ २ ॥
मोय काम क्रोध मद लोभ मोह ने घेरा
हरदम विषयों में मन ललचावत मेरा ॥ ३ ॥
घट अन्दर बुद्धि ज्ञान करो प्रकाशा
सब भ्रम मेट अज्ञान द्वैत करो नाशा ॥ ४ ॥
ये लख चौरासी जनम मरण का फेरा
यम फन्द छुड़ावो दीन जानकर मेरा ॥ ५ ॥
ये बिनती नित्यानन्द की सुनना स्वामी
मेरा माफ करो सब अवगुण अंतरयामी ॥ ६ ॥

(८९)

॥ पद राग कवाली काफी रेखता ॥

सदा गुरु बचनराम महिमा मुबारिक हो, मुबारिक हो ॥ टेर ॥
परमार्थ कारणे आया, निर्गुण से सगुण घर काया
वंश निर्वाण मींढा में मुबारिक हो मुबारिक हो .... ॥ १ ॥
प्रगटीया गंगासिंह जी घर, सबी नर नार जै-जै कर,
लगाया ब्रह्मज्ञान डंका, मुबारिक हो मुबारिक हो .... ॥ २ ॥
बोलाया राम नाम आकर मीढ़ा नगरी में घर घर पर
सबी नर नार बालक को, मुबारिक हो मुबारिक हो ... ॥ ३ ॥
बताया चर अचर सबमें, व्यापक नभ ज्यू ब्रह्म सबमें
कराया निश्चय यूँ सबको, मुबारिक हो मुबारिक हो .... ॥ ४ ॥
खुलाया मोक्ष का द्वारा बन्द कर नरक का द्वारा
देख यमराज घबराया, मुबारिक हो मुबारिक हो .... ॥ ५ ॥
प्रथम था काग कर हंसा, नित्यानन्द मीटा सब संषा
पड़ा रहूँ रात दिन चरणे, मुबारिक हो मुबारिक हो .... ॥ ६ ॥

(९०)

॥ पद राग कवाली काफी रेखता ॥

अमर हो राम रटने से, रटे कोई जिसका जी चाहे ॥ टेर ॥
कुटुम्ब परिवार सुत नारी, सभी स्वार्थ के हैं यारी,
छिपाते दुख में मुँह सारे, जान ले जिसका जी चाहे ॥ १ ॥
सबी धनमाल घर बारा, धरा रह जायगा सारा
अन्त में काम नहीं आवे, मान ले जिसका जी चाहे ॥ २ ॥
कंवल क्या गर्भ में किना, करूँगा भजन रात दिना

लेयगा धर्म राज लेखा, पड़े नर्क जिसका जी चाहे ॥ ३
रुके जब कंठ लग ग्यारी, देवाँरी लगे नहीं कारी
चले संग पाप पुन करणीं, करे कोई जिसका जी चाहे ॥ ४ ।
करो सतसंग चित्त ला के, सदा संतों के ढिग जाके
नित्यानन्द चौरासी फेरा छुड़ाले जिसका जी चाहे ॥ ५ ॥

(९१)

॥ आरती ॥

ॐ जै जै गुरुदेवा, स्वामी जै जै गुरुदेवा ।
बचनरामजी स्वामी, करूँ नित उठ सेवा ॥ टेर ॥
मींढ़ा गाँव में प्रगट हुये हो क्षत्री कुल माई ।
घर के रूप संतन का, परमार्थ ताईं ॥ १ ॥
छः महिना का साधन करिया, बैठ गुफा मांई ।
योग नीति को साधा सुद्ध बुद्ध सब पाई ॥ २ ॥
तुम हो स्वामी अंतरयामी, मात पिता मोरे ।
पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शरण पड़ा तोरे ॥ ३ ॥
हम बालक शरण तुम्हारे, मस्तक दो हाता ।
बुद्धि विवेक बढ़ावो, उर मे सुख पाता ॥ ४ ॥
धूप दिप कपूर से आरती हम करते ।
घंटा शंख बजाते, नित मंगल गाते ॥ ५ ॥
श्री सतगुरु स्वामी री आरती जो कोई नर गावे,
ज्यांरा पाप परा जावे, ज्यांरा दुख दारिद्र जावे ।
ज्यारे सुख सम्पति आवे, नित्यानन्द नित गावे,
वो मोक्ष पद पावे ॐ जै जै गुरुदेवा ॥ ६ ॥

॥ विश्व कल्याण की भावना ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भाग्भवेत ॥

॥ दोहा ॥

सभी सुखी होवे सदा, होवे सभी निरोग ।
सबका ही कल्याण हो, किसी को नहीं दुख भोग ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

॥ ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः ॥